Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Master
Note Book

FILE

M.B.D. Varanasi

CC-0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कक्षा–समय–विभाग–चक्र

दिन	पहला घन्टा	दूसरा घन्टा	तीसरा घन्टा	चौथा घन्टा	पाँचवां घन्टा	छठा घन्टा	सातवां घन्टा	आठवां घन्टा
सोम								
मंगल								
बुध								
बृहस्पति								
शुक्र								
शनि								

—मास्टर बुक बाइंडिंग वर्क्स—
—आप के लिए—
अत्यन्त सुन्दर सस्ता तथा टिकाऊ सामान निर्माण करता है। आप अपने यहाँ के स्थानीय विक्रेता से मांग करें। प्रत्येक प्रकार की कापियाँ, रजिस्टर, फाइलें, बाउन्ड बुक, नोटबुक, पंचपेपर, डे बुक, लेजर बुक, जनरल बुक, गार्ड फाइल, फोरफलैट फाइल-एलबम, लेबरेटरी नोटबुक, प्रैक्टिकल नोटबुक, फिजिक्स, केमिस्ट्री बुक, बाइलाजी बुक तथा अन्य शिक्षा सम्बन्धी आवश्यक सामान।।
अच्छे कागज तथा अच्छे सामानों द्वारा एक मात्र निर्माता—
मास्टर बुकबाइण्डिंग वर्क्स
कर्णघन्टा-वाराणसी।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कणाद (वैशेषिक)

को प्रामाणिक मान कर उद्धृत करता है (पृ. ६४)। नागार्जुन, देव और हरिवर्मा के ग्रन्थों में वैशेषिक सूत्र का ज्ञान प्रकट है। इसलिए इनसे पूर्ववर्तियों के पहले इसका स्थिति काल मानना चाहिये। इससे इस सिद्धान्त पर पहुंचा जाता है कि हरिवर्मा के पहले अवश्य ही वैशेषिक सूत्र बन चुके थे। जैकोबी ने वैशेषिक सूत्रों का स्थिति 200-400 ई. माना है। कीथ ने स्थिति 250-300 ई. इसकी ही न्यायसूत्र से वैशेषिक सूत्र उद्धृत है और इसप्रकार के उद्धरण नागार्जुन के ग्रन्थों में मिलते। इस लिये वैशेषिक सूत्र इससे प्राचीन अवश्य है, किन्तु इसकी पूर्व सीमा बुद्ध और महावीर के समकालीन नहीं है अतः अधिकतर विद्वान वैशेषिकसूत्रों का समय 50-150 ई. में रखें।

सांख्य फिलासफी by प्रो. गर्बे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राचीन दार्शनिक

प्राचीन बौद्ध साहित्य में छः तीर्थंकरों का वर्णन मिलता है। वे हैं — १. पूरण कस्सप, २. मक्खलि गोसाल, ३. अजित केसकम्बली, ४. पकुध कच्चायन, ५. निगण्ठ नातपुत्त, और ६. संजय बेलट्ठिपुत्त। जैन साहित्य में वे तीर्थंकर चार विभागों में बांटे गये हैं — १. क्रियावादी, २. अक्रियावादी, ३. अज्ञानवादी और ४. वैनयिकवादी। (दीघनिकाय का सामञ्ञफलसुत्त और ब्रह्मजालसुत्त द्रष्टव्य)।

अजितकेसकम्बली के मत से मनुष्य शरीर चार भूतों से बना है (चातुर्महाभूतिक)। अतः सब इन्द्रियां आकाश में विलीन हो जाती हैं। (तुलनीय बार्हस्पत्य सूत्र, चार्वाक दर्शन)। इसके मत में आत्मा की सत्ता नहीं है। इसका मत चार्वाक मत से मिलता है।

पकुध कच्चायन के मत में चार भूत, सुख दुःख और जीव ये सात पदार्थ शाश्वत हैं। इनको अकृत कहा गया है। अजित के मत में सुख-दुःख आदि का कोई कारण नहीं है, किन्तु पकुध इनका [illegible] कारण है और पारस्परिक संयोग-वियोग को भी मानता है। पकुध के विचार अजित की अपेक्षा वैशेषिक से अधिक मिलते हैं।

मक्खलि गोसाल आजीविकों का प्रमुख आचार्य था, कर्मवाद का [illegible] था। वैशेषिक में यह अदृष्ट वाद से सम्बन्धित है। मक्खलि के विचार संजय बेलट्ठिपुत्त से मिलते हैं। संजय के मत में स्याद्वाद के बीज निहित हैं और बौद्धों के कुछ अव्याकृत प्रश्न भी इनमें मिलते हैं। [illegible] उपनिषद में भी कुछ अंश में ये विचार मिलते हैं। अस्ति, नास्ति, अस्ति च नास्ति च, नैवास्ति न नास्ति संजय के चार वाक्य स्याद्वाद में और माध्यमिकों की चतुष्कोटिविनिर्मुक्त [illegible] निरूपण में द्रष्टव्य हैं।

[illegible] जैनों के विचार में पकुध कच्चायन के मत

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

[illegible] पड़ता है। [illegible] में [illegible]
[illegible] है, [illegible]।
[illegible] में [illegible]
[illegible] में [illegible] (229-205 B.C.) के [illegible]
[illegible]

— [illegible], पृ. १७-२५

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गौतम (नैयायिक)

कौटिल्य (300 ई. पू.) को न्याय दर्शन का परिचय नहीं था। हरिवर्मा (250 ई.) और दल के समय में इस दर्शन का प्रसार शुरू होता है। अक्षपाद का प्रत्यक्ष सिद्धान्त का उल्लेख करता है। सूत्रकार ने स्पष्ट कहा है कि सांख्य दर्शन में प्रकृति, हेतु, उदाहरण (दृष्टान्त), उपनय और निगमन का वर्णन है। किन्तु सांख्य दर्शन में यह उपलब्ध न होकर न्याय दर्शन में मिलता है।

"सांख्यं योगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षिकी" कौटिल्य के इस वाक्य की व्याख्या में कौशाम्बी कहते हैं कि ई. पू. 300 में भी सांख्य आन्वीक्षिकी कहलाता था। इसलिये अक्षपाद के प्रमाण विचार सांख्य में पाकर उसके बाद इनमें परिवर्तन होकर रहे हैं। न्याय (आन्वीक्षिकी) की प्रथा बुद्ध और महावीर के समय में भी प्रसिद्ध होता है। हेतु आदि पारिभाषिक शब्द साहित्य में मिलते हैं। अवदानशतक में तार्किकों और नैयायिकों को उल्लेख किया गया और कथावत्थु में वादविवाद का उल्लेख किया था। यह पद न्यायपूर्व भी है। संयुक्त निकाय, मज्झिम और बुद्ध के वचनों में हेत्वाभास का उत्तर देने का विशेष प्रकार का उल्लेख करते हैं। और धार्मिक प्रकरण (250 ई. पू.) के प्रकरण में प्रमाण वाक्य का उल्लेख किया है। न्यायसूत्र में भी (1.1.32) इस प्रकार का प्रयोग ही न्यायसूत्र में निर्दिष्ट आदि और निगमन का उपनयपूर्वक प्रयोग पाया और उसके बाद में भी उल्लेख है। सिद्धान्त के देशविचार न्यायदर्शन में भी है।

याकोबी ने न्यायसूत्र का समय 200-400 ई. के बीच में इसका समय और इस सिद्धि को 300-350 के बीच में मानते हैं। इसका कारण यह है कि न्यायसूत्र शून्यवाद पर जो आक्षेप करता है, किन्तु विज्ञानवाद पर नहीं। नागार्जुन ने विग्रहव्यावर्तनी में प्रमाण और प्रमेय का खण्डन किया है। न्यायसूत्रों में (2.1.8-20) इसका उत्तर दिया गया है। इस-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

प्रकार न्यायदर्शन में [illegible] का भी उल्लेख किया गया है। इससे
यदि इस पर [illegible] की न्यायसूत्र [illegible]
[illegible] और देव ने अपने ग्रन्थ लिखे, जो न्यायसूत्र का
प्रायः १५०-२५० ई. के मध्य [illegible] है।

न्यायसूत्र पर परिष्कार के पश्चात् भी [illegible]
था। [illegible] में [illegible] ने [illegible] किया
है। [illegible]

— [illegible], पृ. ८०-८६ (हिन्दी)

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

प्रभाकर (मीमांसक)

साम्प्रदायिक प्रभाकर को कुमारिल के शिष्य और प्रतिद्वन्द्वी मानते हैं। कुप्पुस्वामी शास्त्री ने इसका खण्डन किया है और कहा है कि कुमारिल के समकालीन तथा [illegible] थे। "अत्रापि नोक्तम्, तत्रापि नोक्तम् इति अत्र पुनरुक्तम्" इस पंक्ति के साथ कुमारिल और प्रभाकर का शिष्यत्व जुड़ा है। गुरुपद की उपाधि इसी प्रकार मिली कहते हैं।

लघ्वी = विवरण, बृहती = निबन्धन।

इस विषय में ये [illegible] थी। उनका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होता है।

प्रभाकर और कुमारिल के उपलब्ध ग्रन्थ सिद्धान्तों में अन्तर का दिग्दर्शन ([illegible], पृ. ३२-४०)।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवस्वामी (मीमांसक)

प्रपञ्चहृदय के अनुसार देवस्वामी बोधायन जैमिनि मीमांसा के व्याख्याता हैं। संकर्षकाण्ड में इन्होंने १४.२.१ में भवदास के भाष्य को उद्धृत किया है। इनका शाबरभाष्य का भाष्य अब तक उपलब्ध नहीं हुआ है। इनके संकर्षकाण्ड के भाष्य से जो कि मद्रास गवर्नमेण्ट तथा अड्यार पुस्तकालय में उपलब्ध है, संकर्षकाण्ड के प्राचीन सूत्रों का परिज्ञान होता है। कल्पसूत्रों के इतिहास में आपस्तम्ब बौधायन और श्रौतसूत्रों के भाष्यकार देवस्वामी का उल्लेख मिलता है। देवस्वामी ने किसी धर्मसूत्र के निबन्ध ग्रन्थ की भी रचना की थी, प्रतीत होता है। स्मृतिचन्द्रिका आदि के उद्धरणों से पता चलता है कि इस ग्रन्थ में धर्म, आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त, और श्राद्धादि आदि विषयों पर विचार किया गया था। म.म. पी.वी. काणे का कथन है कि ये देवस्वामी एक ही थे पर इसके लिये निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। धर्मशास्त्र मीमांसा का ही परिशिष्ट भाग है। इससे अनुमान होता है कि मीमांसक देवस्वामी ने भी धर्मशास्त्र के निबन्ध का भी प्रणयन की हो और यही मीमांसा शास्त्र का व्याख्याकार भी हो। प्रपञ्च हृदय (१०४० ई.) में ये उद्धृत हैं, इसलिये इनको इससे पूर्ववर्ती स्वीकार करना चाहिये।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

पार्थसारथि मिश्र (मीमांसक)

पार्थसारथि मिश्र के पिता का नाम यज्ञात्मा था। वे इनके गुरु भी थे। न्यायरत्नाकर और शास्त्रदीपिका ग्रन्थ में पार्थसारथि ने इनके उद्धरण दिये थे। ... के न्यायरत्नमाला में भी ये उद्धृत हैं। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी। श्लोकवार्तिक पर न्यायरत्नाकर नामक टीका और तन्त्रवार्तिक पर तन्त्ररत्न नाम की व्याख्या इनकी उपलब्ध है। इनकी शास्त्रदीपिका मीमांसासूत्रों पर स्वतन्त्र ग्रन्थ है। अपने न्यायरत्नमाला में इन्होंने मीमांसा सिद्धान्तों का विवेचन किया है। ये स्वतःप्रामाण्य के क्षेत्र में व्याख्याकार और उपयोग के ... स्थान रखते हैं। शास्त्रदीपिका में तन्त्ररत्न और न्यायरत्नमाला उद्धृत हैं। इसी प्रकार न्यायरत्नाकर में (श्लो.वा. ८५२, ८७१) (पृ. ८७२) न्यायरत्नमाला और शास्त्रदीपिका उद्धृत हैं। न्यायरत्नमाला के ... ... शास्त्रदीपिका की प्रथम पंक्तियों की ... ... में उपलब्ध ... हैं इनके कुमारिल भट्ट ... ... उत्तर दिया गया है इनकी ... ... न्यायरत्नाकर में, ... इनका अनेक ग्रन्थ ... ..., ..., ..., ..., ... उद्धृत हैं जिनके कि ... कुमारिल ने ... किया था

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

श्रीकर (मीमांसक)

मल्लनाथ भट्ट के नयविवेक में यह उद्धृत है। ये प्रभाकर के अनुयायी थे। मल्लनाथ ने इनकी आलोचना की है। धर्मशास्त्र के इतिहास में एक श्रीकर प्रसिद्ध हैं। स्मृतिचन्द्रिकाकार देवण्णभट्ट और मिताक्षराकार विज्ञानेश्वर के समय में इनकी प्रसिद्धि थी। म.म. पी.वी. काणे ने (इतिहास, पृ. २६६-६८) इनका समय ८००-१०५० के बीच में रखा है। स्मृतिकार और मीमांसक श्रीकर एक ही व्यक्ति नहीं, लेकिन यह भी निश्चित प्रमाण के द्वारा उद्धृत होने से इनका समय ११०० ई० के बाद नहीं होगा।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाश (मीमांसक)

नयविवेककार भवनाथ [illegible] ने अपने [illegible] ग्रन्थों को इसमें उद्धृत किया है। ये भी प्रभाकर के अनुयायी थे, किन्तु भवनाथ ने इनके मत का [illegible] किया है, नयविवेक के टीकाकार वरदराज के अनुसार ये कुछ काल पहले हुए। इनका समय 1000-1100 ई. के बीच में होना चाहिए। पी.वी. काणे ने [illegible] में [illegible] (द्र. ~~[illegible]~~ 304 [illegible]) [illegible] के [illegible] किया है। [illegible] इनका [illegible] है। यह [illegible] मीमांसक प्रकाश [illegible] [illegible] प्रकाश है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भवदेवभट्ट (मीमांसक)

११००-११५० ई. के बीच में कुमारिल के तन्त्रवार्तिक के टीकाकार/व्याख्याकार हुए — १. भवदेवभट्ट, २. पार्थसारथि मिश्र, और ३. भट्ट सोमेश्वर। इनमें भवदेवभट्ट बंग के प्राचीन थे। म.म. पी.वी. काणे ने इनका समय ११०० ई. स्वीकार किया है। इनके ग्रन्थ का नाम तौतातितमततिलक है। ग्रन्थ का मुख्य भाग में इनके नाम बालवलभीभुजङ्ग। कहा गया है म.म. पी.वी. काणे ने प्रायश्चित्त प्रकरण का उल्लेख किया है। चौखम्बा की ग्रन्थमाला के ग्रन्थ ... में उपलब्ध हैं। भुवनेश्वर के अनन्तवासुदेव मन्दिर के शिलालेख में भी भट्ट भवदेव की प्रशंसा की गई है बालवलभीभुजङ्ग। शिलालेख के अतिरिक्त भी भवदेव ... के कारण ये राढ़ देश के सिद्धल ग्राम के निवासी थे। इन्होंने बंगाल के राजा के मन्त्री का पद प्राप्त किया था। इनकी वंशपरम्परा इस प्रकार लिखा है — भवदेव (सावर्णगोत्र), रथाङ्ग, अत्यङ्ग, बुध (स्मृतिज्ञ), आदिदेव (वंगराज का मन्त्री और युद्ध का मन्त्री), गोवर्धन ... (बंगाल के राजा के मन्त्री), भवदेव (तौतातितमत विशेषज्ञ)। भवदेव राजा हरिवर्मदेव के मन्त्रिवर थे। इन्होंने ज्योतिष, स्मृति और मीमांसा पर ग्रन्थ लिखे। ये राढ़ देश के निवासी थे और इन्होंने नारायण, अनन्त और नृसिंह के मन्दिर बनवाये। इनकी बालवलभीभुजङ्ग उपाधि का अर्थ पी.वी. काणे ने यह किया है कि इन्होंने मन्दिर के बगल बालकों के शिक्षण की दिशा में कुछ विशेष कार्य किये थे। डा. ... ने इस शिलालेख का लिपि आधारों के अनुसार के पहले शताब्दी बताई है। पी.वी. काणे इनका समय ११०० ई. मानते हैं। शिलालेख के प्रमाण पर यह कहा जा सकता है कि प्रदीप भवदेव को उद्धृत करता है। प्रदीप का रचना काल ११५० ई. के पहले हो चुका था। इसलिए भवदेव को ११वीं शताब्दी का अन्तिम काल

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

[illegible] [illegible] ने [illegible] [illegible] इसके अतिरिक्त [illegible] ने
[illegible], [illegible], [illegible] और [illegible]-
[illegible] की रचना की थी।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पारितोषकीयम् (भौगोलिक)

पारितोषकीय संभवतः अंशमात्र है। इसमें शंकराचार्य पर आधारित ग्रन्थ का उल्लेख मिलता। इसकी प्रतिलिपि शारदा लिपि काश्मीर में है। न्यायसुधा से पर आचार्य शर्मा के आर्थिक-उद्धरण हैं, ग्रन्थ इसकी भाषा प्रांजल है। १२५ पृष्ठ का ग्रन्थ इसकी प्रति किसी का उल्लेख पढ़ने पर लोग के पुस्तकसंग्रह में मिलता है। विद्या का शास्त्रीय अन्तर्गत है। आधारित का / इसका नाम पारितोषिक स्वीकार है।

जीवेनि शाङ्करकृपापरिपालितपारितोषकार्यसारयशः।
उद्वेलविजय करोतो फल्गुनारायणतो जविजयतोद ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सोमेश्वर (मीमांसक)

भट्टसोमेश्वर न्यायसुधा या राणक के कर्ता हैं, जो कि एक भाष्य तन्त्रवार्तिक की उद्दिष्ट टीका है। चिदानन्द के नीति-तत्त्वाविर्भाव के व्याख्याता परमेश्वर [illegible] में इनका सर्वप्रथम उल्लेख किया है। सोमनाथ दीक्षित और खण्डदेव मिश्र भी इनके ग्रन्थ को उद्धृत करते हैं। ग्रन्थ की प्रसिद्धि से इनके टीका का नाम राणक प्रसिद्ध पड़ गया है. इसलिये कुछ लोगों का कहना है कि ये माधव-भट्ट के पुत्र थे। किन्तु [illegible] के प्रमाण से इनकी माधव-भट्ट से [illegible] होना है। अतः ये [illegible] रहते थे। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ-न्यायसुधा है। खण्डदेव मिश्र, सोमनाथ दीक्षित और रामकृष्ण ने इनके ग्रन्थ को उद्धृत किया है, क्यों [illegible] इनका खण्डन भी किया था। इनका दूसरा ग्रन्थ तन्त्रसार है। इस ग्रन्थ न्यायसुधा में [illegible] खण्डदेव और वाञ्छेश्वर दीक्षित ने भी इसको उद्धृत किया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

मुरारि मिश्र (मीमांसक)

"मुरारेस्तृतीयः पन्थाः" इस उक्ति के अनुसार ये मीमांसा के तृतीय प्रस्थान के प्रवर्तक थे। इनका समय १२वीं शताब्दी का अन्त तथा तेरहवीं शताब्दी के आरंभ में माना जाता है। इनका ग्रन्थ त्रिपादी नीतिनयन पुस्तक अंश में था है इसमें मीमांसा के प्रथम अध्याय के २-४ पाद अधिकरणों की संख्या: [illegible] हुई मीमांसासूत्रों पर व्याख्या लिखी थी। इनका ११.१.१ की व्याख्या का उल्लेख मिलता था (प्राच्य मंजरी, भा. १० (१९३०), पृ. २३८-४५) पर भी धारणा है कि इन्होंने कुछ और इस अधिकरणों की व्याख्या की थी, किन्तु कि वे अपने [illegible] में विवरण [illegible] नहीं है।

नीतिनयन और [illegible] के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मुरारि ने [illegible] का [illegible] अपने ग्रन्थ में था [illegible] भट्टनारायण और गंगेशोपाध्याय ने मुरारि का खंडन किया है, ऐसा उनके टीकाकारों का कहना है। नैयायिकों के मीमांसक गुरु, भट्ट और मिश्र इन तीन नामों से कहे जाते हैं, जो कि उनके [illegible] के [illegible] हैं। गंगेशोपाध्याय का समय १३वीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना गया है इसलिये मुरारि मिश्र का समय [illegible] और गंगेश के बीच में रखना चाहिये। इनका समय ११५० - १२२० ईस्वी का है।

त्रिपादी नीतिनयन के उपलब्ध के पहले विद्वानों का धारणा थी कि "मुरारेस्तृतीयः पन्थाः" पद्य पर (अनर्घराघव) नाटककार मुरारि [illegible] है, जिसका कि [illegible] अनर्घराघव नाटक के भिन्न [illegible] नाटककार मुरारि की मीमांसक मुरारि से एकता नहीं थी। क्योंकि नाटककार मुरारि का समय नवीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना गया है। उक्त ग्रन्थ की उपलब्धि के बाद भी इस उक्ति की प्रामाणिकता को [illegible] मीमांसा में [illegible] संशयग्रस्त है, ऐसी [illegible] के [illegible] स्वीकार किया था।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नन्दीश्वर (टीकाकार)

ये प्रभाकर मतावलम्बी टीकाकार हैं। इनका ग्रन्थ प्रभाकर विजय संस्कृत साहित्य परिषद् सिरीज नं. ११ (४२।७२६) कलकत्ता में छपा है। ग्रन्थ के प्रारंभ में ये कहते हैं —

[illegible] वक्ष्ये मत प्रभाकरः।

ग्रन्थ देखने पर [illegible] और प्रभाकर परिचित हैं। सुचरित मिश्र ने इनकी प्रामाणिकता की है। सुचरित मिश्र आचार्य के वाचस्पति और वेदान्तदेशिक के पूर्ववर्ती थे। इसलिये नन्दीश्वर का १२००–१३०० ई. के बीच में इनका समय माना जाता है। इनके [illegible] की [illegible] की प्रामाणिकता की है। इनके ग्रन्थ में लगभग २१ विषयों पर विचार किया गया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समानतन्त्रि (नैयायिक)

शंकरमिश्र विविधविनोद (पृ. २) में इसको उद्धृत करते हैं। इसके मत से कभी कोई भार [illegible] हैं, लोग नहीं। [illegible] के ये सिद्धान्त वाचस्पति [illegible] के ग्रन्थ न्यायकोश में भी उद्धृत हैं। वही सूत्र १-२-१ में भी इसका मत उपस्थित है। ये वाचस्पति से पूर्ववर्ती न्याय [illegible] व्याख्याता हैं। ५-१-१ में वाचस्पति, उदयन और वर्धमान के ग्रन्थों में [illegible] के मत का [illegible] उल्लेख है। ५-१-३२ में भासर्वज्ञ ने पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष के मत के प्रसंग में इनका मत उल्लेख किया है। "पूर्वाचार्यैः [illegible]" इत्यादि वर्धमान के वचनों से ये एक प्राचीन व्याख्याकार [illegible] मालूम पड़ते हैं। इनका [illegible] वर्धमान के समय में भी था।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भास्कर (वेदान्ती)

वेदान्त की द्वैताद्वैत पद्धति के आचार्यों में से ये एक हैं। उदयनाचार्य (कु. २. पृ. ६७) में "ब्रह्मपरिणतेरिति भास्करगोत्रे युज्यते" इस प्रकार यह उद्धृत है। वर्धमान कहते हैं कि भास्कर त्रिदण्डिमत के व्याख्याकार हैं। यह प्रसिद्ध है कि बादरायण के बाद इनके भाष्य में भेदाभेदवाद का मत स्थापित है। सर्वज्ञात्मा एवं विज्ञानभिक्षु के ग्रन्थ में उद्धृत है (पृ. १२३)। भामती में वाचस्पति ने इनके मत की आलोचना की है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अकलंक (जैन)

अकलंक ग्रन्थत्रयी का संपादन पं. महेन्द्रकुमार जैन ने किया है। न्यायविनिश्चयविवरण में ये धर्मकीर्ति के न्यायबिन्दु के व्याख्याकार धर्मोत्तर के मत का खण्डन करते हैं। इनका समय ७२०-७८० माना गया है। इन्होंने न्यायविनिश्चय

तत्त्वोपप्लवसिंह की भूमिका में (पृ. ५) इनका समय ६२०-६८० ई. दिया गया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अविद्धकर्ण (नैयायिक)

आत्मव्यवस्थापकोऽक्षपादसूत्राणामपरो भाष्यकर्ता चाविद्ध-प्रमाणवार्तिकटिप्पणम् (न्यायभूषण, पृ. १६७)। पञ्जिका में इनको उद्योतकरवार्तिक का टीकाकार बताया गया है। धर्मोत्तरप्रदीप में दुर्वेकमिश्र (पृ. १७५) इनको न्यायदर्शन के प्राचीन टीकाकार के रूप में जानते हैं। कर्णकगोमी अविद्धकर्ण, भाविविक्त और उद्योतकर को इसी क्रम से उद्धृत करते हैं (प्र.वा.वृत्ती, पृ. ७०-७२, १०८)। यह भी तत्त्वसंग्रह में उद्धृत हुए हैं। यहाँ पर भाविविक्त के पहले उद्धरण का निर्देश है। अतः ये भी प्राचीन आचार्य प्रतीत होते हैं। तत्त्वसंग्रह में इनके मत की समीक्षा करनी चाहिये।

धर्मकीर्तिकृतस्यापि लेशस्य मनुष्यत्वान्न्याय-व्याख्यानस्य च विप्रतिपत्त्या शङ्करस्वाम्यविद्धकर्णादयो बहवो नैयायिकाः प्रतिक्षिप्तवन्त इति बौद्धमतानुयायिनां ग्रन्थेषु पर्यालोचनया स्पष्टीभवति। (हेतुबिन्दुटीका, पृ. ३३) अत्र धर्मकीर्तिपूर्वकालं नैयायिकं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आनन्दहु (नैयायिक)

आनन्दहु की विवरण पञ्जिका का परिचय डा. जितेन्द्र जोशी के लेख से स्पष्ट होता है। जनरल बड़ौदा की ओर पत्रिका, व. ४, पृ. २८० में छपा है। आनन्दहु का नाम सन् १५२८ निम्बार्काचार्य के शिष्य ... की परम्परा में उल्लेख होता है यह नवद्वीप के निवासी थे और इन्होंने न्यायशास्त्र में अध्ययन किया था। विवरणपञ्जिका न्याय, वैशेषिक और ... की टीका थी। टीकाकार तथा विवरणकार के नाम से उपयुक्त इनको स्मरण करते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अर्चट (धर्माकरदत्त) बौद्ध

ज्ञानश्री के द्वारा भी ये उद्धृत हैं। ये धर्मकीर्ति के ग्रन्थों के प्रसिद्ध व्याख्याता हैं। महापण्डित राहुल इस प्रकार मानते हैं कि ये [illegible] जाते हैं। धर्मोत्तर इनके शिष्य थे। ये कश्मीरी ब्राह्मण थे। ये [illegible] थे। इनका दूसरा नाम धर्माकरदत्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध होने के बाद इनका यह नाम पड़ा। दुर्वेक ने अर्चट के साथ भट्ट और धर्माकरदत्त के साथ पण्डित शब्द जोड़ा है। अर्चट के और दुर्वेक (ई. १०७० ई.) के अनुसार इनके तीन ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं –

क्षणभङ्गसिद्धि (पृ. ८२, ८७, ३२७)
प्रमाणद्वित्वसिद्धि (पृ. १८४)
हेतुबिन्दुटीका (प्रकाशित है)

ये धर्मकीर्ति के बाद और धर्मोत्तर, कल्याणरक्षित और शंकरानन्द के पहले हुए थे। इस लिये इनका समय [illegible] धर्मोत्तर के बाद में और ज्ञानश्री [illegible] के पूर्व में रखा। महापण्डित राहुल इनका समय ८२५ ई. देते हैं। इनकी हेतुबिन्दुटीका पर दुर्वेक मिश्र ने [illegible] ९७५ ई. में लिखा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आविद्धकर्ण (नैया-

तत्त्वसंग्रह गायकवाड़ सीरीज़ संस्करण में उद्धृत — पृ. ५२, १०३, १०६, १८२, २३३, २६५, २८७, ५२८, ५५३, ५५६ ।

आविद्धकर्णस्तत्त्वटीकायामाह (अत्रैव, पृ. ५२८)

बड़ौदा संस्करण में इनका समय ७०० ई. रखा गया है, किन्तु प्रशस्तमति, उद्योतकर, भाविविक्त से पूर्व इनके मत को रखा गया है। इसलिये इनकी स्थिति उद्योतकर से पहले माननी चाहिये।

पृ. ५२८ में भाविक पुरन्दर के मत के खण्डन के रूप में आविद्धकर्ण का मत उद्धृत है। अतः पुरन्दर का समय आविद्धकर्ण से पहले मानना उचित होगा। बड़ौदा की भूमिका में पुरन्दर का समय भी ७०० ई. रखा गया है।

आविद्धकर्ण के दार्शनिक सिद्धान्त के लिये द्रष्टव्य बड़ौदा की भूमिका, पृ. LXXXVIII

आविद्धकर्णस्तु "द्वे एव प्रमाणे स्वलक्षणसामान्यलक्षण-लक्षणं नान्यत् प्रमेयं नास्ति" इत्येतद्वचस्तर्कं प्रमाणयति (पृ. ५५
आविद्धकर्ण ~~[illegible]~~ ने यह वचन किस ग्रन्थ से उद्धृत किया है? इसका पता चलने पर आविद्धकर्ण का समय निश्चित किया जा सकता है। यह वचन क्या वार्त्तिकादि का दिङ्नाग का है, अथवा वसुबन्धु का?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

असंग (बौद्ध)

वाचस्पतिमिश्र ने असंग का भी एक संग्रह पूर्व उद्धृत किया है। ये आर्य मैत्रेयनाथ के शिष्य और वसुबन्धु के गुरु थे। इनके ग्रन्थ प्रकरणार्यवाचा शास्त्र कारिका का ह्वेन-सांग ने चीनी भाषा में अनुवाद किया। इनका समय ईसवी सन् ४०० ई. मानते हैं। वसुबन्धु का समय २८०-३६० ई. माना गया है यही समय असंग का भी होना चाहिये।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

अह्रीक (जैन)

तत्त्वसंग्रह, गायकवाड़ ओरियण्टल सीरीज़
पृ. ५७३

आचार्य का यही नाम था, या इस विशेषण से यह जैन दार्शनिक अभिहित हुआ है, इसका निश्चय करना होगा। स्याद्वाद प्रकरण में सुमति से पहले यह समालोचित हुआ है। इस प्रकरण में कुमारनन्दि भट्ट की भी चर्चा है। इन तीनों आचार्यों के परस्पर संबन्ध की परीक्षा अपेक्षित है।

और बड़ोदा संस्करण में इसका समय ७०० ई. रखा है। ध्रुवजी, सिद्धर्षि आदि ने भी अह्रीक का उल्लेख किया है। यहां के उल्लेख से यह कोई विशिष्ट आचार्य न होकर सामान्य अर्थ में प्रयुक्त हुआ प्रतीत होता है।

अह्रीक हेतुबिन्दुटीका, पृ. ७८, १००, २४८, ३७४
" अष्टसहस्री, पृ. ३५, २४८ (सामान्य अर्थ में)

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आत्रेय (वैशेषिक)

वैशेषिक सूत्र के आत्रेयभाष्य का उल्लेख स्याद्वाद-रत्नाकर, षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति और न्यायवार्तिकतात्पर्य टीका में मिलता है।

[illegible] आत्रेय की भाष्यकार [illegible] नं. १३, पृ. १८५-८ ; डा. वी. राघवन् - वर्क्स एण्ड आथर्स सिटेड इन [illegible] स्याद्वादरत्नाकर JKHRS तथा ए. एल. ठाकुर आत्रेय एण्ड हिज भाष्य ऑन दि वैशेषिक सूत्र AIOC अहमदाबाद. १९५३

[illegible] में भी आत्रेय का उल्लेख मिलता है। वादिदेव, [illegible], गुणरत्न आदि जैन लेखक भी इनके ग्रन्थ से परिचित थे। [illegible] के [illegible] में भी आत्रेय [illegible] है। [illegible] में भाष्यकार के नाम से भी कुछ उल्लेख मिलते हैं। किन्तु आत्रेय भाष्य के हैं या किसी अन्य के कहना कठिन है।

[illegible] वैशेषिक सूत्र भाष्य से [illegible] प्रभावित है। आत्रेय ग्रन्थ की कुछ विशेषताएं थीं, इसलिये इसका उल्लेख आत्रेयग्रन्थ के नाम से भी मिलता है [illegible] भी [illegible] में [illegible] थे, [illegible] का कहना है। वैशेषिक सूत्रों के [illegible] करके भी [illegible] ने [illegible] वैशेषिकों के [illegible] की ~~[illegible]~~ और [illegible] के [illegible] का [illegible] है, [illegible] के [illegible] से स्पष्ट होता है जहां पर [illegible] और [illegible] का [illegible] भी है।

वादिदेव और [illegible] के ग्रन्थों में आत्रेयभाष्य का उल्लेख

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ईश्वरकृष्ण (सांख्य)

तत्त्वसंग्रह (गा॰ सं॰) पृ॰ २१-२२ में उद्धृत है। इनके समय के सम्बन्ध में मतभेद है। बेलवेलकर इनका समय द्वितीय शताब्दी रखते हैं। वे ईश्वरकृष्ण को विन्ध्यवासी से पहले रखते हैं। प्रमाण स्वरूप वे वाचस्पति के इस उद्धरण को रखते हैं — कपिलादासुरिणा प्राप्तमिदं ज्ञानम्। ततः पञ्चशिखेन। तस्माद् गर्गोलूकवाल्मीकिहारीतदेवलप्रभृतीनागतम्। ततस्तेभ्य ईश्वरकृष्णेन प्राप्तम्। इसे देखकर वे ईश्वरकृष्ण का प्राचीनत्व सिद्ध करते हैं। प्रमाण उद्धरण का अभिप्राय इनको पूर्व कोटिक करके देना। इस सूची में वार्षगण्य विन्ध्यवासी आदि का नाम न होने से भी वे ईश्वरकृष्ण को इनसे प्राचीन सिद्ध करते हैं। ईश्वरकृष्ण को विन्ध्यवासी से अभिन्न मानना विन्ध्यवासी के सम्बन्ध में ठीक नहीं है।

इसरेकार ने ईश्वरकृष्ण का समय वसुबन्धु और दिङ्नाग के समय पर निर्भर बताया है। ईश्वरकृष्ण ने वार्षगण्य का अनुसरण प्रमाण लक्षण में किया है और दिङ्नाग प्रमाणसमुच्चय में ईश्वरकृष्ण के मत का खण्डन करते हैं। वसुबन्धु के परमार्थसप्तति के बाद और दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय के पहले ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका की रचना की। अतः इनका समय ३४०-३७० मानना उचित होगा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

ईश्वरसेन (बौद्ध)

ये दिङ्नाग के शिष्य थे। इन्हीं से धर्मकीर्ति ने नालन्दा में न्याय का अध्ययन किया था।

हेतुबिन्दुटीका पृ. १२, १०५, १०६, १२१ में उद्धृत, १९७ और हेतुबिन्दुटीकालोक, पृ. २४५, ३२०, ३८३, ४०५

धर्मकीर्ति (...) के पक्ष का खण्डन किया है। इसलिये इनके भी कोई ग्रन्थ अवश्य रहे होंगे। तारानाथ के अनुसार धर्मकीर्ति ने प्रमाणसमुच्चय का अध्ययन इन्हीं से किया था। इनका समय ५७५ ई. राहुलजी ने माना है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उदयन (वैशे. नैया.)

ये प्रशस्तपादभाष्य के टीकाकार हैं। इनकी टीका का नाम किरणावली है। ये उदयनाचार्य के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। इनकी अन्य कृतियां न्यायकुसुमाञ्जलि, आत्मतत्त्वविवेक (बौद्धधिक्कार), न्याय-वार्तिकतात्पर्यपरिशुद्धि, प्रबोधसिद्धि (न्यायपरिशिष्ट) और लक्षणा-वली है। ये शकसंवत् ९०६ (९८४ ई.) में इन्होंने लक्षणावली की रचना की। ये मिथिला में दरभंगा जिला के निवासी थे।

देखिए JRAS, १९०८, पृ. ५२३
भारतीय न्यायदर्शनेर इतिहास पृ. २३४

तर्काम्बराङ्क(९०६)प्रमितेष्वतीतेषु शकान्ततः।
वर्षेषूदयनश्चक्रे सुबोधां लक्षणावलीम्॥

१. लक्षणावली का संपादन एवं प्रकाशन सन् १९०० में विन्ध्येश्वरीप्रसाद जी ने किया। इस ग्रन्थ की सरस्वतीभवन ग्रन्थों में एक और उपलब्ध होता है। २. लक्षणमाला का प्रकाशन जर्नल आफ ओरियन्टल रिसर्च, मद्रास, व. १७, अ. १, पृ. ४४-५२ में हुआ है। लक्षणमाला शिवादित्य की भी रचना है। उससे यह भिन्न है (पृ. ३)। ३. आत्मतत्त्वविवेक अथवा बौद्धधिक्कार तथा ४. न्यायकुसुमाञ्जलि उदयन के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं और प्रका-शित हो चुके हैं। ५. न्यायपरिशिष्ट अथवा प्रबोधसिद्धि कलकत्ता से सन् ३८ में प्रकाशित हुआ है। ६. न्यायवार्तिकतात्पर्यपरिशुद्धि [illegible] से प्रकाशित है। इसका कुछ अंश प्रकाशन पहले के [illegible] से प्रकाशित हुआ था। ७. किरणावली प्रशस्तपादभाष्य की टीका है। अब तक प्रकाशित ग्रन्थ गुणादि प्रकरण तक ही है। इसका आगे का अंश भी उपलब्ध हुआ है और [illegible] जी इस ग्रन्थ का संपादन कर रहे हैं।

जैन नैयायिक देवसूरि (१०८६-११६९ ई.) ने स्याद्वादरत्नाकर में उदयन और शंकर को इस प्रकार स्मरण किया है —

यदयं [illegible] संक्षिप्तो मन्दमत्युदयनादिभिः।
शंकरः [illegible] कीर्ते॥ (द्वितीय परिच्छेद)

वेङ्कटनाथ (१२६८-१३६९ ई.) न्यायपरिशुद्धि में उदयन को इस प्रकार प्रमाणभूत

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आचार्य मानते हैं। मंगलदेव शास्त्री ने [illegible] में पदे पदे उव्वट
के [illegible] का उल्लेख किया है [illegible] में [illegible] और [illegible]
[illegible] का उद्धरण नहीं मिलता। इस आधार पर [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible] के [illegible], [illegible]
[illegible] के [illegible] में [illegible] (संभवतः [illegible]
[illegible], [illegible] के [illegible]
[illegible] का मानते हैं। I. H. Q. XXII, पृ. १४४-४६ में [illegible]
[illegible] हैं [illegible]। [illegible] ने [illegible]
[illegible] किया है। [illegible] का समय [illegible] (१०१५ ई.) के बाद
[illegible] (११०० ई.) के बीच है। इसका समय १०५० ई. [illegible] मानना
चाहिये। ये [illegible] के [illegible] रहे होंगे। इस आधार पर [illegible] समय
१०७५ के पहले किसी रूप में नहीं हो सकता। इसी तरह [illegible]
[illegible] के पहले [illegible] ने [illegible] किया। [illegible] (१०८८-११७२ ई.)
के [illegible] हैं। इसलिये [illegible] के समय में ही [illegible] की [illegible] मानी चाहिये।
[illegible] का समय ११२५-५० ई. के बीच मानना चाहिये। गोविन्दचन्द्र का
राज्यकाल ११०४-५४ ई. माना गया है [illegible] ने भी
[illegible] का उल्लेख किया है [illegible] ने भी। [illegible] ने [illegible]
११४० ई. में पूरी की। इस प्रकार गोविन्दचन्द्र के [illegible] के [illegible]
[illegible] में [illegible] की [illegible] मानना चाहिये। [illegible] ये विजयचन्द्र (११६४ ई.)
और जयचन्द्र के समय में भी रहे। यह बात प्रसिद्ध है कि [illegible] के [illegible]
[illegible] को उव्वट ने [illegible] में [illegible] किया था। इसलिये यह स्पष्ट होता
है कि उव्वट [illegible] से पहले ही [illegible] हुए। यह [illegible] और [illegible]
में १०५०-११०० ई. के बीच में १०७५-८५ के आसपास [illegible] होगा।

इस आधार पर उव्वट का [illegible] १०२५ ई. के आसपास होगा।
इसी [illegible] का समय १०५०-११०० ई. माना जाना चाहिये। [illegible]
[illegible] के [illegible] (?) [illegible] उव्वट के [illegible] ने [illegible]
[illegible] की [illegible] भी। इस प्रकार उव्वट और [illegible] में [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कीर्तियों का अपार [illegible] चाहिये । [illegible] का [illegible] १० वीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना गया है । [illegible] के [illegible] ८०६-८० ई. [illegible] (2) [illegible] के [illegible] [illegible] के पूर्वार्ध [illegible] [illegible] १०५०-६० के आसपास हुई होगी । इस [illegible] (3) [illegible] के [illegible] के [illegible] । इस प्रकार [illegible] १०२५-११०० ई. [illegible] होगा ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उद्योतकर (नैयायिक)

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ५४, ५५, ५८, ६८, ६९, ८९, १०४, ११५, ११८, १६५, १७२, १७९, २०४, २१६, २२७, २२४, २५५, २७०, २९५, ३०७, ३१२, ३४१, ३४२, ३८९, ३९४, ४२२, ५१५, ७०२, ८३०, ८३२

तत्त्वसंग्रह में उद्योतकर और कुमारिल के वचन अत्यधिक संख्या में उपलब्ध हैं। इससे प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार इन दो उद्भट विद्वानों के आक्षेपों से बौद्ध दर्शन की रक्षा के लिये ही इस ग्रन्थ की रचना की। उद्योतकर वात्स्यायन के बाद दूसरा प्रसिद्ध नैयायिक है। यह न्यायवार्तिक के रचयिता हैं। वाचस्पति ने तात्पर्यटीका में कहा है कि दिङ्नाग आदि बौद्ध दार्शनिकों के आक्षेपों के परिहार के लिये उद्योतकर ने वार्तिक की रचना की। डा. सतीशचन्द्र के अनुसार वार्तिककार ने नागार्जुन और वसुबन्धु के सिद्धान्तों को भी आलोचित किया है। उद्योतकर को वासवदत्ता में स्मरण किया गया है और यह वासवदत्ता हर्षचरित में बाण ने स्मृत की है, जो कि हर्ष (६०६-६४७) का समकालीन था।

कुछ लोग उद्योतकर को धर्मकीर्ति का समकालीन मानते हैं, क्योंकि इसने वादविधि का खण्डन किया है, जो कि धर्मकीर्ति के वादन्याय का दूसरा नाम है। पर यह उचित नहीं है, वसुबन्धु के वादविधि, वादमार्ग और वादकौशल नाम के तीन ग्रन्थों के नाते उद्धरण प्राप्त होते हैं। उद्योतकर के समक्ष उद्भूत ग्रन्थ वसुबन्धु की वादविधि है, न कि धर्मकीर्ति का वाद-न्याय। धर्मकीर्ति का समसामयिक मानने पर उद्योतकर का वासवदत्ता में उल्लेख कैसे संभव हो सकेगा। यहां पर स्मरण रखना चाहिये कि ह्वेन-सांग ने धर्मकीर्ति का उल्लेख नहीं किया है। इस प्रकार धर्मकीर्ति से पहले ही इसका समय मानना पड़ेगा। इसका समय ५५०-६०० के बाद नहीं रखा जा सकता। उद्योतकर के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

संवत्सर में कहा था ज्ञात नहीं होता। ये भारद्वाज गोत्र के थे और पाशुपत शैव धर्म के अनुयायी थे। डा. [illegible] इनको कर्नाटक का निवासी मानते हैं।

तत्त्वसंग्रह (पृ. ४५७) में भारद्वाज शब्द से उद्योतकर की परिगणना है, ऐसा प्रतीत होता है। यहाँ पर 'धर्म' का भी पाठ है। इसके स्थान पर गायकवाड़ संस्करण में 'भर्तृ' पाठ है।

उद्योतकर का समय यद्यपि अनिश्चित है, तथापि दिङ्नाग से पहले [illegible] के [illegible] ग्रन्थ या पाठक में इनकी उपस्थिति की, ऐसा प्रतीत होता है।

उद्योतकर ने अपने न्यायवार्तिक में कुछ प्राचीन तथा वैशेषिक दार्शनिकों उद्धृत किये हैं और स्वतन्त्र रूप से कुछ सूत्रों की व्याख्या की है। (देखिए — उद्योतकर एण्ड वैशेषिक, प्रोसीडिंग्ज A.I.O.C. बाम्बे अधिवेशन, १९४९, पृ. ३२५-३३४)

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपवर्ष (मीमांसक)

प्रपञ्च, प्राचीन, प्रसिद्ध

ये पूर्वमीमांसा और ब्रह्मसूत्र के वृत्तिकार माने जाते हैं। शंकराचार्य दर्शन के व्याख्यान भाष्यकार आपने भाष्य का आधार उपवर्ष के ग्रन्थ को बनाते हैं। शबरस्वामी ने उद्धृत वृत्तिकार उपवर्ष ही प्रतीत होते हैं। रामानुजाचार्य जिन उपवर्ष को भी वृत्तिकार के रूप में उद्धृत करते हैं, भगवान् भाष्यों।

म. म. कुप्पुस्वामी शास्त्री बोधायन वृत्तिकार के आधार पर बोधायन को ही उपवर्ष मानते हैं। इतिहासज्ञ उपवर्ष को शंकर के भौगोलिक सिद्धान्त का प्रवर्तक और बोधायन को विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त का प्रवर्तक मानते हैं। बोधायन और उपवर्ष पूर्व और उत्तर मीमांसा को एक ही मानते हैं।

उपवर्ष 100 BC – 300 AD (प्रकरण पञ्चिका पृ. 22)

इन्होंने बीस अध्याय के (पूर्व, उत्तर मीमांसा संकर्षकाण्ड सहित) मीमांसा पर भाष्य रची टीका लिखी। शबरस्वामी और शंकराचार्य इनको भगवानुपवर्ष: इस प्रकार आदर प्रकट करते हैं। कुप्पुस्वामी शास्त्री बोधायन से इनको अभिन्न मानते हैं। डा. एस. कृष्णस्वामी आयंगार इस मत को स्वीकार नहीं करते। प्रपञ्चहृदय में बोधायन और उपवर्ष को पृथक् आचार्य माना है। रामानुजाचार्य के ग्रन्थ में पूर्वोत्तरमीमांसा की वृत्तिकार टीका तथा एक आचार्य का उल्लेख है, जोकि आप प्रमाण मानते हैं। डा. कृष्णस्वामी बोधायन को वृत्तिकार स्वीकार करते हैं। (कुप्पुस्वामी शास्त्री — बोधा. प्रोसीडिंग्स, आल इण्डिया ओरियण्टल कान्फ्रेन्स, मद्रास 1924)।

यह कहा जाता है कि उपवर्ष को पाणिनि और बोधायन के बीच में 200 ई. पूर्व में रखना चाहिये। आर्य विद्या सुधाकर यहाँ पर बतायी जानकारी संभव है, पतञ्जलि संभवतः भी। शबरस्वामी और शंकराचार्य का विवरण उपवर्ष से ही परिचायक है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

(उम्बेक भट्ट)

उम्वेयक (मीमांसक)

तत्त्वसंग्रहटीका (भा. सं.) पृ. ७८२

एम. वी. शास्त्री ने गौडवहो की भूमिका में बताया है कि उम्बेक भवभूति का दूसरा नाम है और यह कुमारिल का साक्षात् शिष्य है। विद्वानों में भी उम्बेक का भवभूति से अभेद बताया गया है। उम्बेक मीमांसाश्लोकवार्तिक का टीकाकार प्रसिद्ध है। उम्बेक, उम्वेक और उम्वेयक एक ही व्यक्ति के नाम हैं। कौटिल्य का यह उद्धरण भवभूति को ७३५ ई. से पहले का सिद्ध करता है। कल्हण का यशोवर्मा, काश्मीरराज ललितादित्य की सभा का आश्रितकवि कहता है (७३३-७३४ ई.) इसी आधार पर सिद्ध करता है। इस प्रकार हम उम्बेक का समय ६५५-७२५ ई. रख सकते हैं। क्योंकि कुमारिल का समय ६२०-६८० विद्वानों ने माना है यह सिद्धि इससे भी ठीक मालूम होता है, कि उम्बेक ने कुमारिल के व्याख्यानों को सुना था। उम्बेक कुमारिल के शिष्य प्रभाकर को उद्धृत करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभाकर और उम्बेक कुमारिल के समसामयिक शिष्य थे और उम्बेक का समय

६६०-७२० ई. — तत्त्वसंग्रहपञ्जिका, पृ. २२

उम्बेक का पूरा नाम और भवभूति के नाम की तादात्म्य मान्यता यह है। उम्बेकभट्ट कुमारिल के मुख्य शिष्य थे। इनको भवभूति से अभिन्न माना जाता था (कुमारिल स्वामी के प्रमाणवार्तिक का ... श्लोकवार्तिक ... २२ और १४ २४)। इनकी अभिन्नता के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण है। चित्सुखाचार्य टीकाकार भवभूति और उम्बेक को एक मानते हैं (नयविवेक?, पृ. २५५)। ... की प्राचीन ... से पूर्व उम्बेक नाम का, जो कि कुमारिल का शिष्य था, नाटककार भवभूति और ... श्लोकवार्तिक के ... में भवभूति के ... [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस आन्दोलन के विषय में भी एक प्रसंग सम्बन्धित है। मध्ययुगीन लोक कथाओं में इसके युद्ध का नाम जनश्रुति है, कुमारिल भट्ट। जनश्रुति भी कुमारिल से कोई आन्दोलन नहीं प्रमाणित होता। माधवाचार्य में कुमारिल ने अपने वेद, उपनिषद् (वेदान्त), दर्शन और मीमांसा के प्रचार की चर्चा की है, लेकिन बौद्धों के विषय में कुछ नहीं कहा।

उदयन आचार्य और [illegible] के [illegible] के युग में [illegible] हैं। [illegible] हो चुके हैं। उदयन को परमेश्वर सिद्ध और [illegible] के [illegible] संशोधन करते हैं। मैथिल हैं, उन्होंने कोई [illegible] भी [illegible] इतना भी है।

[illegible] उदयन [illegible] के कुमारिल से पूर्व [illegible] के साथ मिलकर भी था। इसलिए यह [illegible] उदयन ने [illegible] पर एक [illegible] के [illegible] किया था।

कुमारिल के [illegible] से, शंकर और उदयन और उदयन। [illegible] उदयन [illegible] भी होगा। [illegible] भी इस [illegible] नहीं करते। इसके [illegible] को [illegible] किया। [illegible] भी [illegible] का [illegible] उनकी [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(कार)

कटन्दी (वैशेषिक)

[illegible] की [illegible] में [illegible] मुरारिमिश्र ने अनर्घराघव नाटक में रावण के कटन्दी नामक ग्रन्थ का उल्लेख किया है। किरणावलीभास्कर में पद्मनाभमिश्र, प्रद्युम्न (रत्नकोश) ने [illegible] में गोवर्धन [illegible], प्रकाशवर्धमान ने अनुमानदीधिति [illegible] रावणप्रणीत भाष्य का उल्लेख करते हैं। यहां पर इतने [illegible] रावणप्रणीत भाष्य को रावणप्रणीत माना है या कटन्दी को ही भाष्य माना है, यह स्पष्ट नहीं होता। [illegible] के अनुसार कटन्दी ही रावणप्रणीत भाष्य होगा, [illegible] जानने के लिए [illegible] का [illegible] [illegible] से [illegible] है, [illegible] उद्धृत [illegible] है।

यह ग्रन्थ वैशेषिक सूत्रों का एक विस्तृत व्याख्यान प्रतीत होता है। पद्मनाभ ने इसको दो बार उद्धृत किया है, इसका एक किरणावली की [illegible] टीका में [illegible] पहला उद्धरण सूत्र ८.१.१२ से सम्बद्ध है, जब कि दूसरा [illegible] का [illegible] करता है। दूसरे ग्रन्थ के और उद्धरण भी यहां प्रतीत होते हैं। [illegible] किरणावली [illegible] उल्लेख नहीं करते। यह ग्रन्थ [illegible] और भाष्य ग्रन्थ से पूर्व का [illegible] था। यह ग्रन्थ बहुत पहले ही लुप्त हो गया था। अनर्घराघव की [illegible] के आधार पर कुप्पुस्वामी शास्त्री कटन्दी को रावणभाष्य से अभिन्न मानते हैं। (रावणभाष्य, कुप्पुस्वामी शास्त्री) OR. मद्रास, भा. ३, पृ. १-५)। इस भाष्य का प्रकाशवर्धमान और रत्नप्रभा में उल्लेख है। [illegible] ने इस ग्रन्थ को [illegible] नहीं माना है। उनका कहना है कि यह सम्भव है, रावण के [illegible] के ऊपर अपने भाष्य की रचना की हो, किन्तु उसने कटन्दी से [illegible] नहीं। [illegible] जानने के लिये अनर्घराघव की [illegible] देखना ही [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कणाद (वैशेषिक)

सप्तविंशतिमे प्राप्ते परिवर्ते क्रमागते ।
जातूकर्ण्यो यदा व्यासो भविष्यति तपोधनः ॥
तदाप्यहं भविष्यामि सोमशर्मा द्विजोत्तमः ।
प्रभासतीर्थमासाद्य योगात्मा लोकविश्रुतः ॥
तत्रापि मम ते पुत्रा भविष्यन्ति तपोधनाः ।
अक्षपादः कणादश्च उलूको वत्स एव च ॥

(ब्रह्माण्डपुराण, अनुषङ्गपाद १४७-५१)

लिङ्गपुराण और वायुपुराण (वायुपुराण २३.२०१) में भी इसी प्रकार के वचन मिलते हैं। वहाँ पर कणाद के स्थान में उलूक पाठ है। इसका कारण उसका नाम वैशेषिक, औलूक्य और कहीं कहीं औलूक नाम से भी अभिहित है। औलूक शब्द के लिये देखें न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका १.१.२, [illegible] विचार। जो परमाणु के योग से सदा यथा जहाँ पर योग कर्म के कारण से इनका यह नाम प्रचलित है।

न्यायभाष्य में कणादसूत्र उद्धृत हैं और चरकसंहिता में (१।१।७) द्रव्य गुण इत्यादि की परिभाषाओं का वर्णन मिलता है। इसलिये ये सूत्र स्वतन्त्र भी रूप से प्रचलित थे।

वैशेषिक दर्शन के [illegible] बौद्ध सूत्र, जैन सूत्र [illegible] आदि द्वारा इन्हें भी, मिलते हैं।

कणाद काश्यप गोत्र के थे। इसी से इनका आविष्कार का प्रचलन है। कणादि, कणभुक्, कणभक्ष शब्द के अनेक अर्थ किये गये हैं। कणाद सूत्रों पर कोई प्राचीन भाष्य उपलब्ध होता है। इसलिये इसका समय ईसापूर्व ४ थी या तीसरी शताब्दी होता है। (वेदतीर्थ — भारतीय दर्शन पृ. १४४-१४६ ; न्यायवार्तिकभूमिका पृ. ६०)

वैशेषिक दर्शन बुद्धपूर्वकालीन प्रतीत होता है। आजीवक परमाणु सिद्धान्त पर विचार करते हैं। जैनागमसूत्र (भगवती सूत्रकृताङ्ग, पृ. १००, ३४६, ३३३) आदि प्राचीन ग्रन्थों के कणाद

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का नाम अथवा लैङ्गिक [illegible] सम्मिलित है। वैशेषिक सूत्रों पर कोई प्राचीन वृत्ति उपलब्ध नहीं थी। शंकरमिश्र का उपस्कार पहली व्याख्या थी परन्तु ये प्रकाशित [illegible] अपरोक्षतः। पहली व्याख्या थी [illegible] का श्रेय श्री जम्बूविजय (मुनि) को [illegible] पद [illegible] प्रकाशित करने का। जैसलमेर कोठि में इसकी प्रति उपलब्ध हुई थी। किसी समय [illegible] में वैशेषिकदर्शन का विशेष प्रभाव था। शंकराचार्य [illegible] पाशुपत आचार्यों ने वैशेषिक दर्शन का विशेष प्रचार किया था।

[illegible] के प्रकार के वैशेषिकों का उल्लेख करता है। गुणरत्न वैशेषिकों को पाशुपत मत का ही अनुयायी मानता है, यौग, और नैयायिक ये सभी पाशुपत कहे जाते हैं (द्र. षड्दर्शनसमुच्चय की भूमिका, पृ. ३)। वैशेषिकों का एक वर्ग [illegible] कहा जाता था। [illegible] की [illegible] (पृ. ८८) [illegible] वैशेषिकों के [illegible] पाशुपत [illegible] है (काणाद-[illegible] पाशुपतोऽनुगामिनः)। [illegible] के [illegible] और [illegible] ८८ का [illegible]। [illegible] पाशुपतों के [illegible] किया जाता है।

प्राचीन और उत्तर के शिलालेखों को [illegible] (वही, पृ. १०) [illegible] के [illegible] के [illegible] की [illegible] और उनका [illegible] विशेष [illegible]। [illegible] के [illegible] द्र. पं. ह. प्र. [illegible] और पं. डी. [illegible] का लेख भी।

वैशेषिक सूत्रों पर रावणभाष्य के साथ एक भारद्वाजवृत्ति का भी उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार आत्रेयभाष्य का भी उल्लेख है।

उपोद्घात [illegible] वैशेषिक, A10C [illegible] १९६१, पृ. ३२७

~~[illegible]~~ शंकराचार्य अपने उपस्कार में एक वृत्ति का उल्लेख करते हैं [illegible] की [illegible] उपलब्ध नहीं थी [illegible] के वैशेषिक [illegible] का [illegible] उल्लेख [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] है [illegible]।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पदार्थधर्मसंग्रह का व्याख्यान किया (न्यायकन्दली, [illegible] २३६, ६-२११) उदयन श्रीधर और व्योमशिवाचार्य से पहले ही जिन प्रशस्तभाष्य की टीकाओं प्रचलित थीं संप्रदाय और [illegible] के [illegible] का भी [illegible] धाराएं प्रचलित थी। व्योमशिवाचार्य और श्रीधर संप्रदाय की धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। उदयन का भाष्य ने [illegible] में भी अपना प्रभाव रखा था।

प्रथमं हि [illegible] [illegible] पाशुपतादिकम् ।
न च स्वकायवेदार्थैर्विप्रैः [illegible] ततः परम् ॥
कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत् ।
गौतमेन तथा न्यायं सांख्यं तु कपिलेन वै ॥
(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड २०७ अ.)

कणाद के इस शास्त्र के ग्रन्थों में काश्यप के नाम से अभिहित हैं। क्योंकि वे काश्यपगोत्र के थे।

कणादप्रणीत सूत्र ही वैशेषिक दर्शन के मुख्य आधार थे, इसलिये इन पर बहुत से व्याख्यान, उपव्याख्यान और प्रकरण ग्रन्थ थे। इनमें अनेक त्रुटियों के रहने से प्रशस्तपाद ने इन त्रुटियों का परिष्कार करते हुए अपना प्रशस्तपादभाष्य बनाया। इसके बन जाने के बाद वैशेषिक सूत्र व्याख्यान आदि की उपेक्षा होगई और सूत्रों को छोड़कर यही भाष्य ग्रन्थ प्रतिष्ठित होगये। इसलिये वैशेषिक दर्शन का प्राचीन ऐतिहासिक स्वरूप अन्धकार में है। जैन ग्रन्थों के आधार पर इस पर कुछ प्रकाश पड़ता है। मल्लवादी क्षमाश्रमण के अनुसार नयचक्र और उसकी सिंहसूरिगणि क्षमाश्रमण की वृत्ति में ५-६ अरों में वैशेषिक दर्शन वर्णित है। इससे ज्ञात होता है कि उस समय वैशेषिक सूत्रों पर वाक्य, भाष्य और प्रशस्तपादभाष्य की टीकाएं विद्यमान थीं। कटन्दी नामक ग्रन्थान्तर का भी उल्लेख है। अन्य भी अनेक टीकाएं उस समय उपलब्ध थीं।

प्रमाणसमुच्चयवृत्ति में दिङ्नाग कौशिक आत्रेय आदि शब्दों से अनेक वैशेषिक ग्रन्थों की सूचना देते हैं। प्रमाणसमुच्चय टीकाकार जिनेन्द्रबुद्धि की व्याख्या के अनुसार यहां पर सूत्रकार,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्य वार्तिककार, भाष्यकार, शास्त्रकार और टीकाकार आदि का उल्लेख किया गया है। [illegible] में प्रशस्त और अत्रेय के जिन वैशेषिक ग्रन्थों की चर्चा की गई है, वे आज उपलब्ध ग्रन्थों में नहीं मिलते। इससे यह अनुमान होता है कि दिङ्नाग के समय में अन्य वैशेषिक ग्रन्थ विद्यमान थे। वैशेषिक भाष्य की भी अत्रेय प्रसंग में दिङ्नाग उल्लेख करते हैं, यह जिनेन्द्रबुद्धि के वर्णन से स्पष्ट है। वैशेषिक के टीकाकार, इस, इत्यादि, टीकाकार आदि का भी दिङ्नाग उल्लेख करते हैं। आज उपलब्ध वैशेषिक ग्रन्थों में ये उपलब्ध नहीं होते। इससे भी इस तथ्य के साथ वैशेषिक ग्रन्थ रहे होंगे जो उपलब्ध थे, ऐसा अनुमान पड़ता है। जिनेन्द्रबुद्धि की विशालामलवती टीका में उद्धृत वैशेषिक वचन भी आज के वैशेषिक ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होते। जिनेन्द्रबुद्धि एक वैशेषिक [illegible] ग्रन्थ का उल्लेख करते हैं। उसके बाद शङ्कराचार्य की कृति में उपलब्ध होते हैं, इससे ऐसा अनुमान होता है कि इन दोनों की आधार पूर्ववर्ती कोई थी। प्रशस्तपादीय प्रशस्तपादभाष्य का ही नामान्तर है, ऐसा [illegible] है। प्रशस्तपाद ने वैशेषिकसूत्रों का भाष्य [illegible] था। यह वार्तिककार प्रशस्तपाद [illegible] की इस प्रकार प्रशस्तपाद दिङ्नाग से पूर्ववर्ती सिद्ध होते।

वल्लालसेन के (१२१८-३४ ई०) समय में रचित चन्द्रानन्दकृत वैशेषिक सूत्रवृत्ति के प्रारंभ के आधारों की प्रस्तावना उपलब्ध है। (चन्द्रानन्द वृत्ति उपोद्घात, पृ. १७)

वैशेषिकदर्शन औलूक्य, काणाद या काश्यपीयदर्शन के नाम से भी अभिहित है। (वैशेषिक का वैशेषिक [illegible], [illegible] प्रबोध, पृ. २१०) [illegible] भारतीय दर्शन [illegible] १९५१ भूमिका, पृ. १० में वैशेषिक दर्शन को औलूक्य नाम और उलूक के अनुकूल माना है, किन्तु [illegible] में उपलब्ध वैशेषिक दर्शन न तो औलूक्य है और न औलूक्य के अनुकूल। उपर्युक्त [illegible] वैशेषिक दर्शन को [illegible] उपनिषद् से [illegible] हैं। उनके मत में (बुद्धचरित ४१३) परमाणु [illegible] से आरम्भ होता है, [illegible] में ऐसे अनेक [illegible] हैं, जिनके वैशेषिक दर्शन के व्यवहार [illegible] हैं, अणु, परमाणु,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कणाद (वैशेषिक)

युक्त, नीः, सोमरुद्र, सकलवाद आदि शब्द यहाँ उपलब्ध होते हैं। महाभारत १२, १४१, ३७-४० श्लोक का तात्पर्य यही है, जो कि हेतुभिर्न [illegible] (८।१।१४) इस सूत्र का है। इसी प्रकार १२, १२४, १६ का तात्पर्य [illegible] (५.२.८) का है। महाभारत में कणाद या उनका दर्शन कहीं भी उल्लिखित नहीं है, किन्तु अनेक स्थलों से कणाद और उनके दर्शन की प्राचीनता सिद्ध होती है। इससे यही सिद्ध होता है कि यह पूर्व बौद्ध दर्शन था। संभवतः इसका उल्लेख यहाँ नहीं हुआ, क्योंकि स्वयं सांख्य-दर्शन भी प्राचीन दर्शन के रूप में प्रस्तुत है।

प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय दर्शन में सर्वत्र वैशेषिक दर्शन का उल्लेख है। न्यायदर्शन में अनेक वैशेषिक सिद्धान्त हैं। कुछ सूत्र दोनों दर्शनों में उपलब्ध होते हैं। वात्स्यायन और उद्योतकर आदरपूर्वक वैशेषिक दर्शन का उल्लेख करते हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे इसको मान्य किये गये हैं। बादरायण ने ब्रह्मसूत्र में वैशेषिकवाद का खण्डन किया है। इससे न्यायवार्तिक के सम्पूर्ण और निःशेष भी वैशेषिक दर्शन की व्याख्या करते हैं। [illegible] और सांख्यदर्शन से पूर्व वैशेषिक के सिद्धान्त प्रयुक्त होते हैं, किन्तु बाद में इसके विकास में वैशेषिक का बहुत बड़ा हाथ है। शंकर-स्वामी को वैशेषिक दर्शन का परिज्ञान था (शंकर एण्ड न्याय वैशेषिक दर्शन JOR मद्रास, वा. १८)। कुमारिल और प्रभाकर के दर्शन पर भी इसका स्पष्ट प्रभाव है। सांख्यदर्शन में वैशेषिक पक्ष का खण्डन किया गया है।

बौद्ध और जैन दर्शनों का भी वैशेषिक से कुछ संबन्ध है। जैनों का अवतार षडुलूक है। षडुलूक रोहगुप्त (१८ ई.)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के द्वारा प्रभावित जैनों की नैयायिक व्याख्या में वैशेषिक पद्धतियों अनेक बातें मिलती हैं। इस संबन्ध में जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण की विशेषावश्यकभाष्य पर मलधारी हेमचन्द्रसूरी की टीका के साथ प्रकाशित जैन ग्रन्थमाला काशी का संस्करण पृ. ४८१-१००२ द्रष्टव्य है। यहां पर कहा है कि रोहगुप्त इसका नाम है, इसको षडुलूक क्यों कहते हैं उत्तर दिया है कि यह उलूक गोत्र में उत्पन्न हुआ और छह पदार्थों का निरूपण करता है, इस लिये इसको षडुलूक कहते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र की शान्तिसूरि की बृहद्वृत्ति (D.L. पब्लिकेशन, सूरत) पृ. १६१-१६२ में बताया है कि किस प्रकार त्रैराशिक शाखा उत्पन्न हुई। इस प्रसंग में आवश्यकसूत्रवृत्ति हरिभद्रसूरि की आगमोदयसमिति संस्करण सूरत, पृ. ३१८-३२१ भी द्रष्टव्य है। यहां पर वैशेषिक सूत्रों के अनुसार १७ गुणों का भी परिगणन है। प्रशस्तपादभाष्य के अनुसार २४ गुण हैं। डा. विंटरनित्ज़ (जैनास इन दी हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर, पृ. २५) का कहना है कि रोहगुप्त ने अपने त्रैराशिक मत के लिये वैशेषिक मतों को स्वीकार किया था।

बौद्धधर्म में वैशेषिक सूत्रों की आलोचना प्राप्त होती है। लंकावतारसूत्र में वैशेषिक सूत्रों का परिगणन परिलक्षित होता है। सूत्रालंकार के कर्ता अश्वघोष माने जाते हैं। इस ग्रन्थ में वैशेषिकदर्शन का खण्डन उपलब्ध होता है। [illegible] (पृ-२०४) में उद्धृत नागार्जुन के ग्रन्थ रत्नावली में उलूक दर्शन का उल्लेख है। तिब्बती बताते हैं कि नागार्जुन ने अपने [illegible] में कणाद के साथ उलूक का खण्डन किया था। आर्यदेव अपने चतुःशतक में [illegible] से वैशेषिकदर्शन को उद्धृत करते हैं। [illegible] के [illegible] में, जो कि [illegible] दर्शन का एक [illegible] ग्रन्थ है, वैशेषिक मतों का खण्डन किया गया है।

इस प्रकार भारतीय दर्शन का यह महत्त्वपूर्ण अंग है वैशेषिकदर्शन। बुद्ध से पूर्व ही इसकी स्थिति है, ऐसा अनुमान है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

किन्तु इस दर्शन के प्राचीन कोई ग्रन्थ नष्ट हो गये। इस दर्शन के व्याख्याताओं के कारण तीन प्रकार की व्याख्याएं हैं:— 1. ऐतिहासिक, ग्रन्थ सम्बन्धी और २. व्याख्यात्मक (Exigetical)। चन्द्रानन्द की वृत्ति इस सम्बन्ध में एक स्वतन्त्र टीका है।

गदाधर भट्टाचार्य के शब्दों में:— "[illegible]" ([illegible], पृ. ३११)

चाइनीज बौद्ध त्रिपिटक में चीनी भाषीय सांख्यकारिका तथा वैशेषिक पदार्थ के भाष्य ये दो ग्रन्थ चीनी भाषा के उपलब्ध होते हैं। इनमें से सांख्यकारिका का फ्रेंच अनुवाद प्रो. तकाकुसु ने किया और वैशेषिक दश पदार्थ शास्त्र का अंग्रेजी अनुवाद भूमिका सहित प्रो. H. Ui ने किया है और ओरियन्टल संस्कृत सीरीज सं. २२ में इसका प्रकाशन हुआ। इसका द्वितीय संस्करण सन् १९६२ में। इस ग्रन्थ का ६४८ ई. में चीनी अनुवाद हुआ था।

कुमारजीव (४०१ ई.) ने देव के शतशास्त्र का चीनी अनुवाद किया था। इस ग्रन्थ में सांख्य और वैशेषिक के सिद्धान्तों की आलोचना की है। चिजांग (५४९–६२३) ने भी इसका अनुवाद किया। चिजांग ने वैशेषिक दर्शन के विषय में यह विवरण दिया है—

इस दर्शन के प्रथम प्रतिष्ठापक का नाम उलूक था। बुद्ध से ८०० वर्ष पहले इसकी स्थिति थी। इसके ग्रन्थ का नाम वैशेषिक सूत्र था। इसमें १०,००० श्लोक थे। इसका मुख्य प्रतिपाद्य छः पदार्थ हैं। ये असत्कार्यवादी हैं। आगम बुद्ध से भिन्न है।

दूसरे स्थान पर यह कहता है — हरिवर्मा की जीवनी के अनुसार हरिवर्मा के समय में (२५० ई.) एक उलूक का अनुयायी रहता था। उसका कहना था कि हमारे गुरु के बताये शास्त्र का नाम वैशेषिक सूत्र है। इसमें छः पदार्थ कहा है। सांख्य दर्शन के साथ यह चलता है। इसमें सांख्य की अपेक्षा कुछ विशेषतायें थीं। इसलिये इस शास्त्र का नाम वैशेषिक पड़ा।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्टाइन जी के विवरण के अनुसार [illegible] स्वामी को [illegible] के लिये [illegible] । [illegible]

[illegible] कहलाये । इनका ग्रन्थ [illegible] था।

[illegible] ने [illegible] का उल्लेख किया, पर [illegible] । [illegible] के प्रमाण से (पु.स. वि.- [illegible]), जो [illegible] हैं, पर [illegible] (१.७) । स्टाइन जी ने [illegible] । [illegible] इनके पिता का नाम चम्पक था । [illegible] ने अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की । [illegible] । [illegible] था । [illegible] होंगे । [illegible] था । [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] है कि [illegible] थे ।

[illegible] का नाम चन्द्र था, पर इनको स्टाइन जी के द्वारा [illegible] नाम है । [illegible] का नाम [illegible] है । [illegible] के रूप में [illegible] में [illegible] का [illegible] है, [illegible] हैं, [illegible] नहीं । [illegible] के बीच में [illegible] होगा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस गणना के अनुसार ईश्वरकृष्ण ३० वर्ष के थे, जब कि वे १०६ वर्ष के वसुबन्धु से पराजित कर दिए थे। ५२७ में चीन के नरेश के निमन्त्रण पर परमार्थ ५३३ ई. में चीन पहुंचे थे। [illegible] का समय ५५० से ५७० के बीच में रखा जा सकता है। प्रशस्तपाद ने भी [illegible] के समय ही इस ग्रन्थ में प्रशस्त पदार्थ के अनेक स्थलों में दिङ्नाग-बौद्ध के सिद्धान्तों के निराकरण की रचना प्रारम्भ की थी। अतः पर प्रशस्तपाद का समय [illegible] उपरान्त अथवा छठी शताब्दी का पूर्वार्ध माना गया था

वैशेषिक के छः पदार्थों के अतिरिक्त यहां पर शक्ति, [illegible], [illegible] और अभाव के नाम पदार्थ और इन्हें जोड़े गये हैं, यहां पर [illegible] का [illegible] की [illegible] है, [illegible] और [illegible] के किसी [illegible] यहां नहीं माना गया।

इस ग्रन्थ की कोई भी टीका उपलब्ध नहीं है, किन्तु [illegible] नामक [illegible] १० [illegible] इसके ऊपर लिखी गई थी।

वैशेषिक सूत्रों की तिथि के ऊपर अनेक विद्वानों ने विचार किया है। [illegible] के [illegible] सूत्रों की तिथि का [illegible] जैकोबी का कहना है कि न्यायदर्शन और ब्रह्मसूत्र की रचना २००-५०० ई. के बीच में हुई। वैशेषिक और योगसूत्र इससे प्राचीन हैं। योगसूत्र की रचना ४५० ई. के बाद हुई और न्यायदर्शन की नवीन रचना है। जैकोबी के मत से वात्स्यायन, [illegible], [illegible] ([illegible]) और [illegible] २००-५०० ई. के बीच में ही हुए।

[illegible] और परम्परा का विचार [illegible] वैशेषिक सूत्रों की रचना का और उसकी [illegible] परम्परा का [illegible] [illegible] के [illegible] इसके [illegible] यहां वैशेषिक की [illegible] उपलब्ध [illegible] के इतिहास को [illegible] किया जा रहा है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

[illegible] ने [illegible] के अपने संस्करण की भूमिका ([illegible])
में वैशेषिक और न्यायदर्शन के विकास का इतिहास दिया है [illegible]
[illegible] और उनका उल्लेख [illegible], [illegible] में किया है
[illegible] [illegible] ने [illegible]
[illegible] और [illegible] के बीच में [illegible] ई. पू. में [illegible]
[illegible] [illegible] ने प्राचीन [illegible]
[illegible] की [illegible] है। वे [illegible] के [illegible]
हैं। [illegible] के [illegible] से [illegible]। इससे प्राचीन [illegible] का [illegible]
[illegible] था। उपरान्त में [illegible] [illegible]
है और [illegible] की [illegible] हुई है [illegible] के [illegible]
[illegible] के [illegible] हुई। [illegible]
[illegible] प्रतीत होता है।

वैशेषिकसूत्र ४.१.८ और ५.२.२० न्यायसूत्र में ३.१.३५
और २.१.२८ के रूप में उपलब्ध हैं। वात्स्यायन भाष्य में [illegible]
[illegible] उपलब्ध है। इसी प्रकार न्यायवार्तिक में भी।
न्यायसूत्र का [illegible] (२-३ शताब्दी) और [illegible] (४ शताब्दी)
के बीच में प्रतीत होती है। वात्स्यायन न्यायसूत्र के प्रथम भाष्यकार हैं। वे
[illegible] हैं। दिङ्नाग के [illegible] है। [illegible]
[illegible] का उत्तर [illegible] का प्रारंभ है। [illegible]
[illegible] का उत्तर [illegible] का प्रारंभ है। दिङ्नाग का उत्तर
उद्योतकर ने दिया है और [illegible] न्यायवार्तिक में
[illegible] के उद्धरण मिलते हैं। उद्योतकर का उत्तर धर्मकीर्ति ने दिया है और
धर्मकीर्ति का उत्तर [illegible] और वाचस्पति मिश्र ने दिया है। इसका उत्तर
धर्मोत्तर ने दिया और धर्मोत्तर की [illegible] (ई.) की
धर्मकीर्ति का समय [illegible] है। [illegible] का [illegible] और
[illegible] के [illegible] है। उद्योतकर धर्मकीर्ति के [illegible]
चुके थे। [illegible] ने [illegible] धर्मकीर्ति का [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मगुप्त उज्जैन के प्रधान तथा विद्वान गण के बाद हुए। वराहमिहिर (५३७-५८७) और आर्यभट (४७६-५५०) के पहले ब्रह्मगुप्त हो चुके थे। क्योंकि इन्होंने इनके सिद्धान्त का उल्लेख किया है। आर्यभट और भास्कर के बाद ब्रह्मगुप्त जगत में बीजगणित को व्यवस्थित किया। इस परम्परा का प्रभाव ही उज्जैन ने भारत को ज्योतिष एवं गणित का केन्द्र बनाया। इसलिए ज्योतिष में ... प्रथम ही प्राचीन केन्द्र था। ब्रह्मगुप्त ने भी ... बीजगणित और ... को ... का प्रचार किया।

ज्योतिषी (ऐतिहासिक ...) का कहना है कि ... प्राचीन आचार्यों में ... ही मिलता। ... उपलब्धि ... में ... का ... है। प्राचीन आचार्यों के ... के बाद ... का व्यावहारिक ... हुआ। ... में जैन और बौद्ध धर्म ... हुए हैं। ... जैन आचार्यों का ... में ... हुए हैं। ... में बीजगणित का ... इतिहासकार में H. V ... जैन ज्योतिष ... ई. १८-२२ ... है। इन ग्रन्थों के आधार पर ... महावीर और बुद्ध के समय में (६-५ शताब्दी B.C.) बीजगणित ... के ... में ... के प्रभाव ... हो चुका था। ... में ... ३०० ई. (बी. सी.) के पहले ... बीजगणित नहीं हुआ था। ... (...) के ... में (...) ... ३०० बी. सी. के बाद ही ... हुई। जैन ग्रन्थों के (१८ ई.) में ... बीजगणित के ... इस प्रकार बीजगणित ... ई. सन् १२ में ... बीज- गणित ... का ... था। ... के समय में ... के द्वारा ... में ... का ... है ... के ...

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

है। उनमें भी वैशेषिक आदि सिद्धान्तों का [illegible] जैनाचार्यों के
[illegible] के वैशेषिक का [illegible] उल्लेख [illegible] में [illegible]
[illegible] के [illegible] है। अश्वघोष बुद्धचरित में [illegible]
[illegible] और वैशेषिक [illegible]
बुद्ध के समय में प्रचलित था। [illegible] बुद्धकालीन [illegible]
के समान है, इसके प्रमाण में वैशेषिक दर्शन उलूक के [illegible]
[illegible] अश्वघोष वैशेषिक को बुद्ध से प्राचीन [illegible]
[illegible] और उलूक के नाम [illegible]
इसके [illegible] अश्वघोष के समय में भी [illegible]
[illegible] था। नागार्जुन, आर्यदेव और हरिवर्मन ने भी
[illegible] और वैशेषिक दर्शन का [illegible] है। हरिवर्मन [illegible]
कुमारलात के समय है। [illegible] अश्वघोष का समय १३ ई.
नागार्जुन का ११३-२१३ ई. आर्यदेव का १६३-२०३ ई. और हरिवर्मन का
२५० - २७० ई. है। प्रज्ञापारमिताशास्त्र में नागार्जुन ने सांख्य (कपिल),
योग और वैशेषिक (उलूक) का खण्डन किया है। [illegible]
[illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] उलूक ही सर्वाधिक
[illegible] था (दे. ४७)। बौद्धों में भी [illegible] था। सांख्य और
[illegible] नागार्जुन ने [illegible] है (दे. ५०)। नागार्जुन के समय वैशेषिक
सूत्र के [illegible] नहीं, [illegible]। वैशेषिक [illegible]
[illegible]। देश के [illegible] वैशेषिक सूत्रों [illegible]
[illegible] सांख्य,
वैशेषिक और [illegible]
[illegible]
देश के ग्रन्थ में [illegible] हरिवर्मन के [illegible] में
वैशेषिक [illegible] हरिवर्मन। [illegible]
[illegible] हरिवर्मन [illegible] वैशेषिक में [illegible]
हरिवर्मन के ग्रन्थ में [illegible] है (दे. ५२)। हरिवर्मन वैशेषिक [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कमलशील (बौद्ध)

कमलशील [illegible] शान्तरक्षित के शिष्य और प्रतिभाशाली [illegible] के रूप में प्रसिद्ध हैं। ये भी तिब्बत गये थे। शान्तरक्षित की मृत्यु के बाद (७६२) ये तिब्बत पहुँचे। ७४३ ई. में नालन्दा में विद्यमान थे, इसके बाद वे [illegible] तिब्बत गये। वे इस प्रकार २० वर्ष के लगभग रहे थे। वे प्रसिद्ध [illegible] के [illegible] थे और इन्होंने शान्तरक्षित के द्वारा प्रणीत [illegible] [illegible] [illegible]। इस प्रकार इनकी [illegible] [illegible] ई. [illegible] इनकी [illegible] [illegible] [illegible] हैं। कमलशील नैयायिकों के साथ [illegible] भी थे। इन्होंने [illegible] के मुख्य [illegible] और [illegible] [illegible] के भी [illegible] थे।

न्यायबिन्दु पर इनकी टीका भी उपलब्ध होती है। इनका नाम न्यायबिन्दुपूर्वपक्षसंक्षेप भी है। [illegible] [illegible] ई. के आसपास [illegible] [illegible] है। राहुल जी ने इनका समय ८०० ई. दिया है। इनका [illegible] [illegible] [illegible] ई. में हुआ। इनकी [illegible] के अनुसार १०५० ई. में हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कम्बलाश्वतर (लौकायत)

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ५३५ में उद्धृत।
संगीतालोक में मुक्तात्मन्य कविकण्ठाभरण ने तीन शैवाचार्यों के नाम में आर्हतों के रूप कम्बलाश्वतर को भी उद्धृत किया है।— "तत्त्वान्तरं सौवर्णादि केन रत्नशिवायतनागमशुभं भुज्युः। कायोद्भवं कम्बलाश्वतरस्य विषयस्तु कोऽयम्।" इस्लामिय [illegible] ने बुलेटिन आफ लन्दन युनिवर्सिटी नं. १, पृ. २ में आपके लोकायत मत के लेख में कौटुम्बकीय सार्जेंट कम्बल से इसको अभिन्न माना है। आजीवक शाकल्य के सिद्धान्त तत्त्वसंग्रह के लोकायत प्रकरण में वर्णित कम्बलाश्वतर आदि के मतों से मिलता है। इससे सब के नाम एक ही व्यक्ति के सूचक होते हैं।

इनका समय ५५०-५०० ई. पूर्व माना जा सकता है।
पृ. ५३३-३४ में उद्धृत सूत्र बृहस्पति के न होकर कम्बलाश्वतर के ही प्रतीत होते हैं। इस प्रसंग पर इन सूत्रों के दो व्याख्याताओं का भी उल्लेख है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कर्णकगोमी (बौद्ध)

कर्णकगोमी ने प्रमाणवार्तिक के स्वार्थानुमान परिच्छेद की ही व्याख्या की है। इसमें धर्मोत्तर की [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

कल्याणरक्षित (बौद्ध)

इनका समय राहुलजी ने ७०० ई. माना है। इनकी सर्वज्ञसिद्धिकारिका का तिब्बती अनुवाद ८२५ ई. में हुआ। इसके अतिरिक्त इनके अन्यापोहविचार, ईश्वरभंगकारिका, बाह्यार्थसिद्धि, श्रुतिपरीक्षा ये चार ग्रन्थ और उपलब्ध होते हैं। आचार्य (धर्मोत्तराचार्य) के कथन से ही कि यह धर्मोत्तर के गुरु थे।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

कुमारनाथ (युवराज) बौद्ध

(राजकुलपाद)

ज्ञानश्रीमित्र दिङ्नाग के ~~शिष्य~~ सहायक कुमारनाथ का युवराज का स्मरण करता है। रत्नकीर्ति इनको राजकुलपाद के नाम से संबोधित करते हैं। अशोक के साथ भी इनके सिद्धान्तों का भी संग्रह किया गया है। ये भी धर्मोत्तर के मत में मान्य हैं। तिब्बती प्रमाण के व्याख्याकार से दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय की रचना में सहायक रहे हैं।

रत्नकीर्तिनिबन्धावली पृ. ४८ में ये उद्धृत हैं। इनकी किसी वार्तिककार से पहले अध्याय की १.२.३ में (पृ. ४२८) में "कुमारनाथ पादैः -- राजकुलपादैः" उद्धरण इनका मिलता है ४.२.२८ (पृ. ४८१) में भी इसी प्रकार की स्थिति है। संभवतः ये किसी राजवंश के व्यक्ति थे।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुमारिल भट्ट (मीमांसक)

तत्त्वसंग्रह (अग्र. सं.) पृ. १२२, १२६, १३८, १४०, १४१, १५७, २२२, २२३, २२७, ३१५, ३६०, ३८६, ३८७, ४२१, ४२८, ४६३, ४७०, ४८८, ४८७, ४९०, ५१६, ५१७, ५१८, ५३८, ५७५, ६०१, ६११, ६१६, ६२२, ६२५, ७०३, ७०४, ८६१, ८६६, ९०१, ९३३, ९५४, ९६३, ९६४, १०२०, १०७७, १११० ।

कुमारिल और उद्योतकर के मत के खण्डन के रूप में ही प्रमुख रूप से इस ग्रन्थ की रचना की गयी, यह इन उद्धरणों से जाना जा सकता है। तिब्बती परम्परा इनका नाम कुमार लील देती है। इन्होंने शबरभाष्य पर श्लोकवार्तिक, तन्त्रवार्तिक और टुप्टीका की रचना की। इनके समय के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं हो सका है। डा. भण्डारकर द्वारा प्रस्तुत ७८८ ई. समय ठीक नहीं है। यह अनुचित भी है। इसके अनुसार कुमारिल का समय तत्त्वसंग्रह की रचना के ५० वर्ष बाद पड़ेगा। यह कैसे संभव है। ७०० ई. के बाद इनकी उपस्थिति तिब्बत में भार संभव न थी। तिब्बती परम्परा कुमारिल को धर्मकीर्ति का समकालीन मानती है। धर्मकीर्ति का समय ६०० - ६५० ई. स्वीकार किया है। कुमारिल का समय भी इसके आसपास ६२० - ६८० ई. मानना उचित होगा। कुमारिल मीमांसा श्लोकवार्तिक के टीकाकार कहते हैं कि श्लोकवार्तिक में धर्मकीर्ति का मत उपलब्ध होता है। भवभूति का उल्लेख तत्त्वसंग्रह में हुआ है, वे कुमारिल के प्रधान शिष्य थे। गौडवहो में भवभूति का उल्लेख है। वाक्पतिराज यशोवर्मन के समकालिक थे। यशोवर्मन आठवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुए थे। क्योंकि वे कुमारिल के वार्तिककार के समसामयिक थे। इससे भवभूति का समय ७२५ ई. माना जा सकता है। भवभूति और धर्मकीर्ति के समसामयिक कुमारिल का समय ६२० - ६८० ई. मानना उचित होगा। इस प्रकार भवभूति का समय ६५५ - ७२५ ई. ठहरेगा। कुमारिल ने धर्मकीर्ति के मत की आलोचना की है, जिनकी मृत्यु ६५० बाद हो चुकी थी।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुमारिल का समय आचार्य शंकराचार्य से पहले ईसवी सन का पूर्वार्ध। कुमारिल धर्मकीर्ति की मृत्यु के ३० वर्ष बाद मानना है। यदि इसके बाद इनका समय स्वीकार किया है तो उम्बेक के नाम से श्लोकवार्तिक व्याख्यायी का कुमारिल से पृथक् प्रकार का व्यक्तित्व सिद्ध नहीं होगा।

श्लोकवार्तिक-व्याख्या में कुमारिल के अन्यान्य ग्रन्थ बृहट्टीका के २२ श्लोक उद्धृत हैं। इनमें से कुछ श्लोक प्रकरण के साथ तत्त्वसंग्रह में भी उपलब्ध होते हैं। श्लोकवार्तिक को जहां पर अनुष्टुप् सम्पूर्ण कहा है, इसमें ३४०० श्लोक हैं। १४ श्लोक और भी मीमांसा के ग्रन्थ संग्रहीत हैं, जो कि तत्त्वसंग्रह में भी हैं। वे भी कुमारिल के अपने ग्रन्थ कहे हैं। कुमारिल रचित मध्यकालीन ग्रन्थ का आयाम-प्रमाण है। (द्रष्टव्य - मीमांसा श्लोकवार्तिक टीका-भूमिका संस्करण)

इन्होंने श्लोकवार्तिक टीका में मीमांसा में भी प्रामाण्यवाद का प्रतिपादन किया। इन्होंने टुप्टीका नाम के ग्रन्थ का प्रणयन किया है।

कुमारिल का समय डा. कुन्हन राजा ने ५५० ई. माना है अपने भारतीय दर्शन ग्रन्थ में (पृ. ४५) स्वीकार किया है।

कुमारिल भट्ट ने शाबरभाष्य पर तीन टीकाएं लिखी थीं बृहती और मध्यमटीका इसके अतिरिक्त श्लोकवार्तिक-तन्त्रवार्तिक-टुप्टीका। इनमें से बृहट्टीका और मध्यमटीका आज उपलब्ध नहीं है। शान्तरक्षित ने तत्त्वसंग्रह में इनका ... के साथ खण्डन किया है। (द्रष्टव्य बृहती भूमिका भाग, पृ. ८-९)

प्रभाकर के गुरु भी और समकालीन लेखक कुमारिल के ... की ... जाती है। इसीलिए कुमारिल प्रभाकर से प्राचीन हैं। यद्यपि प्रभाकर कुमारिल का नाम कहीं नहीं लेते, किन्तु यह निश्चित है कि कुमारिल ने अपने ग्रन्थों में कुमारिल का भी ... किन्तु प्रभाकर ने अपने ग्रन्थ के प्रसङ्ग में कहीं भी कुमारिल के ग्रन्थों को उद्धृत नहीं किया। किंवदन्ती का कहना है कि प्रभाकर कुमारिल के शिष्य थे। "तत्र तुनोक्तम्, अत्रापिनोक्तमिति द्विरुक्तम्" यह पंक्ति जो इस प्रसंग में प्रचलित है यह पंक्ति कहां की है, यह ज्ञात नहीं होता।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परम्परा भी कुमारिल का शिष्य के रूप में बताई गई है। ~~इसके कोई आधार नहीं~~। इसके आधार पर कुमारिल और प्रभाकर का गुरु-शिष्य भाव सिद्ध नहीं किया जा सकता। वह पूर्व-गद्य-पद्य की शैली में प्रभाकर के एक श्लोक उद्धृत किया है —

उभयोः कारिका वेत्ति नेतिनं वेत्ति प्रभाकरः।
भट्टनन्दपदं वेत्ति न किञ्चिदपि वेत्ति सः॥

इससे यह सिद्ध नहीं होता कि प्रभाकर कुमारिल का शिष्य था। एक प्रवाद प्रचलित है कि प्रभाकर ने कुमारिल की बृहट्टीका का खण्डन करने के लिये अपनी लघ्वी टीका लिखी। कुमारिल ने लघ्वी का खण्डन श्लोकवार्तिक में किया और प्रभाकर ने श्लोकवार्तिक का खण्डन बृहती में किया। इसके भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

मण्डन और भर्तृमित्र के सिद्धान्तों से असहमति और कुमारिल के ग्रन्थों में कहीं कहीं मिलता है, यह ठीक से ज्ञात नहीं होता। ये सब मत के स्वरूप के विषय में भर्तृमित्र के, अथवा यह व्याख्याता के प्रसंग में भवदास के मत की आलोचना करते हैं। श्लोकवार्तिक में भी कुमारिल भर्तृमित्र के मत की आलोचना करते हैं।

६२०-७०० ई. प्रकरणपंचिका भूमिका, पृ. २२
बृहती इंट्रोडक्शन. भाग २

बौद्ध नैयायिकों के आचार्यवर धर्मकीर्ति प्रभृति न्यायबिन्दु और उनके ग्रन्थों की आलोचना में प्रसिद्ध रहते हैं. कुमारिल और प्रभाकर का [illegible] का गो [illegible] नहीं है। उम्बेक ने अपने भाष्य के आरम्भ में भी ऐसा किया है। (टि. ४)

कुमारिल भट्टपाद के ग्रन्थ।

कुमारिल भट्ट ने बृहट्टीका, श्लोकवार्तिक और टुप्टीका ग्रन्थ लिखी। लघ्वी का खण्डन प्रभाकर ने बृहती में किया। बृहती के खण्डन के लिये कुमारिल ने श्लोकवार्तिक और तन्त्रवार्तिक बनाया। इनके खण्डन के लिये प्रभाकर ने लघ्वी टीका लिखी। (पूर्वमीमांसा भूमिका पृ. १०।
मद्रास जर्नल आफ ओरियण्टल रिसर्च, म. भा. III, पृ. ३८३-३८६

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

[illegible] बौद्धाचार्यों [illegible] अनेक वाक्यों में [illegible]
के प्र. ५ चन्द्र [illegible] (आदि) [illegible] की रचना उपलब्ध है। (इस पृ. ४
का [illegible] के [illegible] से कोई सम्बन्ध है ?) ।

श्लोकवार्तिक से धर्मकीर्ति उद्धृत है — a ५८९. ७५ श्लो. न्यायरत्नाकर;
b. २५०६. १३१ श्लो. तत्रैव; c ८३६. १२१ श्लो. तत्रैव, D १४४८.
३६ श्लो. तत्रैव; e ८१६६. १४७ श्लो. तात्पर्यप्रकाशिका, f ८१८६.
१५८ श्लो. तत्रैव; g ८१७६. १५७ श्लो. तत्रैव; h ८२२६. १६२ श्लो.
तत्रैव; i. ६. ८०१, ८०४, ८०५, ८०७, ८०८, ८१०; न्यायमंजरी
६. ७४, ७७, १०० ।

संविदोऽस्वप्रकाशत्वमन्यथाख्यातिसंश्रयौ ।
कर्मादिके कालविशेषतां प्रत्यक्षज्ञानगम्यता ॥
ध्वनेर्विभुत्वद्रव्यत्वे मनसोऽस्यैन्द्रियैभवे ।
भिन्नाभिन्नत्वमेकस्य समवायस्य नास्तिता ॥
[illegible] संयोगे नित्यत्वं तस्य चात्मनः ।
द्रव्यत्वं [illegible] केवलाभावं नित्यत्वं [illegible] ॥
अभावैकत्वं च शक्तेरनुमेयता ।
गुरुत्वमन्धकारस्य पुंसोऽयं [illegible] प्रमाणता ॥
[illegible] साधान्यं [illegible] जातयः ।
अन्वितामिधानं च वेदस्याकार्यमानता ॥
श्रुतेर्ध्वनिपरीति [illegible] प्रतियोगिनः ।
[illegible] ॥

तन्त्रवार्तिक व्याकरणाधिकरण में कुमारिल ने भर्तृहरि को उद्धृत किया था
[illegible] गुरु माने जाते हैं। [illegible] का
[illegible] है। [illegible] का समय (६७०-७४० ई) माना जाता है। [illegible]
कुमारिल का समय [illegible]
का [illegible] मानते हैं। [illegible] (पृ. ३३७-३३०)
तथा [illegible] (पृ. १२ अ) में [illegible] उद्धृत है

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुलभूषण (जैन)

हैमधातुपारायण (पृ. ३७३) में यह आचार्य उद्धृत है। "तथा निवादीत् वधूनाम्ने स्फटाटङ्ककेशादि। ... इत्यत्र गलनासोनेन कुलभूषणेन टीकाकृता"। इससे यह प्रतीत होता है कि स्फटायन के शब्दों के बृहन्न्यास का यह टीकाकार है। स्फटाटङ्क केशादि किसी आचार्य का नाम है पर उपलब्धि यह अन्वेषणीय है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

(भदन्त) घोषक

तत्त्वसंग्रह (प्रा.-सं.) पृ. ६१२ में उद्धृत है। संस्कृत में इसका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता, किंतु चीनी भाषा में इसका अभिधर्मामृतशास्त्र उपलब्ध है। वसुबन्धु ने इसके मत की भी समालोचना की है। इसका समय १५० ई. स्वीकारा गया है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चन्द्रगोमिन् (बौद्ध)

चन्द्रगोमी का ग्रन्थ चान्द्रव्याकरण तिब्बती में ८२० ई. में अनूदित हुआ था। यद्यपि इसके साथ इसकी किसी नहीं व्याकरण प्रसिद्ध वैयाकरण चन्द्रगोमी से भिन्न था और चन्द्रगोमी को जानने का कोई साधन नहीं था। वैयाकरण चन्द्रगोमी चन्द्रकीर्ति के समकालीन थे, जो कि धर्मकीर्ति (६०० ई.) के पूर्ववर्ती थे। इनका समय साधारणतया ५७५ ई. है। विद्याभूषण इनका समय ९२५ ई. देते हैं, जो ठीक नहीं है। (वाक्यपदीय की टीका (२।४८३-८४)) में पुण्यराज ने इनका और वसुरात के साथ चन्द्राचार्य का उल्लेख किया है वसुरात भर्तृहरि के गुरु थे। यह चन्द्राचार्य भी इन्हीं गुरु परम्परा के थे। यदि ऐसा हो तो इसके और वाक्यपदीयकार के भी समय निर्णय में एक से अधिक उपयोगी होगा है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चन्द्रानन्द (वैशेषिक)

चन्द्रानन्द विरचित प्राचीन वैशेषिक सूत्रवृत्ति का प्रकाशन गायकवाड़ सीरीज नं. १३६ के रूप में ओरियण्टल इंस्टीट्यूट बड़ौदा से सन १९६१ में हुआ है। इनके समय के सम्बन्ध में कुछ भी निश्चय नहीं होता है। वार्तिककार उद्योतकर को इन्होंने उद्धृत किया है। इसके बाद ही किसी समय इनका समय पड़ेगा। चन्द्रानन्द भी प्रशस्तपाद व्याख्याकारों का निर्देश नहीं करते हैं। ये सम्भवतः प्रशस्तपाद के अनन्तर प्रचलित हो चुके हैं।

चन्द्रानन्द का सूत्रपाठ अन्य सूत्रपाठों की अपेक्षा प्राचीन प्रतीत होता है। इसके सूत्र उद्योतकर और जयन्तभट्ट आदि के उद्धृत सूत्रों से मिलते हैं। चन्द्रानन्द का पाठ बहुत कुछ भट्टवादीन्द्र से भी मिलता है और शंकरमिश्र के पाठ से भिन्न है।

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी, भा. २, पृ. २००, ३३८ में भट्ट चन्द्रानन्द का एक श्लोक उद्धृत है जिसमें प्रतीत्य का विवेचन किया गया है। ये चन्द्रानन्द वैशेषिक वृत्तिकार से भिन्न हैं या अभिन्न यह विचारणीय है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

जयन्त भट्ट (नैयायिक)

इनके समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है। डा. विद्याभूषण वाचस्पति मिश्र को जयन्त से प्राचीन मानते हैं। इनके विपरीत म. म. पं. गोपीनाथ कविराज प्रभृति विद्वान वाचस्पति से जयन्त को प्राचीन मानते हैं। आनन्दवर्धन ठक्कुर की प्रत्यक्ष प्रकरण के व्याख्या पर न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका (१।१।५) में अनौपाधिक जयन्तभट्ट के मत को वाचस्पति मिश्र (न्यायमंजरी, पृ. १६०) उल्लेखित करते हैं, क्योंकि उदयनाचार्य ने तात्पर्यपरिशुद्धि में इसको कहा है।

जयन्त काश्मीर के शंकरवर्मा (८८५-९०२ ई.) के दरबार में थे यह बात जयन्त के आगमडम्बर से स्पष्ट है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जयराशि (चार्वाक)

जयराशी का तत्त्वोपप्लवसिंह लोकायत दर्शन का ग्रन्थ ओरियन्टल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा से प्रकाशित हुआ है। इसकी एक मात्र पाण्डुलिपि पाटन के जैन भंडारों में प्राप्त हुई थी। इसका लिपिकाल दिसम्बर १२९२ ई. है। हेमचन्द्रसूरि (१०८८–११७३ ई.) के अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका की मल्लिषेण कृत टीका स्याद्वाद मंजरी में १४ वें श्लोक की व्याख्या में तत्त्वोपप्लवसिंह उद्धृत है। इस ग्रन्थ की पूर्ति ११ अक्टूबर १२९२ ई. में हो चुकी है। इस प्रकार पूर्वकालवर्ती मल्लिषेण से दो सौ वर्ष पूर्व जयसिंह के बारे प्रद्युम्न परिचित था। चन्द्रप्रभसूरि ने अपने प्रभावक-चरित में मल्लवादी और उनके शिष्य आचार्य जिनभद्र के अनुसार शान्तिसूरि के द्वारा इसका खण्डन किया है। इसमें तत्त्वोपप्लव की प्रतियों का उद्धार किया गया था। चन्द्रप्रभ ने प्रभावकचरित १२७७ ई. को १२ वर्ष को पूरा किया। इस प्रकार उक्त काल के १२ वर्ष पूर्व तत्त्वो. की प्रतिलिपि सिद्ध होती है। इन प्रमाणों से यह प्रमाणित होता है कि ११ वीं. शताब्दी में इस ग्रन्थ का व्यापक उपयोग किया जाता था।

शान्तिसूरि के गुरु अभयदेवसूरि ने अपने प्रमाणव्याख्या में, सन्मतितर्क की टीका तत्त्वबोधविधायिनी में, जो कि वादमहार्णव के नाम से प्रसिद्ध है, तत्त्वोपप्लव को उद्धृत किया है, ऐसा प्रतीत होता है। पं. सुखलाल और बेचरदासजी संघवी द्वारा सम्पादित सन्मतितर्क, भा. ४, पृ. २६०–२९१ के फुटनोट देखिए। अभयदेवसूरि शान्तिसूरि के गुरु थे। शान्तिसूरि की मृत्यु १०४० ई. में हो चुकी थी। इससे यह सिद्ध है कि तत्त्वो. का गुजरात में ११–१२ शताब्दी में व्यापक प्रचार था। दक्षिण के दिगम्बर जैन ग्रन्थ इसका विरोध की ओर भी संकेत करते हैं।

दक्षिण के दिगम्बर जैनाचार्यों में प्रसिद्ध जैनाचार्य अकलङ्कदेव (७२०–७८० ई.) ने अनेक न्याय ग्रन्थों की रचना की। उनके पश्चात् में इसका नाम विद्यानन्द का आता है। इनके तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपराजितदत्त जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे। आनन्दवर्धन [illegible] [illegible] इसने [illegible] के [illegible] पर [illegible] लिखी। [illegible] और [illegible] के [illegible] को उद्धृत किया है (व. [illegible] भूमिका)।

[illegible] ने आनन्दवर्धन को उद्धृत किया है। इस आधार पर एस. के. [illegible] ने आनन्दवर्धन का समय नवीं शताब्दी के मध्य का निश्चित किया [illegible] के ग्रन्थ में [illegible], महाकवि, [illegible] और [illegible] का [illegible] उद्धृत है। इनमें से [illegible] और [illegible] को अपनी [illegible] का [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] है। [illegible] को [illegible] २००-२४० ई. के बीच का मानते हैं। इसी ग्रन्थ का [illegible] का [illegible] ने [illegible] को [illegible] का माना था। डा. [illegible] [illegible] को २०० ई. का मानते हैं। [illegible] के [illegible] ने [illegible] का समय ७ वीं ई. माना है। [illegible] और [illegible] के [illegible] को देखते हुए इस बात का [illegible] हैं कि [illegible] नवीं शताब्दी से पहले का ग्रन्थ है।

पर इस ग्रन्थ का उत्तर भाग है। पूर्व भाग को जानने के लिये देखना पड़ेगा कि इसमें कौन से ग्रन्थ तथा व्यक्ति उद्धृत हैं। इसमें सांख्य, मीमांसक, चार्वाक, वैशेषिक, नैयायिक, बौद्ध और जैन उद्धृत हैं। इसमें आत्मा का [illegible] खण्डन किया गया है। जो कि शंकरपूर्ववर्ती वेदान्ती की ओर इंगित करता है। यहां पर ईश्वर और प्रकृति की [illegible] है। "वाक्यपदाद् अर्थप्रतिपत्तिः" यह वैयाकरण सिद्धान्त भर्तृहरि की ओर इंगित करता है। इस ग्रन्थ में [illegible] [illegible] उपलब्ध होते हैं। उनमें से [illegible] [illegible] का [illegible] दूसरा [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] ग्रन्थ होगा।

इसमें अनेक ग्रन्थों के उद्धरण मिलते हैं। उनमें से कुछ उद्धरणों को कुछ [illegible] [illegible] हैं। जैसे कि जैमिनि के मीमांसासूत्र,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

शबर के मीमांसासूत्र-भाष्य, गौड़पाद के माण्डूक्य-भाष्य, ब्रह्मसूत्रभाष्य, कुमारिल का श्लोकवार्तिक तथा धर्मकीर्ति का प्रमाणवार्तिक आदि प्रमुख ग्रन्थ हैं। कुमारिल ने भी श्लोक यहां उद्धृत हैं (१.११६)। उनमें से एक श्लोकवार्तिक में उद्धृत है, इसका नहीं। परन्तु वाक्यपदीय के [illegible] में उद्धृत है। किन्तु मीमांसा ग्रन्थ का भी परिचय होना चाहिए। (पुण्यराज का परिचय देखिए)।

इससे इतना निश्चित होता है कि भर्तृहरि को कुमारिल भट्ट और धर्मकीर्ति के पहले भी इसका ज्ञान था। इस [illegible] का समय भर्तृहरि और [illegible] के बीच में किसी समय माना चाहिए। ५५०–८०० ई. के बीच में इसका समय होना है। इस ग्रन्थ में शंकर के [illegible] का कहीं उल्लेख नहीं है। इसलिए यह ग्रन्थ शंकर के पहले बन चुका था, ऐसा प्रतीत होता है। किन्तु शंकर के ग्रन्थों में इस ग्रन्थ का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसी प्रकार हरिभद्रसूरि के (७००–७७०) षड्दर्शनसमुच्चय तथा शास्त्रवार्तासमुच्चय में भी वाक्यपदीय का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि भर्तृहरि हरिभद्रसूरि तथा शंकर से [illegible] इसका [illegible] था। इस [illegible] ८०० ई. के बाद [illegible] है।

इस ग्रन्थ का सबसे प्रथम उल्लेख [illegible] और [illegible] के ग्रन्थों में मिलता है और जहां पर केवल [illegible] का भी उल्लेख है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस ग्रन्थ का [illegible] भी भट्ट कुमारिल, धर्मकीर्ति, [illegible], [illegible], [illegible] और शंकराचार्य को ज्ञात था। [illegible] कुमारिल के [illegible] भी [illegible] जैन आचार्य [illegible] के [illegible] भी [illegible] है, [illegible] नहीं था। [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस दर्शन के तात्त्विक [illegible] [illegible] [illegible] के बाद 'निम्बार्क
सम्प्रदाय" इस प्रकार आदर के साथ उसका इस ग्रन्थ में
प्रस्तुत किया जाता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

जितारि: (बौद्ध)

जितारि
इतिहास पर बौद्ध आचार्य का संकेत उद्धृत हैं।

[illegible] : [illegible] : पण्डित जितारिपादैः : [illegible] (पृ. २२)

पण्डित श्रीजितारिपादैः वेदाप्रामाण्यसिद्धिः (पृ. ५४)।

जितारि वरेन्द्री के ब्राह्मण थे और आचार्य दीपंकर, पण्डित दुर्वेकमिश्र आदि के गुरु थे। कदाचित् ये [illegible] उपाध्याय [illegible] थे, [illegible] विक्रमशिला विश्वविद्यालय के। जितारि [illegible] के [illegible] थे। [illegible] [illegible] के अनुवाद न कर [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] इनके अन्य ग्रन्थ हैं जातिनिराकृति, बालावतारतर्क, [illegible]। ये केवल तिब्बती अनुवाद में ही मिलते हैं। [illegible] [illegible] हेतुतत्त्वोपदेश [illegible] और [illegible] इन्हीं के ग्रन्थ माने जाते हैं। इनके वेदाप्रामाण्य के दो प्रकरण मूल और अनेकान्त प्रकरण में आते हैं। रत्नकीर्ति इनके वेदाप्रामाण्य का उल्लेख करते हैं। जितारि [illegible] तिब्बती अनुवाद के रूप में उपलब्ध हैं. इनमें का मूल [illegible] है।

इनके जातिनिराकृति का १०५० ई. में, बालावतार तर्क का १०२० ई. में और हेतुतत्त्वोपदेश का १०५० ई. में तिब्बती अनुवाद हुआ। इनका काल १००० ई. माना जाता है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

जयानन्त

जिन (बौद्ध)

प्रज्ञाकर का अनुकरण करने वाले बड़े आचार्य थे, किन्तु इन्हें आगम में सन्देह था। जिन नाम के आचार्य ने प्रज्ञाकर के मत का खण्डन का और उनके मार्ग पर अपना टीका लिखा। राहुल जी जिन के स्थान पर जयानन्त मानते हैं। जिन के [illegible] के [illegible] का स्वयं रचित [illegible] [illegible] राहुल जी ने १०५० ई. में [illegible] है। इनके प्रमाणवार्तिकालंकार का १०२० ई. में तिब्बती अनुवाद हुआ।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

जिनमित्र (बौद्ध)

ये न्यायबिन्दुपिण्डार्थ के लेखक थे। इनका समय लगभग ई॰ ८२५ ठीक है, किन्तु विद्याभूषण ने १०२५ ई॰ माना है। न्यायबिन्दुपिण्डार्थ का ८४० ई॰ में तिब्बती अनुवाद हुआ था, अतः राहुलजी के अनुसार (वादन्यायपरिशिष्ट, ८ प॰-१०) इनका समय विद्याभूषण सम्मत १०२५ ई॰ नहीं हो सकता।

राहुलजी ने वादन्याय के परिशिष्ट में इनका समय ८६२ ई॰ स्वीकार किया तथा इसके पृ॰ ५ के तिब्बती अनुवाद का समय ८४२ ई॰ दिया है पर तिब्बती अनुवाद समुचित नहीं होगा।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

जिनेन्द्रबुद्धि (बौद्ध)

हेतुबिन्दुटीकालोक में दुर्वेक मिश्र के द्वारा ईश्वरसेन के साथ पर उद्धृत हैं (पृ. ४०५)। इन्होंने दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय पर टीका विशालामलवती लिखी थी। इनका समय राहुलजी ने ७०० ई. निर्धारित किया है। १२०० ई में इनके ग्रन्थ का तिब्बती अनुवाद हुआ।

[illegible] के भाष्य में उदयन ने कुछ बौद्ध दार्शनिकों का उल्लेख किया है। कुछ नाम अपरिचित हैं जैसे कि शाक्य, वामनार्य और मुकुली। जिनेन्द्र और ज्ञानेन्द्र भी यहां उद्धृत हैं। संभव है वे बौद्ध न हों। टीकाकार नारायण ने जिनेन्द्र को जिनेन्द्रबुद्धि से अभिन्न माना है। जिनेन्द्रबुद्धि ही काशिका की विवरणपञ्जिका (न्यास) के कर्ता हैं। इस ग्रन्थ के अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि जिनेन्द्र का समय ८००-८५० ई. के आसपास है। जैकोबि ने ६५० ई. के आसपास पूरी काशिका वृत्ति लिखी थी। युधिष्ठिर मीमांसक ने ७०० ई. के आसपास [illegible] स्वीकार किया है। यही अधिक संभावना है। इस पूरी काशिका पर पंजिका लिखने वाला न्यासकार जिनेन्द्र ८०० ई. के पहले का रहा होगा, क्योंकि इसका [illegible] पूर्ववर्ती टीका में का पर उल्लेख करता है। इन्हीं जिनेन्द्रबुद्धि ने दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय पर विशालामलवती टीका लिखी। विद्याभूषण इनका समय ७२५ ई. के आसपास रखते हैं। इस समय तक [illegible] काशिका की इतनी और [illegible] का लाभ को दुर्वेक मिश्र के उद्धरण से प्रतीत होता है कि अर्चट (धर्माकरदत्त) जिनेन्द्र का ईश्वरसेन और दिङ्नाग के साथ सम्बन्ध जोड़ते हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि धर्माकरदत्त (अर्चट) का समय भी ८०० ई. के पहले नहीं रखा जा सकता।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जैमिनि (मीमांसक)

मीमांसासूत्रों के रचयिता जैमिनि हैं। इसमें १२ अध्याय हैं। कुछ लोगों के मत से यह षोडश अध्याय का ग्रन्थ है वे ४ अध्याय वाले संकर्षकाण्ड को भी इसी का अंग मानते हैं। अन्य मत में संकर्षकाण्ड काशकृत्स्न की कृति है। १२ अध्याय के ग्रन्थ में अध्याय, पाद और अधिकरण का एक सुविचारित आनुपूर्व्य है। यह आनुपूर्व्य संकर्षकाण्ड में नहीं मिलता। तो भी जैमिनि ने इसको परिशिष्ट के रूप में रचा है, ऐसा प्रतीत होता है। इसमें उन विषयों की चर्चा की गयी है जो कि जैमिनि सूत्रों में उचित स्थान पर वर्णित नहीं हुए। संकर्षकाण्ड को देवताकाण्ड भी कहते हैं; क्योंकि इसमें प्रायः देवता विषयक विचार किये गये हैं। आज मीमांसा के १२ अध्याय का ही अध्ययन अध्यापन प्रचलित है। संकर्षकाण्ड पर कोई भाष्य न टीका उपलब्ध नहीं है। माधवाचार्य ने इसपर संकर्षकाण्ड-चन्द्रिका लिखी थी यह कहा गया-

आरभ्यते षोडशाध्यायी सूत्रिता या धर्ममीमांसकैः ।
संकर्षस्य चतुर्भिश्चाध्यायैर्युक्ता कथ्यते षोडशाध्यायी ।

संकर्षकाण्ड १२ लक्षणी मीमांसा का ही भाग है इसको भास्कराचार्य रामानुज और वेदान्तदेशिक, किसी पुरानी वृत्ति के आधार पर बोधायन ऐसा मानते हैं। रामानुज ने भगवान् नाथमुनि सम्पूर्ण मीमांसा के तीन भेद करते हैं — १ कर्ममीमांसा, २. देवमीमांसा और ३ ब्रह्ममीमांसा। वेदान्तदेशिक इसका विवेचन नहीं करते। वे कहते हैं कि कहीं ग्रन्थ में जैमिनि रचित षोडशाध्यायी की व्याख्या की गयी है। शबरस्वामी का यह उक्ति कि संकर्षकाण्ड काशकृत्स्न की कृति है, उचित नहीं है (शास्त्र. भा. सू. १४)।

जैमिनि और बादरायण सूत्रों पर तीन वृत्तियों के उल्लेख प्राप्त होते हैं— १. बोधायनवृत्ति, २. उपवर्षवृत्ति और ३ भव-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

वनस्पतियों। इतना प्राचीन होते हुए भी पूर्व और उत्तर मीमांसक और इतरदर्शन-
कारों ने स्फोट का खण्डन किया था (?)। इस प्रकार परम्परा से इस सिद्धान्त
पर सदा आक्षेप रहे। वैयाकरण मात्र पतञ्जलि इसका भी समर्थन करते रहे,
यहाँ इस प्रसंग पर थोड़ा सा प्रकाश डालते समय ग्रन्थों का प्रारम्भ करते हैं।

प्रपञ्चहृदय (पृ. 30) में वर्णित है कि मीमांसासूत्रों पर बौधायन
ने कृतकोटि नाम के भाष्य की रचना की। इसके पश्चात् देवस्वामी उपवर्ष
ने संक्षिप्त भाष्य बनाया। यह भी दुर्लभ था, अतः भवदास आदि ने
इसे सुगम करने को [illegible] मीमांसासूत्र पर अपना भाष्य
बनाया। इसी प्रकार शबरस्वामी ने भी मीमांसासूत्रों पर अपना भाष्य
किया। वार्तिककार ने "वृत्त्यन्तरेषु केषांचिल्लङ्घनीयानि कानिचित् इत्यादि"
इत्यादि वचनों से सूचित कर इसका विस्तार किया भी। वैयाकरण भाष्य
को आधार कर पार्थसारथी ने 12 अध्याय पर अपना भाष्य बनाया।

भर्तृमित्र आदि के मीमांसा में शास्त्रान्तर से बौद्धमत
संकलन का प्रतिपादन प्रारंभ कर दिया था। पर कुमारिल भट्ट ने
शबरभाष्य पर अपने श्लोकवार्तिक आदि ग्रन्थों का निर्माण किया।

जैमिनीसूत्रों में ये प्राचीन आचार्य उद्धृत हैं — आत्रेय,
ऐतिशायन, लाबुकायन, कार्ष्णाजिनि, बादरि, बादरायण, कामुका-
यन, आश्मरथ्य, आलेखन और जैमिनि। जैमिनिसूत्रों के रच-
यिता से भिन्न जैमिनि पूर्वपक्ष में उद्धृत है। इन सूत्रों का भाष्य
भाष्यकार आदि की बौधायन, भवदास, भर्तृमित्र, हरिकर, शबरस्वामी,
कुमारिल की प्रमुख प्रख्याति है, इसके उपवर्ष, पार्थसारथी, कुमारिल
भट्ट, मण्डनमिश्र, प्रभाकरमिश्र आदि भी हैं।

जैमिनि (B.C. 400) प्रकरणपञ्चिकाभूमिका, पृ. 22

"[illegible]" (10।4।29)

शबरभाष्य के इस वाक्य से स्फोटवाद पर भी शबर स्वामी का समर्थन
प्रतीत होता है, उस समय भी स्फोटवाद को व्याकरण स्वीकार करता था।

पतञ्जलि के समय में (150 बी. सी.) और भर्तृहरि के समय में

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जैमिनी-परिचय

मीमांसा शास्त्र का पूर्ण विकास हो चुका था। जैमिनि ने अपने सूत्रों में अनेक पूर्वाचार्यों का उल्लेख किया है। इनमें भी इस प्रकार बादरायण [illegible] सिद्ध होती है। मीमांसासूत्रों का समय ३०० बी. सी. के आसपास है। ब्राह्मणों में इसका कोई प्रमाण उद्धरण नहीं मिलता। किन्तु उनके टीकाकारों ने शब्द के प्रसंग में स्फोटवादियों का उल्लेख किया है। शब्दों के प्रसंग में [illegible] और [illegible] आदि का [illegible] मीमांसा में [illegible] है। मीमांसासूत्रों में स्मृति का प्रामाण्य, आचार, कल्पसूत्र और व्याकरण की चर्चा है। इस बात से ये सूत्र पाणिनि के बाद के, ऐसा प्रतीत होता है। जैमिनि और बादरायण सूत्रों का सम्बन्ध स्पष्ट है। दोनों सूत्रों में एक दूसरे के नाम उद्धृत हैं। जैमिनि प्रायः बादरायण के मत से अपना विरोध रखते हैं। इससे सिद्ध होता है बादरायण जैमिनि के परवर्ती नहीं रहते। क्योंकि [illegible] होता हो तो जैमिनि ने अपने [illegible] सूत्रों [illegible] था। इसमें प्रसंग के जो सूत्र आते हैं, वो भी बादरायण ने के हैं।

सिद्धो व्याकरणस्य कर्तरि हरते प्राणान् प्रियान् पाणिनेः
मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्।

पञ्चतन्त्र ग्रन्थ में जैमिनि पागल हाथी के द्वारा मारे गये हैं। मीमांसा शास्त्रों के अनेक आचार्यों में जैमिनि प्रसिद्ध आचार्य थे। भागवतपुराण में बताया गया है कि भगवान व्यास ने वेदों के प्रचारार्थ कई शिष्य जैमिनि को पढ़ाया। वे उनके चार शिष्यों में से एक थे। महाभारत में भी (१२।३१०।२४) जैमिनि को कृष्ण द्वैपायन और गुरु व्यास बताया गया है। [illegible] में [illegible], वे [illegible] आदि पूर्वाचार्यों के साथ जैमिनि का नाम भी आता है। पूर्व मीमांसा का अध्ययन: १२ अध्यायों का [illegible] है। उसमें [illegible] [illegible] संकर्षकाण्ड के नाम से [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] एक प्रकार से [illegible], [illegible] [illegible] १२ अध्यायों [illegible] [illegible] [illegible] संकर्षकाण्ड [illegible] [illegible] की प्रसिद्धि थी। संकर्षकाण्ड भी [illegible] है, किन्तु बादरायण ने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्ञानपीठ संस्करण में उसका प्रकाशकीय था और उसकी, मधुसूदन, देवराज, राजनृत्यकी, [illegible] और [illegible] ने इसकी व्याख्या की थी [illegible] ने (१२.२११) में [illegible] का [illegible] करते हैं। [illegible] भी इस पर [illegible], [illegible] प्रमाणित [illegible] था।

तत्त्ववार्तिक [1.3.2.(४)] के इस [illegible] भी [illegible] [illegible] पृ. ५ भी [illegible] है। [illegible] के [illegible] और [illegible] भी [illegible] है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ज्ञानश्रीमित्र (बौद्ध)

इनकी निबन्धावली का प्रकाशन का.जा. रिसर्च इं. पटना से सन् १९५९ में हुआ था। इसका सम्पादन श्री अनन्तलाल ठाकुर ने किया। बौद्ध दर्शन में दो ज्ञानश्री प्रसिद्ध हैं एक ज्ञानश्री भद्र प्रमाणवार्तिकालङ्कारटीका के रचयिता कश्मीरी पण्डित हैं। दूसरे दूसरे हैं ज्ञानश्रीमित्र बौद्ध। ये ही इस निबन्धावली के कर्ता हैं। ज्ञानश्रीमित्र विक्रमशील महाविहार के सदस्य थे। इनका समय ल० ९८०-१०२० ई. में बौद्ध तर्क अधिकार ने की थी। इनका अध्यापन काल यहाँ गौरवपूर्ण आचार्यपद रहा। यहाँ पर ये प्राड्विवेक सम्प्रदाय माने जाते हैं। बहु बार पंडित और दर्शन पण्डित। ज्ञानश्रीमित्र प्रधान पण्डितों में से एक थे। ये बाद में नालन्दा होगये थे और इनके शिष्य रत्नकीर्ति थे। शिष्य रत्नकीर्ति ने ज्ञानश्री मत के अनेक सिद्धान्त ग्रहण किये हैं। इनका सम्प्रदाय के सिद्धान्तों में विशेष योगदान था। अतीश दीपंकर श्रीज्ञान भी विक्रमशील के संघ में ये दीक्षित हुये थे। ये १०४२ ई. में तिब्बत गये थे। ज्ञानश्रीमित्र नव के समकालीन थे। ज्ञानश्रीमित्र ने धर्मकीर्ति के मत का प्रतिपादन किया है। ~~[illegible]~~ धर्मकीर्ति का समय ७ ५० ई. के आसपास माना जाता है। ज्ञानश्रीमित्र और इनके शिष्य रत्नकीर्ति उदयन के द्वारा आलोचित हैं। धर्मकीर्ति और उदयन के बाद के बीच में ज्ञानश्रीमित्र और रत्नकीर्ति रहे। इनका प्रमुख उद्देश्य था वाचस्पति का खण्डन करना था। ज्ञानश्रीमित्र न्यायदृष्टि के सम्पूर्ण अधिकार के रक्षक थे। ये सम्प्रदाय में योगाचार की परम्परा से योगाचार विज्ञानवाद मत के अनुयायी थे।

रत्नकीर्ति ने [इनकी प्रशंसा] ज्ञानश्रीमित्र का समय १०५२ ई. में स्वीकारा है। इनके ग्रन्थ कार्यकारणभावसिद्धि का तिब्बती अनुवाद १०५० ई. में हुआ था। प्रमाणवार्तिक की भूमिका में इनका समय १०२५ ई. स्वीकार किया है अनुवाद की तिथि को देखते हुए यही समय उचित प्रतीत होता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजतरंगिणी में कल्हण ने अनेक स्थानों पर शारदातीर्थ के मठ का उल्लेख किया है (८.२४८०, २४९२-३, ३१०७, ३३५६, ३३६४, ३७१, ४३६, ४५३, ४६४-५, ४८०-८०, ८४१)। [illegible] में शारदा की ओर डॉ. स्टेन द्वारा [illegible] (राजतरंगिणी इण्ड हिस्ट्री,) BRS. बुद्धप्रकाश, पृ. १२६-३२)। ऐसा प्रतीत होता है कि [illegible] स्थान के ऊपर शारदा का मन्दिर था, किन्तु [illegible] स्थान के ऊपर [illegible] थी। [illegible] जर्नल, १८७३, पृ. २१ ~~[illegible]~~ [illegible] १०३२ ई. में हुई थी। इसके बाद [illegible] है। [illegible] (८८२-१०५५ ई.) के [illegible] में [illegible]। शारदा [illegible] में [illegible] है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भट्ट
वाराणसी (बौद्ध)

वाराणसी के [illegible] के थे [illegible] हैं । इन्होंने धर्मोत्तरप्रदीप लिखा था [illegible] [illegible] के टीकाकार हैं और वे [illegible] के [illegible] इनका नाम राहुल जी [illegible] देते हैं और इनका समय १०५६ ई. देते हैं । [illegible] [illegible] होता । [illegible] दोनों के [illegible] में [illegible] है ।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

तोसलः (नैयायिक)

भासर्वज्ञ ने न्यायभूषण में पृ. २७७-२७८ में दो बार इनका उल्लेख किया है। वाचस्पतिमिश्र के प्रसंग में इनका मत उपस्थापित हुआ है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

त्रिलोचन (नैयायिक)

ये वाचस्पतिमिश्र के गुरु थे। इनकी न्यायभाष्य टीका का उल्लेख अर्थोत्तरप्रदीपकार दुर्वेकमिश्र करते हैं — "त्रिलोचन: गुरुन्नीतमार्गानुगमनोन्मुखः" (पृ. १०३-१०४) "त्रिलोचनाचार्य न्यायप्रकीर्णके आह" (पृ. १३) ज्ञानश्री के इस उद्धरण से इनका न्यायप्रकीर्णक ग्रन्थ था। इसी प्रकार "गुरुरपि ... त्रिलोचनगुरुरप्याह" (वही, पृ. ३८) इस कथन से इनकी [illegible] और [illegible] को इनके ग्रन्थ थे। रत्नकीर्ति भी त्रिलोचन को उद्धृत करते हैं। ~~कर्णकगोमि भी इनके न्यायप्रकीर्णक को उद्धृत करते हैं।~~

श्री नैयायिक त्रिलोचन एज ए टीचर ऑफ वाचस्पति, इण्डियन कल्चर XIV, नं. १, पृ. २६

दी ज्ञानश्री एण्ड गुरु त्रिलोचन JBRS, VOL XLI, पृ. २०७

दी विवरणपंजिका एण्ड [illegible], बड़ौदा जर्नल, VOL IV, पृ. २४०

त्रिलोचन ने भी न्यायवार्तिक की टीका की थी। यह ग्रन्थ मंजरी के साथ ही प्रसिद्ध है। बाद में रत्नकीर्ति भी इनके न्यायप्रकीर्णक को उद्धृत करते हैं। डा. विद्याभूषण त्रिलोचन के दो ग्रन्थ मानते हैं, जो ठीक नहीं है।

दुर्वेकमिश्र अर्थोत्तरप्रदीप में त्रिलोचन को ही उद्धृत करते हैं, वाचस्पति को नहीं।

वर्धमान और वाचस्पति के अपने कथन के अनुसार भी त्रिलोचन वाचस्पति के विद्यागुरु थे जो वार्तिक की परम्परा के उन्नायक थे। कई बौद्ध ग्रन्थों की सूचना मिलती है। ज्ञानश्री मित्र के [illegible] शंकर, न्यायभूषण, त्रिलोचन और वाचस्पति में से ये अन्यतम हैं। [illegible] त्रिलोचन के पहले न्यायभूषण का उल्लेख है, किन्तु [illegible] के [illegible] से ऐसा मालूम होता है कि त्रिलोचन वाचस्पति से पहले हो चुके थे (हिस्ट्री ऑफ [illegible] इन मिथिला, पृ. १८)। रत्नकीर्ति त्रिलोचन के न्यायप्रकीर्णक को उद्धृत करते हैं। अर्थोत्तरप्रदीप के त्रिलोचन की न्यायभाष्यटीका का अंश उद्धृत है। कार्णकगोमि [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से न्यायोमत की कर्णाटक विद्वानों का प्रसंग उद्धृत नहीं। यह केवल एक धारणा है। अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख किया गया है। किन्तु की व्याख्या टीका का नाम भी न्यायमंजरी था। व्याख्यान का न्यायकणिका में भी वाचस्पति उल्लेख है। आनन्द ने इसी मंजरी को उद्धृत किया है, जयन्त की न्यायमंजरी को नहीं। इस विषय में डा. जोशी प्रमाण हैं। जयन्त को उक्त बौद्ध विद्वानों ने भी उद्धृत नहीं किया है। जयन्त पूर्व भारत में अपरिचित रहे थे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दानशील (बौद्ध)

इनका समय १२०० ई. माना जाता है। इनका एक ग्रन्थ पुस्तकपाठोपायमिति नाम से प्रसिद्ध है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

दिङ्नाग (बौद्ध)

तत्त्वसंग्रह, [illegible] सीरीज़ संस्करण में अनेक स्थलों पर उद्धृत है।

बड़ोदा संस्करण में इनका समय 345-425 ई. दिया है।

प्रमाणवार्तिक भाष्य में राहुल सांकृत्यायन इनका समय 425 ई. देते हैं।

इन्होंने अक्षपाद और वात्स्यायन के मत का खण्डन किया है। इनका ग्रन्थ न्यायप्रवेश गायकवाड़ सीरीज में छप चुका है। तिब्बती प्रमाणों के आधार पर ये कांची के पास के सिंहवक्त्र ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। पहले ये हीनयानी वात्सीपुत्रीय ~~[illegible]~~ नागदत्त के शिष्य थे। बाद में इन्होंने वसुबन्धु का शिष्यत्व स्वीकार ~~किया~~। कर महायान को अंगीकृत किया। ये नालन्दा में शास्त्रार्थ हेतु बुलाये गये थे। तर्कपुंगव इनकी उपाधि थी। इनके ग्रन्थों का परमार्थ ने (498-569) चीनी भाषा में अनुवाद किया। न्यायप्रवेश के अतिरिक्त इनके ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं —

1. प्रमाणसमुच्चय
2. हेतुचक्र डमरु (कर्णन)
3. प्रमाणसमुच्चयवृत्ति
4. आलम्बनपरीक्षा
5. आलम्बनपरीक्षावृत्ति
6. त्रैकाल्यपरीक्षा
7. न्यायद्वार
8. न्यायमुख ~~[illegible]~~

धर्मकीर्ति का प्रमाणवार्तिक प्रमाणसमुच्चय के ही ऊपर है।

द्रष्टव्य — श्री दिङ्नाग बुद्धिस्ट टैक्स्ट ऑन लॉजिक, बड़ोदा 1930

इन्होंने जीवन का आरम्भिक [illegible] में [illegible] और बाद में [illegible] के जंगल में एकान्त में [illegible] हुए। दिङ्नाग [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

न्यायवाक्य के अवयव गिने जाते हैं, इससे पहले कुछ प्रकार वाक्य के चार कोई प्रश्न नहीं थे। परन्तु प्रशस्तपाद, वात्स्यायन, उद्योतकर, और वाचस्पति न्यायसूत्र, दिङ्नागपूर्ववर्ती की भाँति पंच-अवयव न्यायवाक्य पर जोर देते थे। न्यायसूत्र के काल से बराबर ही प्रयोग होता आ रहा था यही नहीं कहा जा सकता।

दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय के तिब्बती में १०५० और १०८० ई. में दो अनुवाद हुए। निबन्धप्रदीप का ११०० ई. न्यायप्रवेश के ११०० और १२५० ई. में, हेतुचक्रडमरु का ८वीं ई. में तिब्बती अनुवाद हुआ।

तत्त्वसंग्रहपञ्जिका (पृ. ५१४-५१५) में उद्धृत वचनों से ज्ञात होता है कि वाचस्पति और उद्योतकर दिङ्नाग के ग्रन्थ पढ़े, जहाँ कि वे दोनों न्यायवार्तिक उद्धरण दिङ्नाग के ग्रन्थों का उपयोग करते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दुर्वेक मिश्र (बौद्ध)

(अ.पृ.६८८)

ये धर्मकीर्ति के ग्रन्थ हेतुबिन्दु की टीका के ऊपर आलोक के लेखक हैं। इनका ग्रन्थ बड़ोदा से प्रकाशित हुआ है। इनके विवरणों से पता होता है कि ये विक्रमशील एवं जगद्दलालय के आचार्य जितारि के शिष्य थे। ये एक गृहीत ब्राह्मण थे। आलोक में इन्होंने अपने पाँच ग्रन्थों का उल्लेख किया है —

1. धर्मोत्तरप्रदीप (न्यायबिन्दुटीकाटीका) मुद्रित है।
2. [illegible]विचार (पृ. ~~[illegible]~~, ३३८)
3. विशेषाख्यान (पृ. ३४०, ३६५, ३८०, ३८३)
4. क्षणभङ्गसिद्धि (पृ. ३८०, ३८२)।
5. चतुःशती (पृ.३८०, ३८२)

ये नैयायिक ब्राह्मण प्रतीत होते हैं। इनका समय १० वीं शताब्दी का अन्तिम और ११ वीं शताब्दी का आरंभ है, क्योंकि ये जितारि के शिष्य थे जो कि दीपंकर श्रीज्ञान के और रत्नाकर के गुरु थे जो कि १० वीं शताब्दी के अन्त के होने माने जाते हैं। (पृ.१८३)

दुर्वेक धर्मोत्तरप्रदीप में [illegible] का उद्धरण करता है, वाचस्पति को नहीं।

इसी प्रकार यह धर्मोत्तरप्रदीप (पृ.१२) और हेतुबिन्दुटीकालोक (पृ.३९२) में [illegible] और भाष्यकार का उद्धरण करता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

देवेन्द्रबुद्धि ([illegible] बौद्ध)

देवेन्द्रबुद्धि धर्मकीर्ति का प्रमुख शिष्य था। ये प्रमाणवार्तिक पंजिका के रचयिता थे जो धर्मकीर्ति के शब्द प्रमाण व्याख्याकार हैं। इन्होंने प्रमाणवार्तिक की व्याख्या दो बार लिखी, किन्तु धर्मकीर्ति ने उसको रद कर दिया। तीसरी बार [illegible] को किसी प्रकार स्वीकार किया। धर्मकीर्ति का यह [illegible] में उपलब्ध होता है। [illegible] के आधार पर [illegible] प्रमाणवार्तिक की [illegible] में लिखा गया था। [illegible] धर्मकीर्ति के शब्दप्रमाण व्याख्याकारों में [illegible] शाक्यबुद्धि, प्रज्ञाबुद्धि आदि हैं। इन्होंने [illegible] लिखकर इसी प्रकार की रचनाएं लिखीं।

राहुल जी इनका नाम देवेन्द्रमति देते हैं। इनका समय ६५० ई. माना है। इनके प्रमाणवार्तिकपंजिका का तिब्बती अनुवाद १०५० ई. में हुआ। विद्याभूषण इनका नाम देवेन्द्रबोधि देते हैं।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धर्मकीर्ति (बौद्ध)

इनका समय ६००-६५० प्रायः सर्वसंमति से निश्चित है। तिब्बती प्रमाणों के आधार पर ये भी दाक्षिणात्य (त्रिमलय) ब्राह्मण थे। बाद में बौद्ध हुए। धर्मपाल के समय में ये नालन्दा आये। तिब्बती प्रमाणों के आधार पर ये कुमारिल के भतीजे या भानजे थे। ये कुमारिल के समसामयिक माने जाते हैं। इनको उद्योतकर का भी समसामयिक कहा जाता है, किन्तु बाण ने वासवदत्ता का और वासवदत्ता के कर्ता कवि सुबन्धु ने उद्योतकर का उल्लेख किया है। इस लिये उद्योतकर इनसे प्राचीन ठहरते हैं। भर्तृहरि भी प्रायः इनके समसामयिक ही माने जाते हैं। इनके ये ग्रन्थ उपलब्ध हैं —

१. प्रमाणवार्तिककारिका
२. प्रमाणवार्तिकवृत्ति
३. प्रमाणविनिश्चय
४. न्यायबिन्दु
५. हेतुबिन्दुविवरण
६. तर्कन्याय अथवा वादन्याय
७. सन्तानान्तरसिद्धि
८. सम्बन्धपरीक्षा
९. सम्बन्धपरीक्षावृत्ति

प्रमाणवार्तिकभाष्य की अंग्रेजी भूमिका (पृ. VII) में लिखा है कि इन्होंने भर्तृहरि और कुमारिल के मत की आलोचना की है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१. प्रमाणवार्तिक-परम्परा

प्रमाणसमुच्चय दिङ्नाग (४२५ ई.)
प्रमाणवार्तिक (१४५४) धर्मकीर्ति (६०० ई.)
प्रमाणवार्तिकवृत्ति (२०००) मनोरथनन्दी
" (३५००) धर्मकीर्ति
" वृत्तिटीका (१००००) कर्णकगोमी (८०० ई.)? (६००)
" पञ्जिका (२७४२) देवेन्द्रबुद्धि (६५०)
" टीका (१७०४६) शाक्यबुद्धि (६७५)
" टीका (७५५२) रविगुप्त (७२५)
" " (७५७८) शंकरानन्द (८००)
" भाष्य (१६२७६) प्रज्ञाकरगुप्त (७००)
" भाष्यटीका (२६५५२) यमारि (७५०)
" भाष्यटीका (१८१४८) जयानन्द (७५०)

व्याख्यापरम्परा

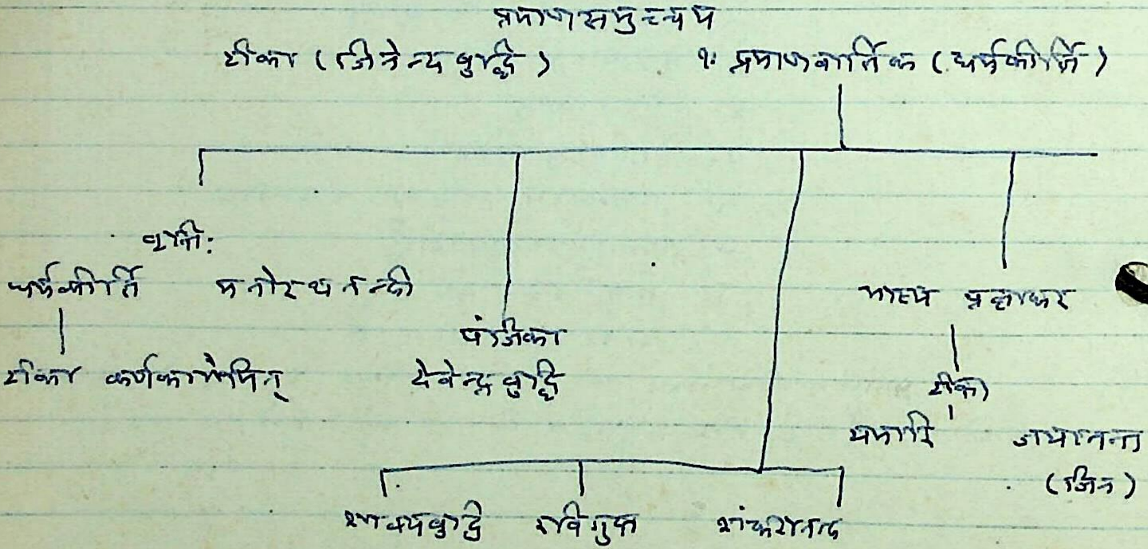

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Bu-ston : हिस्ट्री आफ बुद्धिज्म

तिब्बती परम्पराओं के आधार पर ही धर्मकीर्ति के बारे में कुछ जानकारी होती है। इसमें ओबरमिलर द्वारा अनूदित [illegible] प्रमुख है, और तारनाथ को बुद्धिज्म [illegible] भाग 1, पृ. 34-35 में [illegible] आधार पर [illegible] है। डा. सतीशचन्द्र विद्याभूषण ने हिस्ट्री आफ इण्डियन लॉजिक (पृ. 303-304) में [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] है। डा. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुई।

विद्याभूषण इसका समय 635-650 ई. देते हैं। राहुल जी वादन्याय की भूमिका में इसका समय 625 ई. देते हैं। इसकी परम्परा [illegible] रही है, किन्तु धर्मकीर्ति का [illegible] [illegible] की भूमिका में डा. महेन्द्रकुमार जैन (पृ. 12-23) के अनुसार धर्मकीर्ति का समय 620-690 ई. उचित है। इनके ग्रन्थ में ~~धर्मकीर्ति के ग्रन्थ [illegible]~~ कुमारिल, उद्योतकर, ईश्वरसेन और प्रभाकर ये सब धर्मकीर्ति के [illegible] [illegible] हैं, [illegible] [illegible] हैं। क्योंकि धर्मकीर्ति ने हेतुबिन्दु में ईश्वरसेन की [illegible] [illegible] [illegible] की आलोचना की है। [illegible] कुमारिल आदि के ग्रन्थ में धर्मकीर्ति की आलोचना उपलब्ध नहीं होती।

धर्मकीर्ति के अन्य ग्रन्थों का टीका विवरण इस प्रकार है —

2. प्रमाणविनिश्चय — टीका धर्मोत्तर, टीका ज्ञानश्रीभद्र
3. न्यायबिन्दु — टीका धर्मोत्तर, धर्मोत्तरप्रदीप दुर्वेकमिश्र, धर्मोत्तरप्रदीपटिप्पण मल्लवादी के नाम प्रकाशित है तीन अन्य ग्रन्थ टीका विनीतदेव, कमलशील, जिनमित्र।
4. हेतुबिन्दु — टीका (विवरण) अर्चट (धर्माकरदत्त), आलोक दुर्वेकमिश्र (प्रकाशित है) टीका-विनीतदेव।
5. सम्बन्धपरीक्षा — वृत्ति धर्मकीर्ति, टीका विनीतदेव, टीका शंकरानन्द।
6. वादन्याय — टीका विनीतदेव, शान्तरक्षित (प्रकाशित)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दुर्वेकमिश्र [illegible]

८. ~~[illegible]~~ — टीका [illegible]

धर्मोत्तरप्रदीप से ज्ञात होता है कि न्यायबिन्दु पर शान्तभद्र की भी व्याख्या थी। (पृ. ४)

धर्मकीर्ति ने ईश्वरसेन की ही नहीं, स्वयं दिङ्नाग की भी आलोचना की है। धर्मकीर्ति के ग्रन्थों के पढ़ने के बाद दिङ्नाग के ग्रन्थों का अध्ययन बन्द हो गया। धर्मकीर्ति के तीन प्रकार के व्याख्याकार — शब्दप्रधान देवेन्द्रबुद्धि आदि, तत्त्वप्रधान धर्मोत्तर आदि, एवं धर्मप्रधान प्रज्ञाकरगुप्त के नाम से भी प्रसिद्ध थे। [illegible] ने भी धर्मोत्तर [illegible] की टीका पर टीका लिखी जो अब उपलब्ध नहीं है (न्यायबिन्दुटीका पृ. २३३) इसका नाम [illegible] था। [illegible] ने भी धर्मोत्तर कृत टीका पर टीका लिखी। इसी परम्परा में [illegible] ने [illegible] प्रमाणवार्तिक पर [illegible] लिखा [illegible]। [illegible] की [illegible] परम्परा [illegible] की [illegible] होती थी। [illegible] प्रज्ञाकरगुप्त [illegible] प्रमाणवार्तिक का [illegible] करने वाले [illegible] हुए। [illegible] आचार्य ने [illegible] की व्याख्या लिखी थी। [illegible] प्रज्ञाकर का [illegible] लिखा था। [illegible] भी [illegible] टीका लिखी। [illegible] ने [illegible] के [illegible] की [illegible] आचार्य ने भी [illegible] की [illegible]। [illegible] ने [illegible] की [illegible] था। धर्मोत्तर की [illegible] में [illegible] इसने [illegible] की [illegible] को [illegible] करते हैं। [illegible] टीका [illegible] पर हैं। [illegible] [illegible] हुआ है।

न्यायबिन्दु टीका [illegible] की [illegible] थी। [illegible] ने [illegible]। [illegible] [illegible] थे। [illegible] में [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] की न्यायबिन्दु टीका [illegible] है [illegible] धर्मोत्तर [illegible] टीका [illegible] में [illegible] को [illegible] (पृ. २०)।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धर्मकीर्ति (बौद्ध)

कुमारिल और धर्मकीर्ति समकालीन हैं, ऐसी किंवदन्ती परम्परा से है। स्वयं कुमारिल ने धर्मकीर्ति का नहीं पर दिङ्नाग का खण्डन किया था, उधर भी धर्मकीर्ति ने कुमारिल का खण्डन किया था (तत्त्वसंग्रह, प्रमाणसमुच्चय, पृ. १८) आचार्य धर्मकीर्ति को धर्मपाल का शिष्य कहते हैं और धर्मपाल को वसुबन्धु का शिष्य कहा है। वसुबन्धु दो हुए हैं। प्रथम वसुबन्धु का जन्म ई. ३२० और मृत्यु ३८० ई. में है, तथा दूसरे वसुबन्धु का जन्म ४०० ई. और मृत्यु ४८० ई. में हुई, ऐसा डॉ. फ्राउवाल्नर ने सिद्ध किया है (On the Data of Vasubandhu. 1951, पृ. ४८-५५)। ये धर्मपाल प्रथम वसुबन्धु के शिष्य नहीं हो सकते, क्योंकि धर्मपाल ने [illegible] ई. ६३५ में स्वीकार किया, तब ह्युएनत्सांग भारत में आये थे।

आचार्य धर्मकीर्ति ने ईश्वरसेन से प्रमाणशास्त्र का अध्ययन किया था, परन्तु उनके दीक्षागुरु [illegible] प्रसिद्ध आचार्य धर्मपाल थे। ऐसी स्थिति में इत्सिंग के [illegible] भी तब धर्मकीर्ति उपस्थित थे तब धर्मपाल [illegible] थे। [illegible] तारानाथ के बौद्ध इतिहास के अनुसार [illegible] धर्मपाल ने [illegible] के शिष्यों को [illegible] था। ऐसी स्थिति में इत्सिंग के भारत (ई. ६७१-६९५) के तीस वर्ष पूर्व धर्मपाल की मृत्यु हो गयी थी, ऐसा जान पड़ता है। धर्मपाल के गुरु द्वितीय वसुबन्धु की मृत्यु ४८० ई. में हुई और स्वयं धर्मपाल की मृत्यु ई. ५६० के बाद नहीं हो सकती। इस दृष्टि से धर्मकीर्ति के जन्म का निर्धारण करें तो उनका काल ई. ५५० - ६०० तक पहुँचता है। ऐसा मानने पर दिङ्नाग के शिष्य ईश्वरसेन से धर्मकीर्ति का अध्ययन ठीक नहीं होगा। क्योंकि ईश्वरसेन को दिङ्नाग (ई. ३४५-४१५) का साक्षात् शिष्य नहीं माना जा सकता। कुमारिल का खण्डन धर्मकीर्ति ने किया है। कुमारिल का समय डा. कुन्हन राजा ने ५५० ई. माना है और प्रो. [illegible] के मत का [illegible] करते हुए

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

ई. की सातवीं सदी का प्रथम चरण मानने में बाधक नहीं। इत्सिंग ने कीर्ति [illegible] सदियों [illegible] कोई प्रश्न हल होगा। ([illegible] पृ. १७)।
अतएव कुमारिल के समय के साथ भी धर्मकीर्ति के उक्त समय का विरोध नहीं होगा।

ह्युएनत्सांग ने धर्मकीर्ति का उल्लेख नहीं किया किन्तु इत्सिंग ने धर्मकीर्ति के समय को ६३५ ई. के बाद [illegible] इस [illegible] का [illegible] श्री राहुल जी ने [illegible] का [illegible] की श्री पं. महेन्द्रकुमार जी ने [illegible] श्री राहुल जी का [illegible] का [illegible] धर्मकीर्ति के समय को ६००–६५० के मध्य में प्रो. [illegible] ने ६५० ई. में रखते हैं और ~~धर्मकीर्ति~~ कुमारिल का समय भी [illegible] है तो कोई बाधा नहीं है। कुमारिल के [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] धर्मकीर्ति का भी [illegible] न [illegible]।

हुएन-त्सांग द्वारा धर्मकीर्ति को उल्लेख न करने के कारण (देखें [illegible], ६४–८)।

धर्मकीर्ति के प्रमाणवार्तिक तथा स्वोपज्ञवृत्ति का १०५० ई. में, प्रमाणविनिश्चय का १०७६–८२ ई., न्यायबिन्दु का १०७६–८२ में, हेतुबिन्दु का ८४५ ई., सम्बन्धपरीक्षा का ८४५ ई. स्वोपज्ञवृत्ति का भी; वादन्याय का १०५० ई. सन्तानान्तरसिद्धि का ८४५ ई. में तिब्बती अनुवाद हुआ।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

(भदन्त) धर्मत्रात

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ६१४-६१५ में उद्धृत है। वसुबन्धु ने भी इनके मत की समालोचना की है। नैञ्जियो इनको वसुमित्र का मामा बतलाता है, जो कि कनिष्क के दरबार में थे। धर्मपदव्याख्या इन की कृति है। इनके अतिरिक्त नैञ्जियो कैटलाग में इनके चार और ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धर्मपाल (बौद्ध)

ये धर्मकीर्ति के गुरु थे। इन्होंने दिङ्नाग के ग्रन्थ आलम्बन परीक्षा और शतशास्त्र [illegible] की।

[illegible] धर्मपाल धर्मोत्तरप्रदीप में दुर्वेकमिश्र के द्वारा उद्धृत थे (पृ० ३५)।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

धर्मोत्तर (बौद्ध)

ये अर्चट (धर्माकरदत्त) के शिष्य थे। इनको भी दुर्वेकमिश्र ने उद्धृत किया है। ये इनका उल्लेख करते हैं। धर्मोत्तर न्यायबिन्दुटीका, प्रमाणविनिश्चय आदि ग्रन्थों के रचयिता हैं। प्रमाणवार्तिकभाष्य पर भी इन्होंने टीका लिखी। धर्मोत्तर ने [illegible] का खण्डन कर साकारवाद की स्थापना करना चाहा है। इसलिए भी इस प्रसंग में इनके साथ [illegible] का प्रयोग करते हैं। न्यायबिन्दु-टीका पर धर्मोत्तर की व्याख्या ही धर्मोत्तरी है। इसका प्रमाण यह है कि इसके ऊपर भी कई टीकाएं लिखी गईं। न्याय की वास्तविक व्याख्या धर्मोत्तर ने की, अन्य व्याख्याएं उसका अनुसरण हैं। धर्मोत्तर कल्याणरक्षित के भी शिष्य थे। धर्माकरदत्त का समय ई. ७२५ के पूर्व राहुल सांकृत्यायन ने माना है। आचार्य अकलंक ने (ई. ५३०-५३१) धर्मोत्तर के मत का खण्डन किया है। आचार्य अकलंक का समय पं. महेन्द्र कुमार जी ने ७२०-७८० के बीच माना है। अतएव धर्मोत्तर का समय श्रीराहुल जी ने ई. ७२५ जो माना है, उसके स्थान पर ७०० ई. जो भी कुछ पूर्व माना जाय तो अनुचित न होगा। आचार्य धर्मकीर्ति के [illegible] शिष्य देवेन्द्रबुद्धि (के शिष्य) [illegible] के शिष्य प्रज्ञाकर के समकालीन धर्माकरदत्त का शिष्य धर्मोत्तर था। [illegible] ५५ वर्ष पेशावर के [illegible] जी ने [illegible]। धर्मोत्तर लगभग ९०० वर्ष का समय [illegible] शिष्य परम्परा होने से [illegible] है कि [illegible] धर्मोत्तर को ई. ७०० पूर्व और [illegible] धर्माकरदत्त को [illegible] अनुचित न होगा। [illegible] धर्मोत्तर ने [illegible]।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

[illegible] के अतिरिक्त निम्न ग्रन्थ लिखे हैं :—

१ [illegible] (~~[illegible]~~, पृ. २४) [illegible] के प्रत्यभि-
[illegible] और मधुराज ने [illegible] का उल्लेख किया है)
से [illegible] ५-६ के [illegible] हैं।

२. [illegible] का [illegible] प्रकाश।

३. [illegible]

४- [illegible]

५- [illegible]

[illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (डा. [illegible]) [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

मधुराज ने [illegible] का [illegible] ९२५ ई. [illegible] है, [illegible] नहीं है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] १०७६-८२ ई. में हुआ। [illegible] [illegible] का ८९५ ई. में हुआ। [illegible] का [illegible] और [illegible] का १०७६-८२ ई. [illegible] [illegible] हुआ। [illegible] [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में हुआ।

[illegible] के बाद [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं, [illegible] और [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] है (पृ. २७६)। [illegible]-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तारानाथ के अनुसार भर्तृहरि काश्मीर नरेश जयापीड (८०० ई.) के समय में थे। आचार्य (धर्मपाल) भर्तृहरि के गुरु थे। आचार्य जिनेन्द्रबुद्धि को उद्धृत करते हैं। इस प्रकार भर्तृहरि को ८०० ई. के पूर्व किसी प्रकार नहीं रखा जा सकता। इसका कारण यही [illegible] के पूर्वार्ध में रखा जा सकता है [illegible] [illegible] [illegible] इतिहासकारों ने रखा है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नरसिंह (नैयायिक)

रत्नकीर्ति ने इनको उद्धृत किया है। [illegible] में [illegible] वाचस्पति से थे। निबन्ध [illegible] प्रकरण में उद्धृत होने से ये भी इसी [illegible] के किसी ग्रन्थ के लेखक होंगे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नागार्जुन (बौद्ध)

माध्यमिक बौद्धों के आचार्य थे, ये शून्यवाद के प्रवर्तक आचार्य हैं। ये तार्किक और दार्शनिक साहित्य का [illegible] के प्रवर्तक होते हैं।

१७५ ई. इनका जन्म माना गया है। राहुल जी के मत से इनका जन्म २५० ई. है। इनके उपायहृदय का ४७२ ई. में, विग्रहव्यावर्तनी का ५४१ ई. में, प्रज्ञापारमिताशास्त्र(?) का कुमारजीव(?) द्वारा ६४८ ई. में और इत्सिंग द्वारा ७११ ई. में चीनी अनुवाद हुआ। उपायहृदय को उपायकौशलहृदय नाम से भी टुच्ची ने छापा है। विग्रहव्यावर्तनी की टीका में [illegible] के साथ में संस्कृत प्रकाशित होती है।

विग्रहव्यावर्तनी कारिका का ८५० ई. में और नागार्जुनीयटीका(?) का भी ८५० ई. में तिब्बती-अनुवाद हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

पात्रस्वामी (जैन) (?)

तत्त्वसंग्रह (अ. अं.) पृ. ४७५

इनके सम्बन्ध में भी कुछ ज्ञात नहीं है। डा. विद्याभूषण इनको जैन नैयायिक पात्रकेसरी स्वामी, जो कि [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] है, जो आज न प्राप्त है। इनका नाम पात्रकेसरी है। किन्तु आचार्य शान्तरक्षित के तत्त्वसंग्रह के द्वारा उद्धृत होने से यह निश्चित नहीं है। पात्रस्वामी निश्चित ही शान्तरक्षित से पूर्ववर्ती थे। पात्र का स्वामी का मत जैन प्रवृत्तियों के अनुकूल है। इसलिये इनको जैन माना गया है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

पैलुक (वैशेषिक)

"तत्र पैलुकेन कणादशास्त्रेण अनुक्रिष्टु ... साधयितुं शक्येन निरुपपन्नतरम्" (पृ. २२८) यशोधर के इस कथन से कणाद के रचित ग्रन्थ वैशेषिक शास्त्र है, इसका प्राचीन नाम पैलुक था। यशोधर प्रभृति की भी यही स्वीकृति है। किन्तु उन्होंने पर इस शास्त्र [illegible] होकर सामान्य [illegible] वर्गों के [illegible] के रूप में व्यवहृत हुआ है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

प्रज्ञाकरगुप्त (बौद्ध)

ये धर्मकीर्ति के वार्तिक पर प्रमाणवार्तिकालंकार के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके तीन अनुयायी थे — जिन, रविगुप्त और यमारि। रविगुप्त कश्मीरी कवियों के गुरु थे। यमारि कश्मीर के प्रसिद्ध शिष्य थे (जिन्होंने वार्तिक पर टीका लिखी थी)। जिन और यमारि ने परस्पर एक दूसरे के मत की आलोचना की है। इनका ग्रन्थ प्रमाणवार्तिकालंकार के नाम से भी प्रसिद्ध है। इनके तीनों शिष्य वार्तिकालंकार के टीकाकार थे। उदयन ने धर्मकीर्ति और प्रज्ञाकर दोनों का खण्डन भी किया है (आत्मतत्त्वविवेक, पृ. 508)। इनके ग्रन्थ का वार्तिक-एक न्यायबिन्दुटीका विवरण में और उदयन अपने ग्रन्थों में करते हैं। राहुल ने इसका नाम लेकर इस का उल्लेख किया है। इनका समय 700 ई. के आसपास माना जाता है।

वार्तिकालंकार २-४ परिच्छेदों पर ही है? इसका तिब्बती अनुवाद १००७-८ ई. में हुआ। प्रज्ञाकरगुप्त के प्रमाणवार्तिक-टीका का तिब्बती अनुवाद १०५० ई. में हुआ।

उदयन ने न्यायकुसुमाञ्जलि में (पृ. ५५७-८, ७३०) इनका मत उद्धृत किया है जो प्रमाणवार्तिकालंकार में उपलब्ध होते हैं। आत्मतत्त्वविवेक में (पृ. ५०७) उदयन ने बताया है कि धर्मकीर्ति और प्रज्ञाकर दोनों कारण से विज्ञानवादियों का खण्डन १०वीं शताब्दी में करते हैं। (द्र. ... पृ. ३३५)।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ये कुमारिल का शिष्य माने जाते हैं। इन्होंने मीमांसा में नया प्रस्थान स्थापित किया। ये गुरु के नाम से प्रसिद्ध हैं। मीमांसाभाष्य पर इनकी टीका लिखकर इन्होंने प्रमाणशास्त्र की प्रतिष्ठा का मीमांसा में की।

गुरुशिष्यजनाध्यक्ष स्थाने स्थाने ऽभिशिक्षिता नु।
प्रज्ञाप्रभव लोके ऽस्मिन् गुरु बन्धु प्रभाकरः॥

कुमारिल के समान प्रभाकर ने भी शाबरभाष्य पर दो टीकाएं लिखीं। इनके नाम बृहती और लघ्वी थे। बृहती को निबन्धन टीका और लघ्वी को विवरण टीका भी कहते हैं। शालिकनाथ ने इन दोनों पर अपनी व्याख्याएं लिखीं थीं। बृहती की टीका ऋजुविमला और लघ्वी की टीका दीपशिखा कहलाती थी। आज केवल प्रभाकर की बृहती ही उपलब्ध है। शालिकनाथ की टीका, भवनाथ के नयविवेक के प्रसंग और रामानुज के तन्त्ररहस्य से भी लघ्वी की लोकप्रियता जाना सिद्ध होती है। तन्त्ररहस्य में रामानुज ने बताया है कि प्रभाकर ने शाबर भाष्य पर दो टीकाएं क्यों लिखीं। तन्त्ररहस्य के द्वितीय संस्करण की भूमिका में बताया गया है कि कुमारिल और प्राचीन प्राभाकर मत के उपकृत मीमांसक थे। मीमांसा में भी [illegible] परम्परा प्रायः अपने पूर्ववर्ती के ही आधार अपने ग्रन्थों को लिखते हैं। इसलिये कुमारिल और प्रभाकर भी अपने पूर्ववर्ती सिद्धान्तों के ही व्याख्याता हैं, न कि नये दर्शन के निर्माता। (?) प्रभाकर और कुमारिल में दार्शनिक सिद्धान्तों में भी मतभेद है। पूर्वमीमांसा की व्यवस्था इनकी अपनी प्रणालियों पर आधारित हो गयी, जिसके दो प्रकार हैं, जैसा कि वेदान्त में विवरण प्रस्थान और भामती प्रस्थान में है।

डा. [illegible] ने अपनी बृहती (भाग 1) की भूमिका में बताया है कि प्रभाकर केरल के निवासी थे। वहां पर प्रभाकर पद्धति का प्रचार अत्यधिक प्रचलित है, अतएव डा. [illegible] और इनकी [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वहां उपलब्ध होती है। किन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वे
केवल के थे। श्लोकवार्तिक तात्पर्य टीका के उपोद्घात में कुमारिल
भट्ट की आलोचना में यह कुमारिल का उल्लेख होता है "गोदावरीपरिकल्पितवे-
प्रभाकरगुरुर्नाम विभक्तमतिर्जगत्प्रसिद्धः ... [illegible]
प्रभाकरः" लिख उपाधि जैमिनि के प्रवर्तक हैं। वे भी मीमांसक के
ही शिष्य होते हैं। कुमारिल और उनके शिष्य इनका और
कोई ग्रन्थ ~~उपलब्ध~~ निर्दिष्ट नहीं है।

मण्डनमिश्र ने प्रभाकर के सिद्धान्त की आलोचना की है विधिविवेक
में, अर्थवाद का खण्डन विधिविवेक में। कुमारिल की धारणा की स्थापना में
उन्होंने भावनाविवेक, विभ्रमविवेक और ब्रह्मसिद्धि में प्रभाकर के मन्तव्य सिद्धान्तों
की आलोचना की है। इसके मुख्य विवाद ने के समकालीन इस प्रकार उपस्थित
होता है कुमारिल, धर्मकीर्ति, प्रभाकर, मण्डन और उम्बेक। धर्मकीर्ति
ने कुमारिल की आलोचना की है, प्रभाकर की नहीं। धर्मकीर्ति अपने
प्रमाणवार्तिक ग्रन्थ के अन्त में कहते हैं — तत्त्वार्थपाठे ... [illegible]
कीर्तिर्ना ... (प्र. वा. ४. २०)
इससे ज्ञात होता है कि प्रभाकर ने धर्मकीर्ति के ग्रन्थ को देखा था।
मण्डन ने धर्मकीर्ति और प्रभाकर दोनों की आलोचना की है, इसलिए
वह इनके बाद के हैं। प्रज्ञाकरगुप्त ने अपने प्रमाणवार्तिकालङ्कार में
नियोगवाद और भावनावाद की आलोचना की है इस प्रकार यह
सर्वप्रथम प्रभाकर का उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ में मिलता है। विद्यानन्द
की अष्टसहस्री में भी, जो कि एक जैन ग्रन्थ है, प्रभाकर गुरु की पद्धति
पर भी प्रभाकर के नियोग की आलोचना की है। कुमारिल धर्मकीर्ति
के प्रत्यक्ष की आलोचना करते हैं और धर्मकीर्ति अपने प्रमाणवार्तिक
में कुमारिल की आलोचना करते हैं। इससे ये दोनों समकालीन थे, ऐसा
प्रतीत होता है।

बड़ौदा से प्रकाशित तत्त्वसंग्रह के द्वितीय संस्करण की
भूमिका में डॉ. एच. एन. ... शास्त्री ने प्रभाकर सिद्धान्तों को बादरि के
मत के अनुकूल माना है और कुमारिल के सिद्धान्तों को जैमिनि के।
इसी प्रकार शालिकनाथ के सिद्धान्त भी प्रभाकर के मत के अनुकूल पाये,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसा कहा जाता है प्रकरणपंचिका की भूमिका में इसके संपादक मत का प्रत्याख्यान की गयी है।

शालिकनाथ प्रभाकर का साक्षात् शिष्य है (प्र. पं. भू. 13)

६५०-७२० ई. प्रकरणपंचिकाभूमिका, पृ. २२

कुमारिल प्रभाकर के गुरु थे, इस मत का खण्डन प्रकरणपंचिका भूमिका में किया गया, [illegible] पर विचार किया गया है जिसके अनुसार कुमारिल ने ही प्रभाकर का गुरु माना था (पर कहीं वास्तव [illegible] इसका समर्थन नहीं होता है)।

शालिकनाथ का प्रभाकरविजय [illegible] प्रभाकर के संप्रदाय का ग्रन्थ है। [illegible] इसी के प्रमाण का ग्रन्थ है।

प्रभाकर जैन मीमांसक थे (प्रकरणपंचिकाभूमिका, पृ. ४५)

प्रभाकर के ग्रन्थ में "अविवेकः [illegible]" पद [illegible] का वर्णन [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] है। इसके [illegible] [illegible] जा सकता।

प्रभाकर के ग्रन्थ में कुमारिल के मत का खण्डन उपलब्ध होता है (प्रकरणपंचिकाभूमिका, पृ. ४६-४८)

प्रभाकर ने अनेक स्थलों पर पूर्ववर्तियों के मत का खण्डन किया है (प्रकरणपंचिकाभूमिका, पृ. ४८-४९)

[illegible] प्रभाकर के मत का खण्डन करते हैं (वही, पृ. ४९) [illegible] प्रभाकर के, [illegible] का [illegible] है। प्रभाकर गुरु और [illegible] के लिये पहले [illegible] हुआ है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रभाकरः।

[illegible] [illegible] न [illegible] [illegible]॥

[illegible] को [illegible] [illegible] प्रकरणपंचिकाभूमिका में [illegible] (पृ. ५०) [illegible] वर्णित है।

प्रभाकर कुमारिल को [illegible] गुरु पद से [illegible] [illegible] [illegible] प्रभाकर को [illegible] गुरु कहते थे (वही, पृ. ५१)

प्रकरणपंचिका के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नैष्कर्म्यसिद्धि के संपादक ने नैष्कर्म्यसिद्धि की भूमिका में भी इस विषय पर विचार किया है (म. कु. हिरियन्ना)। बृहती टीका द्वितीय भाग की भूमिका में इसी [illegible] लघ्वी टीका और बृहती का परस्पर सम्बन्ध पर प्रकाश डाला है (ल. ने. पृ. ५२)।

भूतैर्यः स्वप्रतीकृतो [illegible] सर्वज्ञकल्पोऽपि सन्
जीवन्नेव [illegible] च गमितो [illegible]।
[illegible]ऽप्यमिति प्रभाकरगुरुर्देशान्तरे निर्वासितः
[illegible] [illegible] कृतम् ॥
(ऋजु. पृ. २५ [illegible], ऋजु. प्र. प्रकाश)

डा. गंगानाथ झा – प्रभाकर मीमांसा में कहते हैं कि प्रभाकर कुमारिल के शिष्य थे। परम्परागत अनेक प्रमाणों पर कहते हैं कि यहाँ पर प्रभाकर कुमारिल के मत का खण्डन करते हैं, प्रस्तुत बृहती भाग १, पृ. ११६ इत्यादि। ~~इससे अनुमान होता है~~ कुमारिल के ग्र. में भी कुछ प्रभाकर के सिद्धान्तों की आलोचना की है, किन्तु वे प्रभाकर के वचन न होकर भाष्य के [illegible] है। लेकिन श्लोकवार्तिक १.१.२. पृ. १०२ में ऐसा प्रतीत होता है कि कुमारिल बृहती के कुछ लौकिक वचनों [illegible] का खण्डन करते हैं।

हिरियन्ना ने बृहती (भूमिका) भाग २ की ? में प्रभाकर को कुमारिल का समकालीन [illegible] है। [illegible] की गई है (पृ. ५-६)।

बृहती, पृ. २६ की आलोचना श्लोकवार्तिक (१.१.२; १०२ श्लोक) में कुमारिल ने की है, ऐसा प्रतीत होता है।

[illegible] वेद का अध्ययन करके पर कुमारिल का [illegible] है और गुरु [illegible] प्रभाकर का। ४४ विषयों पर कुमारिल और प्रभाकर में मतभेद है, [illegible] ने नीतितत्त्वाविर्भाव में [illegible] है। (देखो नयविवेक भूमिका, पृ. ७६)।

शालिकानाथ का प्रकरणपञ्चिका प्राभाकर दर्शन का ग्रन्थ है। इसका प्रकाशन [illegible] में हुई है और इसकी पाण्डुलिपि अड्यार लाइब्रेरी में है। [illegible] (पृ. XV) में [illegible] का कहना है कि मीमांसा परम्परा कुमारिल की अपेक्षा प्राभाकर दर्शन में अधिक प्रचलित थी।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

प्रभाचन्द्र (जैन)

~~इनका समय १०२० ई. के आसपास माना जाता~~
~~जाता है।~~

ये श्री प्रमेयकमलमार्तण्ड के रचयिता हैं। न्यायकुमुदचन्द्र की भूमिका में स्व. महेन्द्रकुमार शास्त्री ने इनका समय ९८०-१०२० ई. निर्धारित किया है। डा. कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री इनको ८२५ ई. के आसपास रखते हैं। इनके प्र.क.मा. पर [illegible] [illegible] हैं वो प्रकाशित हो चुके हैं. उपर्युक्त ग्रन्थों की भूमिका, द. [illegible]। न्यायकुमुदचन्द्र भी इन्हीं की रचना है। यह अकलंक के लघीयस्त्रय की टीका है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

प्रशस्तपाद (वैशेषिक)

इण्डियन एण्टीक्वेरी में ~~[illegible]~~ दुर्वेकमिश्र ने प्रशस्तकर नाम से इसको उद्धृत किया है। प्रशस्त, प्रशस्तदेव, प्रशस्तकर, प्रशस्तदेवाचार्य और प्रशस्तपादाचार्य इन्हीं के नाम हैं। इनका समय अनुमान से पूर्व इनको पाँचवीं शताब्दी का मानते हैं, क्योंकि इनके भाष्य में दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय पर भी कुछ विवेचन होता है। यह भाष्य सूत्रों का क्रमिक व्याख्यान नहीं करता, किन्तु इनके आधार पर स्वतन्त्र ग्रन्थ है। कुछ सूत्र इसमें छोड़ दिये गये हैं और कुछ नये विषयों का भी समावेश किया गया है। यह पदार्थधर्मसंग्रह या प्रशस्तपादभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है।

पदार्थनिर्णय [illegible] में आचार्यपुङ्गव ने पदार्थप्रवेशनिर्णय टीका का उल्लेख किया है। न्यायकन्दली टीका में पदार्थप्रवेश नाम से पदार्थधर्मसंग्रह का बारंबार उल्लेख है। इसलिए आचार्यपाद का यह ग्रन्थ प्रशस्तपादभाष्य का ही प्रतीक होगा।

श्रीधराचार्य की न्यायकन्दली प्रशस्तपादभाष्य की टीका है। श्रीवत्साचार्य की न्यायलीलावती इनकी टीका नहीं है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रशस्तपाद (~~वैयाकरण~~ वैशेषिक)

तत्त्वसंग्रह (गा. ओ. सी.) पृ. ५२, ५५, ७२, ८७, ३२५, ३३१ ।

वैशेषिक प्रशस्तपाद से यह नैयायिक अवश्य प्राचीन हैं। अविद्धकर्ण के समान इनके विषय में भी कुछ ज्ञात नहीं है। आगे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि ये शान्तरक्षित से पहले ७०० ई.-वर्ष पूर्व हो चुके थे।

नयचक्र में निर्दिष्ट वैशेषिक सूत्रों के वाक्य और भाष्य के टीकाकार प्रशस्तमति के कथन से उद्धृत तत्त्वसंग्रहपंजिका, न्यायविनिश्चय (आलापद्धति), प्रमेयकमलमार्तण्ड आदि में उपलब्ध हैं। प्रशस्तकर, प्रशस्तपाद, प्रशस्तदेव इत्यादि नाम इन्हीं के हैं। इस प्रकार (प्रशस्तकार) ये वैशेषिक सूत्र वाक्य (प्रशस्त) भाष्य की नयचक्र में निर्दिष्ट टीका के और प्रशस्तपादभाष्य के प्राचीन एक टीकाकार हैं। नयचक्रवृत्ति के प्रणेता सिंहसूरि और आ. जिनभद्रगणि ने अपने उद्धरण में (पृ. १४-१८) इनको स्मरण किया है। इस प्रकार यह प्रथम अनुच्छेद के पाठ का विवेचन होना चाहिए।

प्रशस्तमति प्रशस्तपाद का ही नामान्तर प्रतीत होता है। इन्होंने वैशेषिक सूत्र वाक्य भाष्य टीका बनाई थी, यह कहना सम्भव है। यह टीका विस्तार वाली के रूप में होगी। इस प्रकार प्रशस्तपाद दिङ्नाग से प्राचीन प्रतीत होते हैं। प्रशस्तपाद कहीं भी दिङ्नाग का निराकरण नहीं करते। इसके विपरीत दिङ्नाग के द्वारा निर्दिष्ट युक्तियाँ भी प्रशस्तपादभाष्य में मिलती हैं। इसी प्रकार जैनेन्द्रबुद्धि के द्वारा निर्दिष्ट मत भी प्रशस्तपादभाष्य में मिलते हैं।

प्रशस्तमति द्वारा टीका सूत्र वाक्य और भाष्य दोनों के ऊपर थी, ऐसा प्रतीत होता है पर टीका आज उपलब्ध नहीं है। शान्तरक्षित और सिंहसूरि के ग्रन्थों में इसका यत्र-तत्र उल्लेख है। शान्तरक्षित ने अपने ग्रन्थ के पृ. ७७ में विस्तार से इनके मत का खण्डन किया है। इससे प्रतीत होता है कि यह टीका उत्कृष्ट वैशेषिकदर्शन की एक विशिष्ट प्रौढ़ रचना थी।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस ग्रन्थ में प्रत्यभिज्ञा है और इसमें [illegible] भी था।
आचार्य [illegible] का [illegible] में कुछ ग्रन्थ के अनेक उल्लेख हैं। उन्हों
ने के उद्धरण प्रत्यभिज्ञाशास्त्र का भाषा और स्वरूप से परिचय
दिये हैं। इससे [illegible] होता है कि प्रत्यभिज्ञा और प्रत्यभिज्ञा
[illegible] थे। [illegible] उपलब्ध होते [illegible] ने
सूत्रों को आधार [illegible] और अपना स्वतन्त्र ग्रन्थ किया था। [illegible]
[illegible] इस प्रकार का परम्परा का [illegible] और [illegible]
[illegible] (प्रत्यभिज्ञा [illegible],
पृ. 12)। वैयाकरण सूत्र परम्परा का विवेचन प्रत्यभिज्ञा ने [illegible]
किया था; इसका उल्लेख [illegible] (पृ. 2)
में मिलता है। [illegible] और प्रत्यभिज्ञा [illegible] का [illegible] एक
प्रत्यभिज्ञा में इसका उल्लेख नहीं है, इसलिए [illegible] भी [illegible]
को इसके ग्रन्थ को [illegible] होना चाहिए।

प्रत्यभिज्ञादर्शन भारत के [illegible] पर [illegible] ग्रन्थ
था; वैयाकरण सूत्र भी [illegible] और [illegible]
[illegible] के भी [illegible] है [illegible]। इस प्रसंग में [illegible] का [illegible]
[illegible] (डॉ. [illegible], पृ. 1)।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रीतिचन्द्र (नैयायिक) ?

"अतोऽप्युद्योतकरप्रीतिचन्द्रभासर्वविद्वत्प्रभृतिः"
वादन्याय की शान्तरक्षित कृत विपञ्चितार्था टीका में (पृ. १४२) के इस उद्धरण के प्रसंग से प्रीतिचन्द्र नैयायिक प्रमाणित होते हैं। ये जैन नैयायिक भी हो सकते हैं, क्योंकि इस प्रकार के नाम उस संप्रदाय के आचार्यों के मिलते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

बार्हस्पत्यसूत्र (व्रती) चार्वाक

तत्त्वसंग्रह (गा. ओ.) पृ. ५३२ में उद्धृत।

यहां उद्धृत सूत्र बृहस्पति के न होकर कम्बलाश्वतर के हैं, ऐसा प्रकरण से प्रतीत होता है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(भदन्त) बुद्धदेव

तत्त्वसंग्रह (गा. ओ.) पृ. ५१५ में उद्धृत हैं। इनका तो तिब्बत में कोई अनूदित ग्रन्थ नहीं मिलता। वसु-बन्धु ने इनके मत की आलोचना की है। इसलिये इनका समय 200 ई. माना गया है। इनकी भी स्थविर वसुमित्र आदि के साथ वैभाषिक के रूप में गणना की सम्भावना प्रतीत होती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

बोधायन (मीमांसक)

बोधायन पूर्व और उत्तर दोनों मीमांसाओं के वृत्तिकार हैं। इनकी ब्रह्मसूत्र की वृत्ति का उल्लेख रामानुज ने श्रीभाष्य के आरंभ में किया है। श्रीभाष्य का आधारभूत ग्रन्थ बोधायनवृत्ति ही है। ब्रह्मसूत्र के व्याख्याता भास्कर अपने भाष्य का आधार उपवर्ष के ग्रन्थ को बताते हैं। वेदान्तदेशिक ने तत्त्वटीका में कहा है कि उपवर्ष इति बोधायनस्यैव नाम स्यात्। प्रपञ्चहृदय की भूमिका में टी. गणपति शास्त्री ने इस मत को स्वीकार नहीं किया है। वे उपवर्ष और बोधायन को भिन्न ही मानते हैं।

BC. A.D 300 प्रपञ्चहृदय-भूमिका, पृ. 22

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भर्तृप्रपञ्च (मीमांसक)

आचार्य भवनाथ ने नयविवेक में इनका प्रपञ्चेन नाम लिया है -
"प्रपञ्चादिभिरेतैः स्वोत्प्रेक्षितदूषणं कथितत्वात् प्रपञ्चादेर्मतानाम्" (पृ. २२३).
इस प्रकार प्रपञ्च को उद्धृत किया है। पर नाम भर्तृप्रपञ्च का ही उपदेश वाक्य प्रतीत होता है। कुमारिल के मत के खण्डन के बाद यह उद्धृत किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि कुमारिल के बाद के ग्रन्थकार हैं।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भर्तृमित्र (मीमांसक)

ये मीमांसा के प्राचीनतम व्याख्याकार हैं। इनकी व्याख्या का नाम तत्त्वशुद्धि था। यह ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। केवल उद्धरणों से ही इस ग्रन्थ का परिचय होता है। [illegible] के तत्त्वबिन्दु की हिन्दी [illegible] की भूमिका में K.S.R शास्त्री ने बताया है कि कुमारिल और भर्तृमित्र का पूर्वमीमांसा व्याख्यान प्रभाकर के दृष्टिकोण से भिन्न था। इसीलिए कुमारिल भट्ट ने श्लोकवार्तिक के प्रारंभ में उल्लेख किया है कि पूर्व व्याख्याकारों ने पूर्वमीमांसा को लोकायत दर्शन के रूप में [illegible] दिया है। व्याख्याकार यहां भर्तृमित्र का उल्लेख करते हैं। प्रभाकर को गुरु कहा जाता है। इनका [illegible] भी इसी परम्परा से [illegible] मालूम होता है। [illegible] इस परम्परा और [illegible] धारा का प्रभाव था। भर्तृमित्र ने किसी [illegible] का [illegible] नहीं किया था। इनका [illegible] कुमारिल और प्रभाकर दोनों ने [illegible] है। (देखें तत्त्वबिन्दु हिन्दी [illegible] भूमिका तथा प्रकरणपञ्चिका [illegible] (पृ. 12))

A.D. 300-400 प्रकरणपंचिका, पृ. पृ. 22

उपवर्ष और शबरस्वामी की [illegible] की व्याख्याओं के [illegible] शबरस्वामी और कुमारिल की व्याख्याओं में भी [illegible] है। इनमें [illegible] हुए हैं। शबरस्वामी और कुमारिल के बीच की [illegible] में [illegible] भर्तृमित्र का नाम आता है [illegible] व्याख्याकार [illegible] के [illegible] कुमारिल "[illegible] मीमांसा [illegible]" यहां पर भर्तृमित्र को स्मरण करता है। [illegible] कुप्पुस्वामी शास्त्री ने अपने [illegible] भी प्रभाकर [illegible] पूर्वमीमांसा" में ([illegible], पृ. 89-91) लिखा है कि प्रभाकर [illegible] भर्तृमित्र की [illegible] का [illegible] किया था लेकिन [illegible] शास्त्री प्रभाकरविजय की भूमिका में इस [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करते हैं। [illegible]
[illegible] होगा।

[illegible]
[illegible] हैं। इसके [illegible]
[illegible]। [illegible] ने १.१.६ पर [illegible]
ने [illegible]
[illegible] करते हैं। [illegible]
[illegible] — (६.१४, [illegible])

[illegible]:।

[illegible]।
[illegible] (३००-६०० ई.) [illegible]
[illegible] होगा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भर्तृहरि (वैयाकरण)

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ५२१, ८६६
शान्तरक्षित, कुमारिल (तन्त्रवार्तिक, पृ. २५१) और इत्सिंग
इनको स्मरण करते हैं। इत्सिंग के लेखानुसार भर्तृहरि भर्तृहरि
शास्त्र के रचयिता हैं, जो कि चूर्णि की व्याख्या है। वाक्यपदीय
और पेइ-न वृत्ति के भी ये रचयिता हैं। पेइ-न वृत्ति प्रकीर्णक की
कारिकाओं की व्याख्या है। इनका समय ६००-६५० ई.
माना जाता है। इत्सिंग ने इनको वैयाकरण और बौद्धमत का
अनुयायी माना है।

भर्तृहरि के वाक्यपदीय और उसकी स्वोपज्ञ टीका के यहां
अनेक उद्धरण हैं। शान्तरक्षित और कुमारिल के समय यहां
भर्तृहरि का मत भी बहुलोक प्रत्यालोचित हुआ था।

प्रो. मूलो भर्तृहरि का समय ४५० ई. में रखते हैं।
इत्सिंग के अनुसार इनकी मृत्यु ६५१ ई. में हुई, किन्तु यह
ठीक नहीं माना जाता। द्रष्टव्य — डा. राम. कृष्णमाचारी आर्य
सार स्मृति ग्र. प., पृ. २८५-२८८

वाक्यपदीय और उसकी स्वोपज्ञ टीका के अतिरिक्त
इनकी महाभाष्यदीपिका भी उपलब्ध होती है। स्वोपज्ञ टीका
और महाभाष्यदीपिका पूर्ण उपलब्ध नहीं है। कैयट के
समय से ऐसा प्रतीत होता है कि इनके समय में पूरा ग्रन्थ
था। वर्धमान गणरत्नमहोदधि में (११४० ई.) ने कहा है
कि भर्तृहरि वाक्यपदीय और प्रकीर्णक के कर्ता तथा
महाभाष्यत्रिपादी के व्याख्याता थे। आधु- इनके ग्रन्थ का नाम
त्रिपादी था। वाक्यपदीय के प्रथम (आधे) पर स्वोपज्ञ वृत्ति उपलब्ध है,
उस पर वृषभदेव की टीका उपलब्ध है। प्रथम और द्वितीय काण्ड
पर पुण्यराज की टीका तथा स्वोपज्ञवृत्ति उपलब्ध है। तृतीय
काण्ड पर हेलाराज की टीका है। इसने प्रथम द्वितीय काण्ड पर
भी टीका लिखी थी। हेलाराज भूतिराज के पुत्र थे।

[illegible] ने अपने ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया है।

[illegible] ने अपने [illegible] में वाक्यपदीय को उद्धृत किया है। [illegible] भर्तृहरि का समय 5 3 8 ई. माना जाता कुछ लोग 6 3 2 ई. देते हैं। इ-त्सिंग के [illegible] भर्तृहरि की मृत्यु [illegible] का [illegible] में [illegible] किया है। इ-त्सिंग का समय 670-710 ई. माना जाता [illegible] में वाक्यपदीय की कारिका उद्धृत होने से [illegible] के [illegible] के काल का समय [illegible] 450-500 ई. माना है (हिस्ट्री ऑफ संस्कृत ग्रामर, भाग-2, पृष्ठ 2, ई. 13)। इन प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि भर्तृहरि 450-500 ई. के बीच में विद्यमान रहे थे। [illegible] में वाक्यपदीय शब्द उद्धृत किया गया। [illegible] — वाक्यं च पदं च वाक्यपदे। वाक्यपदे [illegible] वाक्यपदीयम्।

[illegible] की भूमिका के अन्तर्गत टिप्पणी (पृ. 24) में [illegible] भाग-1, भा-2, पृ. 235 के [illegible] में [illegible] भर्तृहरि [illegible] है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भवदास (मीमांसक)

ये पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा के वृत्तिकार माने जाते हैं। वृत्तिकार के रूप में उद्धृत वचनों को शबरस्वामी ने अपने भाष्य में उद्धृत किये हैं, जो कि शबरस्वामीप्रोक्त उपवर्ष के होंगे हैं, भवदास के नहीं। कुमारिल भट्ट के तन्त्रवार्तिक आदि के श्लोक में भवदासकृत स्वरूप व्याख्या प्रतीत होता है।

वृत्त्यन्तरेषु केषाञ्चिल्लौकिकार्थव्यतिक्रमः ।
भवदासं स्वयं [illegible] ॥

– – – – – – –

वर्णिते पूर्णप्रायेण [illegible] प्रायः संक्षिप्तम् ।
[illegible] – – – – ॥

A.D. 100–200 ई. प्रभाकरविजय भूमिका, पृ. 22

उपवर्ष के बाद भवदास की स्थिति है। प्रपञ्चहृदय के प्रमाण से भी यह सिद्ध होता है कि उपवर्ष और शबरस्वामी के बीच में इनकी स्थिति थी। श्लोकवार्तिक, पृ. 21-22 (मीमांसा) में भवदास उद्धृत है। देवस्वामी ने अपने संकर्षकाण्ड के भाष्य (12.2.1) में भवदास को आदरपूर्वक स्मरण करते हैं। प्रपञ्चहृदय से ज्ञात होता है कि भवदास ने भी उपवर्ष के समान पूर्वमीमांसा के 16 अध्यायों पर अपना भाष्य लिखा था। श्लोकवार्तिक और उसकी टीकाओं से भी यह उनके मत की कुछ जानकारी मिलती है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भवनाथ (मीमांसक)

ये प्रभाकर के अनुयायी थे। इन्होंने मीमांसाशास्त्र पर नयविवेक नाम के ग्रन्थ की रचना की। इसका सर्वप्रथम प्रकाशन त्रिवेन्द्रम से प्रकाशित हुआ है। नयविवेक में शबरस्वामी, कुमारिल, प्रभाकर, उम्बेक, शालिकनाथ, वाचस्पति मिश्र और ओदार के अभिमत प्रसङ्ग (मतप्रपञ्च), मण्डन और महोदधि तथा विद्याधर नाम के ग्रन्थकार को स्मरण किये गये हैं। वेदान्तदेशिक ने इनके ग्रन्थ को उद्धृत किया है। इनका समय 11 शताब्दी से पहले नहीं स्वीकार किया जा सकता।

नयविवेक की के [illegible] (पृ. १८-२०) एक जगह में बताया गया है कि कुमारिल और प्रभाकर गुरुशिष्य और [illegible] के अवतार थे। प्रभाकर के जीवन का कुछ अंश नयविवेक की एक व्याख्या में उपलब्ध है, उसका कुछ अंश (पृ. १४-) के फुटनोट में दिया गया है। इसका उल्लेख [illegible] की [illegible] की टीका में, जो कि [illegible] के आधार पर, किया है। इसकी पाण्डुलिपि D. 11120 मद्रास की गवर्नमेण्ट ओरियण्टल लाइब्रेरी में है। इसमें यह भी बताया गया है कि [illegible] कुमारिल ने भी बताया था। [illegible] ने नयविवेक की व्याख्या की थी। इसी प्रकार इनके [illegible] ने भी प्रभाकर दर्शन का [illegible] किये थे।

([illegible] में [illegible] के [illegible] था, जो [illegible] यह है कि प्रभाकर पर प्रकार [illegible] का प्रभाव होना चाहिये [illegible] इनके [illegible] को [illegible] में [illegible] जाना चाहिये।

[illegible] शताब्दी के आरम्भ में कौमारिल और प्राभाकर सम्प्रदाय का [illegible] हुई।

[illegible] हि [illegible] [illegible] [illegible]
([illegible]) ([illegible])

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

[illegible] (पृ. [illegible] , पृ. २,
पृ. ३) । [illegible] में [illegible] के [illegible]
[illegible] (पृ. २८) । और [illegible] (पृ. २०६, २१६ (?))
[illegible] १२ [illegible] । [illegible]

२ [illegible] के [illegible] । [illegible]
[illegible] के [illegible] में
[illegible] में [illegible]
[illegible] में [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible]
[illegible] १०५० - ११५० के बीच में [illegible]
और [illegible] के [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारद्वाज (वैशेषिक)

वैशेषिक सूत्रों की भारद्वाजवृत्ति के उल्लेख मिलते हैं। चन्द्रानन्द अथवा शंकरमिश्र के द्वारा उद्धृत करने से यह ज्ञापित होता है। किन्तु इसके पीछे इसके प्रमाण ग्रन्थों का अभाव ही उपस्कारकार इसको अधिक महत्त्व नहीं देते। अपने ग्रन्थ के प्रारंभ में वे कहते हैं कि केवल सूत्रों के आधार पर ही वे यह ग्रन्थ प्रस्तुत कर रहे हैं—

सूत्रमात्रावलम्बेन निरालम्बेऽपि गच्छतः।
खे खेलवत् खेलनायं भवतु सिद्धिमेष्यति॥ (उ. १)

शंकर के द्वारा उद्धृतवृत्ति चन्द्रानन्द के द्वारा उद्धृत वृत्ति से भिन्न होनी है। एक वैशेषिकसूत्रवृत्ति के आरंभ दो अध्याय उपलब्ध होते हैं। इसकी रचना वर्धमानोपाध्याय (११२८-११७८ ई.) के समय में की गयी थी। इसकी मातृका उपलब्ध है। इस पर ~~वृत्ति~~ भाष्य का प्रभाव परिलक्षित होता है और इसमें वैशेषिक दर्शन की प्राचीन मान्यताओं के दर्शन नहीं होते।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भाविविक्त (नैयायिक)

तत्त्वसंग्रह (पा. क्रं.) पृ. ११२, ११५, २०२, ३२४, ३०४, ३०७, ४७८ ।

ये भी एक प्राचीन नैयायिक हैं। इनके सम्बन्ध में अभी इतना कहा जा सकता है कि ये भी ७०० ई. के पूर्व हो चुके थे। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रशस्तमति, अविद्ध-कर्ण, भाविविक्त, शंकरस्वामी आदि आचार्य उद्योतकर के पहले ही हो चुके थे। उद्योतकर के बाद ये सब विलुप्त हो गये। इनका नाम शान्तरक्षित के कारण ही बच सका।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

भासर्वज्ञ (नैयायिक)
(भावसर्वज्ञ)

इनका न्यायसार नामक ग्रन्थ न्यायभूषण टीका के साथ सन् १९६८ में वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। मूल ग्रन्थ पहले भी छप चुका है। डा. [illegible] के मत से इनका समय [illegible] का पूर्ववर्ती है। आचार्य उदयन का समय ९८४ ई., [illegible] का समय ९६० ई. है। [illegible] ने भासर्वज्ञ की आलोचना की है, अतः ९३० ई. भासर्वज्ञ का समय मानना उचित होगा — ८८२ ई. [illegible] का समय है। कर्णकगोमी ने [illegible] का खण्डन किया है, अतः कर्णकगोमी का समय नवम शताब्दी का अन्तिम भाग होगा। कर्णकगोमी ने [illegible] का उल्लेख किया है। भासर्वज्ञ (पृ. ५९४) भी इनका उल्लेख करते हैं, अतः इनका समय कर्णकगोमी के बाद रहेगा।

भासर्वज्ञ का शैव [illegible] सम्बन्ध है। यही भासर्वज्ञ गणकारिका और उसकी वृत्ति के प्रणेता भी माने जाते हैं। [illegible] के। नैयायिक की परम्परा में इनके [illegible] भासर्वज्ञ उल्लिखित होते हैं।

गणकारिका इनके नाम से भासर्वज्ञ की कृति होकर [illegible] पाशुपत [illegible] में गणकारिका को एक [illegible] का [illegible] है। यह [illegible] भासर्वज्ञ के [illegible] हैं, किन्तु इनका [illegible]। भासर्वज्ञ भावसर्वज्ञ के नाम से भी अभिहित हैं। यह नाम [illegible] के नाम से [illegible]।

भासर्वज्ञ कश्मीरी थे। इनके ग्रन्थ पर १८ टीकाएं रची गयी थीं। वासुदेवसूरि ने न्यायसार पद पंजिका में न्यायभूषण का [illegible] है। और न्यायभूषणकार [illegible] है। [illegible] न्यायभूषण [illegible] नाम का [illegible] की।

यह स्पष्ट कहते हैं कि भासर्वज्ञ ने त्रिलोचन को उद्धृत किया है। इसी प्रकार वाचस्पति भासर्वज्ञ को उद्धृत करते हैं।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

अतः भारवि का समय त्रिलोचन और जालन्धरनाथ के बीच में मानना चाहिये।

सन्दर्भ – मृच्छकटिक का कृतिकाल – बंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका, १३५६, पृ. २२-३२

किरातार्जुनीय में उद्धृत ने कुछ स्थलों पर भारवि को उद्धृत किया है। इसका अर्थ यह है कि भारवि के समय में वे उपलब्ध रहे थे। अतः वे भारवि से बहुत पहले के नहीं होंगे। इसलिए ने स्वयं कहा है कि उनके समय उनके ग्रन्थ की व्याख्या आदि स्थानों में प्रसिद्ध थी। इनके समय भारवि का नाम दोनों कोटियों में त्रिलोचन के प्रति और जालन्धरनाथ के पहले रखता है। त्रिलोचन के बाद और जालन्धरनाथ से कुछ पहले रहे होंगे। वे भारवि द्वारा प्रभूत होते हैं। भारवि की भूमिका के आधार पर भारवि के ग्रन्थ में कोटियों का उल्लेख का क्रम आलोचना इस की रचना प्रायः १० वीं शताब्दी का उत्तरार्ध होना चाहिये।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मण्डनमिश्र (मीमांसक)

वे कुमारिल के शिष्य थे। विधिविवेक, भावनाविवेक और विभ्रमविवेक में इन्होंने कुमारिल के मत का समर्थन कर प्रभाकर आदि के मतों का खण्डन किया है। अपनी कृतियों में मण्डन मिश्र ने विधिविवेक और विभ्रमविवेक के तर्कों के आधार पर प्रभाकर के मत का भी खण्डन किया है, वेदार्थ निर्णय के अवसर पर कुमारिल के मत की भी आलोचना छोड़ दी है। इस प्रकार वे स्वतन्त्र रूप से अपना मत उपस्थापित करते हैं। शास्त्रार्थ में इनको शंकराचार्य ने पराजित किया, वे ही संन्यासी होकर सुरेश्वराचार्य के नाम से प्रख्यात हुए। इस सब विषयों में विद्वानों में बड़ा मतभेद है।

आनन्दगिरि के शंकरदिग्विजय के अनुसार मण्डनमिश्र कुमारिल के बहनोई थे। बाद में वे उनके शिष्य भी बन गये थे। इनका समय लगभग ६७०-७५० ई. माना जाता है। विद्यारण्य के शंकरदिग्विजय के अनुसार मण्डन और सुरेश्वर एक ही व्यक्ति हैं। किन्तु अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि ये दो भिन्न व्यक्ति थे। मण्डन ने ब्रह्मसिद्धि नामक वेदान्त ग्रन्थ बनाया था। इसी प्रकार सुरेश्वर ने नैष्कर्म्यसिद्धि, बृहदारण्यक और तैत्तिरीय भाष्य वार्तिक उपनिषदों पर लिखे। इन दोनों के सिद्धान्तों में कोई मेल नहीं है। विद्यारण्य ने मण्डन की धारणा से विभिन्न सुरेश्वराचार्य से भी अलग-अलग प्रतिपादन का जो इस प्रकार प्रश्न पर विचार करना अत्यन्त उपस्थित होता है — 1. मण्डन और सुरेश्वर, 2 मण्डन और विश्वरूप, 3 सुरेश्वर और विश्वरूप। इनमें से मण्डन और सुरेश्वर की अभिन्नता अत्यन्त संशयित प्रतीत होती है। बालक्रीड़ा व्याख्या ने प्रारम्भ स्मृति की व्याख्या में सुरेश्वर के बृहदारण्यकभाष्यवार्तिक को "वार्तिक के रचयिता आचार्य" ऐसा उद्धृत किया है। विश्वरूपकृत याज्ञवल्क्यस्मृति में भी सुरेश्वर के वार्तिक का [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनोरथनन्दी (बौद्ध)

ये प्रमाणवार्तिक के व्याख्याकार हैं। यह सम्पूर्ण चारों परिच्छेदों पर है, किन्तु परिच्छेदों का कुछ कथन है और व्याख्या ज्ञान यथार्थप्रकाशक है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मल्लवादी (जैन)

इन्होंने धर्मोत्तर के ग्रन्थ की आलोचना की है। न्यायबिन्दु की धर्मोत्तर टीका का टिप्पण इन्होंने लिखा है जो बौद्ध न होकर जैन थे। (धर्मोत्तरप्रदीप प्रस्तावना, पृ. ५५) क्योंकि बौद्ध परम्परा में किसी मल्लवादी का उल्लेख नहीं मिलता, जबकि जैन परम्परा में प्रामाणिक मल्लवादी हुए हैं। जैनों में एक मल्लवादी नयचक्र के कर्ता प्रसिद्ध हैं। किन्तु उनका समय वीरसंवत् ८८४ परम्परासिद्ध है। इसे स्वीकार न कर डॉ. विद्याभूषण ने [illegible] और [illegible] न लेकर [illegible] है। [illegible] (हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लॉजिक) का समय ई. ८२७ मान कर [illegible] है, ऐसा उचित नहीं है।

डॉ. अल्तेकर ने एपिग्राफिया इण्डिका में एक गुजरात के राष्ट्रकूट राजा कर्क सुवर्णवर्ष का ताम्रपत्र प्रकाशित किया है। उसमें मूलसंघ के सेन आम्नाय के मल्लवादी, उनके शिष्य सुमति और उनके शिष्य अपराजित का उल्लेख है। वह लेख शक संवत् ७४३ का है। डॉ. अल्तेकर का अनुमान है कि न्यायबिन्दु टीका टिप्पणकार यह लेख में उल्लिखित मल्लवादी होना चाहिए। और इनका यह अनुमान धर्मोत्तर के समय के साथ भी ठीक बैठता है। शक ७४३ अर्थात् ई. ८२१ में अपराजित हुए। मल्लवादी अपराजित के गुरु सुमति के भी गुरु थे।

तत्त्वसंग्रह में सुमति नामक दिगम्बर जैनाचार्य का उल्लेख है, ऐसा उल्लेख आचार्य कमलशील ने तत्त्वसंग्रह की टीका में किया है। यदि इन्हीं सुमति को पूर्वोक्त ताम्रपत्र में उल्लिखित सुमति माना जाय तो समय की संगति बैठ जाती है। तत्त्वसंग्रहकार शान्तरक्षित का समय ७०५-७६२ ई. डॉ. भट्टाचार्य ने स्वीकार किया है और उक्त ताम्रपत्र से सुमति के शिष्य अपराजित की ई. ८२१ में स्थिति सिद्ध होती है। डॉ. भट्टाचार्य ने सुमति का समय ई. ७२० के आसपास होने का अनुमान किया है, किन्तु ऐसी स्थिति में गुरु और शिष्य के बीच १०० वर्ष का अन्तर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

होता है। अतएव धर्मकीर्ति का समय आचार्य धर्मकीर्ति की पूर्व-परम्परा का समय ई. ६४० के आसपास यदि माना जाये तो पूर्वोक्त संगति ठीक होती है। शान्तरक्षित ने लिखा है कि पूर्व के व्याख्याकार की [illegible] की है। अतएव ७६ ई. ७५५ के पूर्व [illegible] होगा, क्योंकि शान्तरक्षित ने तिब्बत जाकर ई. ७४९ में बौद्ध विहार का निर्माण किया था। ऐसा प्रमाण प्राप्त होते हैं। विनीतदेव ई. ७७५ के आसपास रहा होगा। धर्मोत्तर को भी शान्तरक्षित के समकालीन मान लिया जाय तो उनको भी [illegible] ई. ७६२ तक आसपास [illegible] की [illegible] में धर्मोत्तर के [illegible] समकालीन का समय ई. ८२१ में होना चाहिए था। और धर्मोत्तर के पूर्व व्याख्याकारों का समय ई. ७००-७५० के बीच रहा होगा।

न्यायबिन्दु के व्याख्याकार पूर्व तिब्बत में धर्मोत्तर से पूर्व चार के [illegible] न्यायबिन्दु की टीका के उल्लेख तो मिलते हैं, किन्तु धर्मोत्तर एवं न्यायबिन्दु टीका की अन्य अनुटीकाओं का उल्लेख नहीं। इससे यह प्रमाणित होता है कि धर्मोत्तर और व्याख्याकारों के बीच अधिक अन्तर नहीं। अतएव व्याख्याकारों का समय ई. ७००-७५० के बीच मानना उचित है और वह उत्तर भारत में [illegible] और [illegible] [illegible] मान लेना ही [illegible]।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यदि व्याख्याकार [illegible] [illegible] [illegible] से अतिप्राचीन व्याख्याकार ही हो सकते हैं। किन्तु [illegible] के बाद व्याख्याकारों ने किसी भी प्रकार से [illegible] नहीं था क्योंकि [illegible] ग्रन्थ की [illegible] से [illegible] के आचार्य दिङ्नाग और धर्मकीर्ति के बीच हुए हैं। [illegible] में [illegible] आचार्य दिङ्नाग का उल्लेख है, किन्तु [illegible] धर्मकीर्ति का [illegible] उल्लेख नहीं है। [illegible] [illegible] परम्परा [illegible] [illegible] ८२४ [illegible] [illegible] आचार्य दिङ्नाग का समय [illegible] ने ई. ३४५-४२५ ई. माना था। [illegible] ८२४ में व्याख्याकारों के [illegible] [illegible] [illegible] उल्लेख [illegible] [illegible] ई. ३५० [illegible]

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इन शब्दों से विद्वान् और उपासकों का [illegible] होते हैं। भावार्थ के प्रामाणिक होने का निश्चय करके [illegible] नहीं कि इनके [illegible] को [illegible] के स्थान पर [illegible] का [illegible] जानने की आवश्यकता नहीं।

मल्लवादी के द्वादशारनयचक्र का प्रकाशन टीका के साथ जैन आत्मानन्द सभा भावनगर से हुआ है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

महाव्रत (मीमांसक)

[illegible] ने प्रपञ्चहृदय में प्रभाकरगुरु, कुमारिल, शालिकनाथ, वाचस्पति और मण्डनमिश्र के साथ महाव्रत का उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट होता है कि वे मीमांसक थे।

न्यायविवेक में (पृ. २४३) "महाव्रतेन — आचार्यप्रवरेण 'मधुरा [illegible]' इत्युदाहृते 'तिक्ता शर्करा' इत्यादि [illegible], [illegible] मधुरं [illegible] 'तिक्ता' इत्यन्वय[illegible] [illegible] न युक्तः; [illegible] [illegible] [illegible] प्रयु-ञ्जीतेति युक्तमिति।" इससे सिद्ध है कि न्यायविवेककार के पहले वे विद्यमान थे। यहाँ पर कुमारिल के ऊपर [illegible] [illegible] के मत का खण्डन किया गया है। इससे वे कुमारिल के परवर्ती हैं।

प्रकरणपञ्चिका-[illegible] (पृ. ५३, [illegible] संस्करण) में — "महाव्रतो नाम [illegible] [illegible]" यह उल्लेख मिलता है। इसका [illegible] न्यायविवेक के साथ भी [illegible] इनका समय [illegible] (पृ. ५१) में ६००-६५० [illegible]

[illegible] में शालिकनाथ के सम्बन्ध में (भा. ४, पृ. १७) में उन्होंने महाव्रत के ~~[illegible] उद्धृत किया है~~ मत को उद्धृत किया है। [illegible] की १२वीं (पृ. ५७) में यह एक श्लोक उद्धृत किया है —

[illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]" (पृ. ५७०-७८)

[illegible] की न्यायरत्नाकर में भी [illegible] के प्रसंग में महाव्रत का यह श्लोक उद्धृत है — [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]"

म. म. [illegible] के [illegible] ([illegible]) में — "[illegible] [illegible]" उद्धृत है। महाव्रत कुमारिल का अनुयायी था, और [illegible] का [illegible] था। [illegible] प्रभाकर का [illegible] तथा [illegible] का [illegible] था। [illegible] ने [illegible] की रचना की थी। इस प्रकार शालिक, महाव्रत, मण्डनमिश्र और वाचस्पति

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के सभी [illegible] के प्रत्याहार उपयुक्त पड़ते हैं। इस प्रयोग [illegible] में
[illegible] को कुछ [illegible] हैं। [illegible] उपयोगी [illegible] का अनुभवी है, क्योंकि सभी
[illegible] का अनुभवी है। वह
के [illegible] से भी सभी [illegible] होता है [illegible] का प्रत्याहार है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महोदधि (भौजंगक)

[illegible] ने इसको उद्धृत किया है। ये अन्य ग्रंथों [illegible] के नाम से भी प्रसिद्ध थे। इनके ग्रन्थ का नाम भी महोदधि था अन्य महोदधि के नाम से भी प्रसिद्ध था। ये [illegible] के अनुयायी थे। इनका मत [illegible] में उल्लिखित है। [illegible] अपने [illegible] (पृ. ३४३) और [illegible] (१२४, २०४) में इनको उद्धृत करते हैं। [illegible] ने प्रबोधचन्द्रोदय में इनको स्मरण किया है —

नैवाश्रावि गुरोर्मतं न विदितं कौमारिलं दर्शनं
तत्त्वं ज्ञातमहो न शालिकगिरां वाचस्पतेः का कथा।
सूक्तं नापि महोदधेरधिगतं माहाव्रती नेक्षिता
सूक्ष्मा वस्तुविचारणा नृपशुभिः स्वस्थैः कथं स्थीयते॥

"महोदधेस्सूक्तं सर्वं करोति निरस्तम्" [illegible] है। टीकाकार ने इसी पद के [illegible] ग्रन्थ को लिया भी इसके [illegible] में कोई विवरण नहीं दिया। [illegible] महोदधि ने [illegible] का [illegible] किया जो महोदधि के [illegible] का [illegible] अतः [illegible] का [illegible] की थी।

प्रबोधचन्द्रोदय की चन्द्रिका टीका में कहा गया है कि — "महोदधिर्नाम [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]" ([illegible], पृ. ५३)। ऊपर के [illegible] के [illegible] में इसको [illegible] का [illegible] कहा है। यहाँ [illegible] टीकाकार इसको [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] (पृ. ५१) में ५००–५५० ई. [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माठरवृत्ति (सांख्य)

ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका के दो प्रमुख व्याख्याकार हैं। तत्त्वसंग्रह पर उनकी टीका में यद्यपि इसका नाम नहीं है, किन्तु कमलशील ने पृ. २० (बड़ौदा) पर माठरवृत्ति का उद्धरण दिया है (ओरियेण्टल, पृ. २२, का. १५)

माठर के समय के संबन्ध में निश्चित प्रमाण नहीं है। कुछ लोग इसको प्रथम शताब्दी में रखते हैं और माठर नाम के एक व्यक्ति से इसको जोड़ते हैं, जो कि चरक और अश्वघोष के समय में था। ये सब कनिष्क के (७८-१२०) समय में विद्यमान थे। कुछ लोग इसको ८ शताब्दी का मानते हैं। इसका कारण है कि माठर ने ईशावास्य और महाभारत को उद्धृत किया है। लेकिन यह इसको परमार्थ से पहले रखना है। इसके बाद से परमार्थ ने माठरवृत्ति का भी चीनी भाषा में अनुवाद किया था। परन्तु यह [illegible], इसका [illegible] के संपादन और बेलवलकर का [illegible] है। लेकिन दोनों इसका समर्थन करते हैं, किन्तु यह ठीक नहीं।

ईश्वरकृष्ण ने वार्षगण्य का अनुसरण किया है। इस दृष्टि से वे प्रथम शताब्दी में नहीं हो सकते। इसके अतिरिक्त माठर दिङ्नाग के न्यायप्रवेश को अपने ग्रन्थ में उद्धृत करते हैं। अतः प्रथम पक्ष ठीक नहीं है। लेकिन यह भी माठर के ग्रन्थ को कमलशील के द्वारा उद्धृत किये जाने से खंडित है, जब कि परमार्थ ने माठरवृत्ति का चीनी भाषा में अनुवाद किया था। उसके आधार पर यह प्रमाणित होता है कि माठरवृत्ति के उपलब्ध संस्करण में बाद में अनेक प्रक्षेप कर दिये गये। इसीलिये उसमें ईशावास्य और महाभारत का उद्धरण मिलता है। माठर का समय लगभग ५०० ई. अनुमान किया है। इसके बाद परमार्थ ने इसका अनुवाद किया और इसके पहले के दिङ्नाग के ग्रन्थ का इसमें उद्धरण मिलता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभी हुई कामायनी का डा. नगेन्द्र के शैव अध्ययन के अध्ययन करते हुए इनमें अत्यन्त प्रभावित होता हूँ। शैवागम आदि और अलंकार का तुलना। इसके कामायनी में इष्ट परिस्थितियों का मूल्यांकन किया है। मेरी अनुभव में भी ग्रन्थ के कुछ अंश छूट गये हैं, ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि उनमें दर्शन, देव आदि सांस्कृतिक के साथ नहीं उपलब्ध होते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माणिक्यचन्द्र (जैन)

[illegible] [illegible] द्वारा उद्धृत है। माणिक्यनन्दि से यह अभिन्न प्रतीत होता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माणिक्यनन्दी (जैन)

इनका परीक्षामुख प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माधव (सांख्य)

न्यायभूषण पृ. ५९७ में यह आचार्य उद्धृत है। श्लोकवार्तिक (१।२४७-५२) में इनका मत उद्धृत है। अपनी व्याख्या में भट्टोम्बेक "सांख्यनायकमाधवस्तु" इस प्रकार इनकी व्याख्या का आरम्भ करते हैं। धर्मकीर्ति की स्वोपज्ञ वृत्ति की व्याख्या में कर्णकगोमी सांख्यनाशकमाधव के रूप में इनका उल्लेख करते हैं (पृ. ५७५)। "माधवस्तु सांख्यनाशक एव स्मृतः" (पृ. ५९७) न्यायभूषण के इस वचन से भी माधव सांख्यनाशक विशेषण से अभिहित था। उम्बेक के ग्रन्थ में भी नायक के स्थान पर नाशक पाठ होना चाहिये।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुक्ताकलश (बौद्ध)

इनका समय २००० ई. अनुमानित है। इन्होंने धर्मो-त्तर के क्षणभङ्गसिद्धि नाम के ग्रन्थ पर विवरण लिखा था। इनका तिब्बती अनुवाद १०४० ई. में हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

पुरुषोत्तमतीर्थ (मीमांसक)

"पुरुषोत्तमतीर्थः यतिः" इस उपाधि के अनुसार मीमांसा में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध इनका मीमांसा संप्रदाय है इनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। [illegible] नाम एक अपूर्व ग्रन्थ इनका मिलता है। प्रायः [illegible] के [illegible] [illegible] इनका समय ११५०-१२२० ई. माना गया है [illegible] [illegible] ६-२२

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

मैत्रेयनाथ (बौद्ध)

मैत्रेयनाथ की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में विवाद किया गया है। प्रो. टुची ने यह सिद्ध कर दिया है कि आचार्य असंग के गुरु मैत्रेयनाथ और [illegible] के गुरु [illegible] हैं। इन दोनों का काल उपलब्ध ही नहीं अनुवादकों के द्वारा इनकी [illegible] [illegible]। इनके अभिसमयालंकार, महायानसूत्रालंकार, मध्यान्तविभंग और महायानोत्तरतन्त्र ग्रन्थ आचार्य के द्वारा अनूदित [illegible] हैं। आचार्य [illegible] मैत्रेयनाथ के भी [illegible] [illegible] हैं।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मोक्षाकरगुप्त (बौद्ध)

इनका तर्कभाषा प्रसिद्ध ग्रन्थ है, जो छप चुका है। इनका समय १०८० ई. माना जाता है। वारेन्द्र के जगद्दल विहार में ये रहते थे। राहुल जी इनका समय १२०८ ई. में मानते हैं। इनकी तर्कभाषा का १३५० ई. में तिब्बती अनुवाद हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

धर्मकीर्ति (बौद्ध)

भारतवर्ष के बौद्ध प्रमाणों ने भी सर्वोत्तम की रचना की है और जैन के ग्रन्थों का खण्डन किया था धर्मकीर्ति ग्रन्थकार प्रमाणवार्तिक ग्रन्थ [illegible] ६५० ई. [illegible] है। इनके ग्रन्थ का तिब्बती अनुवाद १०७६-८२ ई. में हुआ

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(मदन) योगाचार

तत्त्वसंग्रह (गा. ओ. सि.) पृ. ५०२

तत्त्वसंग्रह में मदन शब्द का प्रयोग प्रायः योगाचारी बौद्ध आचार्यों के लिये किया गया है। इसका पता बौद्धमत के अपने अनुकूल भी पड़ता है। जहाँ व्यवहार में ये बौद्ध हैं, तो कहना पड़ेगा कि इस सम्बन्ध में भी कुछ कहना [illegible] [illegible] की आवश्यकता होगी। इसके [illegible] [illegible] (शिवधर्म?) [illegible] से भी कुछ [illegible] होगा। [illegible] तत्त्वसंग्रह का काल इसको [illegible] [illegible] है। ८०० ई. के आसपास (?)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रत्नकीर्ति (बौद्ध)

इनकी निबन्धावली (कृति) अनन्तलाल ठाकुर के द्वारा सम्पादित होकर काशी प्र. जा. रि. इ. पटना से १९५७ में प्रकाशित हो चुकी है। ये ज्ञानश्री के शिष्य थे। ज्ञानश्री के ग्रन्थ भी इन्हीं के द्वारा सम्पादित होकर इसी से १९५९ में प्रकाशित हो चुके हैं। गुरु शिष्य दोनों ने वाचस्पति का प्रत्याख्यान किया है और अलब्ध उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर वाचस्पति का समय ८४१ ई. निर्धारित किया। उदयना-चार्य ने ज्ञानश्री और रत्नकीर्ति दोनों का प्रत्याख्यान किया है। इसलिए उदयन का समय वाचस्पति की अपेक्षा बाद में ९८४ ई. ठीक जान पड़ता है, यह अधिक उचित प्रतीत होगा। क्योंकि रत्नकीर्ति का समय ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित किया गया है। द्र. ज्ञानश्रीमित्र। रत्नकीर्ति बंगाली थे। इनके कुछ पद्य सुभाषितरत्नकोष में संकलित हैं।

रत्नाकरशान्ति के प्रमाण पर उदयन ने रत्नकीर्ति के पद्यों को दो स्थानों पर उद्धृत किया है, आत्मतत्त्वविवेक (पृ. ४३५, ४५२ ...)। ये दोनों उद्धरण रत्नकीर्ति के चित्राद्वैतसिद्धि में उपलब्ध हैं। इनके दस निबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने तीन निबन्ध और लिखे थे। इनके निबन्धों में इनके गुरु ज्ञानश्रीमित्र के निबन्धों का संक्षेप है। रत्नकीर्ति और ज्ञानश्रीमित्र उदयन के द्वारा नामग्रहणपूर्वक खण्डन किये जाने के कारण अद्वितीय विद्वान थे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मत्तवज्र (बौद्ध)

इनका समय १०५० ई. माना जाता है। इनके ग्रन्थ युक्तिप्रयोग का तिब्बती अनुवाद १०७० ई. में हुआ था।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

रत्नाकरशान्ति (बौद्ध)

इनका समय 1025 ई. माना है। इनके जन्मतिथि और [illegible] का [illegible] [illegible] 1050 ई. में हुआ था।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रविगुप्त (बौद्ध)

रविगुप्त प्रज्ञाकर का प्रधान शिष्य था और उसने भी प्रज्ञाकर के अलंकार पर व्याख्या लिखी। जिन ने रविगुप्त के मत का खण्डन किया था। इनका समय राहुलजी ने ७२५ ई. में रक्खा है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रावण (वैशेषिक)

वैशेषिक सूत्रों पर रावण कृत भाष्य के उल्लेख और उद्धरण प्राप्त होते हैं। प्रशस्तपादभाष्य और व्योमशिवाचार्य के रचनाकाल (५५० – ८००) के बीच में इस भाष्य की रचना हुई होगी। प्रकटार्थविवरण (पृ. २०८) में यह उद्धृत है। [illegible] में भी यह उद्धृत है। इसका [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] में उल्लेख है। पद्मनाभमिश्र ने वैशेषिक किरणावलीभास्कर की भूमिका में कहा है कि उदयन ने अपनी टीका करने के लिए रावणभाष्य से सहायता ली थी। किरणावली में एक स्थान पर वैशेषिक भाष्य की चर्चा करते हैं। जहाँ यह पद्मनाभ सिद्ध करते हैं कि यह भाष्य रावणकृत था। किरणावलीभास्कर में [illegible] ने भी रावण और इस भाष्यकार का [illegible] का है।

मुरारि की अनर्घराघव टीका में एक वैशेषिक रावण का उल्लेख मिलता है। वैशेषिक रावण के इसकी [illegible] [illegible] [illegible] है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

रोहगुप्त (जैन वैशेषिक)

वीर निर्वाण से ५४४ वर्ष बीतने पर इनका जन्म हुआ था। ये उलूक गोत्र में पैदा हुए थे। इन्होंने षट् पदार्थों का निरूपण किया था। इस लिये इनको षडुलूक भी प्रसिद्ध है। इन्हीं के मत से त्रैराशिक दर्शन की उत्पत्ति हुई। ये ही रोहगुप्त वैशेषिक के प्रणेता थे, ऐसा श्वेताम्बर सम्प्रदाय में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण आदि प्रतिपादित करते हैं।

"षट्पदार्थीं बाह्यैस्तैः स्व[illegible] गुरुणापि प्रतिषिद्धः" वररुचि के उपजातिजातिक नाटक (पृ[illegible], पृ. १३१) में यह उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि षट्पदार्थवादी प्राचीन वैशेषिक तथा सप्तपदार्थवादी नव्य वैशेषिकों के दरम्यान इस मत का प्रचलन थे। इसमें भी बहुत से अवान्तर प्रस्थान थे। सैद्धान्तिक और तार्किक वैशेषिकों का उल्लेख [illegible] आदि में है। "अर्थ इति द्रव्यगुणकर्मसु" (८।१४) इस वैशेषिक सूत्र को लेकर कुछ विद्वान्, प्राचीनतम वैशेषिक तीन पदार्थ मानने वाले थे, ऐसा कहते हैं। इनका द्रव्य, गुण और कर्मवाद जैनों से भी सम्बन्ध बतलाया जाता है। इत्यादि से जैन ग्रन्थों में प्रसिद्ध वैशेषिक आचार्य प्रणेता षडुलूक रोहगुप्त की कथा, की समीक्षा की गई है। इसके लिये आवश्यक भाष्य और वैशेषिकवृत्ति (चन्द्रानन्द) की अंग्रेजी भूमिका (पृ. ५-७) देखिये।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

(भट्ट) वराह स्वामी (बौद्ध)

ज्योतिरसमुच्चय में हर्षकीर्ति ने इनको उद्धृत किया है
तथाहि भट्टवराहस्वामी —

[illegible] स्वयम्भुवं [illegible] के [illegible]।
[illegible] [illegible] ऽधिगम्यते। इति [illegible]॥

(पृ. २)

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

वसुबन्धु (बौद्ध)

तत्त्वसंग्रह की बड़ौदा संस्करण की भूमिका में इनका समय २८०–३६० ई० निश्चित किया गया है। राहुल सांकृत्यायन प्रमाणवार्त्तिकभाष्य की भूमिका में इनका समय ४०० ई. मानते हैं। ये गान्धार देश के थे। ये आरंभ में वैभाषिक थे। अपने भाई असंग के प्रभाव से बाद में योगाचार हो गये। असंग के गुरु मैत्रेयनाथ थे। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की और इनका देहावसान ८० वर्ष की अवस्था में हुआ। वैभाषिक संप्रदाय और योगाचार इनके सम्प्रदायाधिप माने जाते हैं।

कुमारजीव ने ४०१–४० ई. के बीच में और परमार्थ ने ५४६–५६० ई. के बीच में वसुबन्धु की जीवनी लिखी थी। ७३० ई. तक कुमारजीव द्वारा लिखित जीवनी विनष्ट हो चुकी थी। परमार्थ की लिखी जीवनी चीनी में उपलब्ध है। इसके अनुसार वसुबन्धु चन्द्रगुप्त (३२०–३३०) के समय में हुए थे। ये बुद्धमित्र के शिष्य थे। बुद्धमित्र को सांख्य दार्शनिक विन्ध्यवास ने शास्त्रार्थ में हरा दिया था। (वसुबन्धु के समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है) कुछ लोग इनको २८०–३६० ई. का मानते हैं, तो अन्य ४२०–५०० का। परमार्थ ने ईश्वरकृष्ण, दिङ्नाग, शंकरस्वामी, हरिभद्रसूरि और सांख्यकारिका के वृत्तिकार माठर के ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया है। वसुबन्धु के जीवनचरित्र परमार्थ ने यह लिखा, नरसिंहगुप्त प्रतीत नहीं होता।

चीन के त्रिपिटक में वसुबन्धु के ३६ ग्रन्थ संगृहीत हैं। अभिधर्मकोश इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। यह वैभाषिक मत के खण्डन के लिये लिखा गया है। इस पर यशोमित्र की स्फुटार्थ टीका है। इस पर गुणमति और वसुमित्र की टीकाएं भी थीं।

अनन्तरवर्ती वसुबन्धु आचार्यों ने भी वसुबन्धु कहे हैं। [illegible]
इनके [illegible] के सम्बन्ध में [illegible] उपलब्ध [illegible]
स्पष्ट होता है। (द्रष्टव्य - [illegible], पृ. 80, 115, 118
[illegible], पृ. 203, 210)। वसुबन्धु की [illegible]
[illegible] कहे जाते हैं, किन्तु ऐसा नहीं।

वसुबन्धु के [illegible] का [illegible] ने 450 ई. में [illegible]
[illegible]।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(भदन्त) वसुमित्र (बौद्ध)

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ५१४ में उद्धृत ।
ये कनिष्क कालीन ५०० अर्हतों में से एक थे। महाविभाषा के चार स्तम्भों में [illegible] वसुमित्र भी थे लिखा हैं। नैञ्जियो कैटलाग में इनके चार ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। इनका समय १०० ई. माना जाता है। वसुबन्धु के द्वारा इनके सिद्धान्तों की आलोचना की गयी है। कनिष्क के समय में ५०० भिक्षुओं में संग्रहीत अभिधर्म~~विभाषा~~ महाविभाषा के संकलन के लिये प्रमुख व्यक्ति थे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाचस्पति मिश्र (परवर्ती)

वाचस्पति के विविध ग्रन्थों का व्याख्या में लिखे गये सभी ग्रन्थ उपलब्ध हैं; केवल कुछ व्याख्याओं का आधार नहीं मिला है। तार्किकाचार्य के नाम से वे नैयायिक के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। (तार्किकाचार्य JASB, Vol XXII, पृ. 289)। यद्यपि और इनके समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग इनको उदयन का पूर्ववर्ती और कुछ परवर्ती मानते हैं। उदयन के समय पर वाचस्पति ने तात्पर्यटीका में उदयन को उद्धृत किया है। उदयन का समय ९८४ ई० को अप्रामाण्य घोषित है क्योंकि वे श्रीधराचार्य का परिशिष्ट उन्हीं भाष्य के पश्चात् थे। पर वाचस्पति उदयन के बाद का मानना उचित है। न्यायसूची निबन्ध में वाचस्पति ने वसु-अंक-वसु वत्सर उसका रचना काल दिया है। विक्रम संवत् मानने से यह तिथि ८९८-८४१ होती है, ये उदयन के पूर्ववर्ती हो जाते हैं। शकसंवत्सर में उदयन का पर पीछा मानना पड़ेगा। शक संवत् मानने से यह तिथि ९७६-७७ ई. पड़ेगी। इसमें कुछ पहले इनका काल होगा। आधुनिक ऐतिहासिक वाचस्पति को दसवीं सदी का मानते हैं।

वाचस्पति मिश्र ने भामती में बताया है कि उन्होंने सभी न्यायग्रन्थों को बनाने के बाद तत्त्वकौमुदी, तत्त्ववैशारदी और भामती बनायी।

वाचस्पति मिश्र के मीमांसा ग्रन्थ न्यायकणिका को बाद के लेखकों ने अनेक स्थलों पर उद्धृत किया है।

वाचस्पति मिश्र ने न्यायसूचीनिबन्ध की भी रचना की थी। वैशेषिक दर्शन पर वाचस्पति ने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा।

तत्त्वबिन्दु भूमिका में रामस्वामी, शास्त्री ने ८९८ को विक्रम संवत् मान कर भी वाचस्पति का समय स्वीकार किया गया है। उदयन का समय लगभग ९८४ ई. माना गया है। इस आधार पर वाचस्पति का समय ९००-९८० ई. के बीच में और उदयनाचार्य के बाद निर्धारित है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तात्पर्यटीका, बनारस संस्करण, पृ. १२३ में यह श्लोक है —

त्रिलोचनगुरून्नीतमार्गानुगमनोन्मुखैः ।
यथामानं यथावस्तु व्याख्यातमिदमीदृशम् ॥

इससे स्पष्ट होता है कि त्रिलोचन इनके गुरु थे। भामती में एक नृग राजा की चर्चा है। इसको १०१८ विक्रम संवत में राज्य कर रहे [illegible] राजा कालिदेव को पूर्वज माना गया है। इसको कुछ [illegible] लोगों ने [illegible] माना है। (यह तो है वाचस्पति की पुस्तकों [illegible] प्रतीत होती है, पूर्व संवत् को [illegible] मानकर [illegible] होती चाहिए।

वाचस्पति का ग्रन्थ न्यायकणिका मण्डन मिश्र के ग्रन्थ विधिविवेक की टीका है। तत्त्वबिन्दु एक प्रकरण ग्रन्थ [illegible]। सांख्यकारिका पर की टीका है सांख्यतत्त्वकौमुदी, योगभाष्य पर तत्त्ववैशारदी, न्याय में तात्पर्यटीका तथा न्यायसूचीनिबन्ध है। वेदान्त में इन्होंने मण्डन मिश्र की ब्रह्मसिद्धि पर ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा लिखी थी। इसकी कोई प्रति अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है। भामती इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। भामती पर मण्डन मिश्र का प्रभाव होने के कारण ही वेदान्त में भामती-प्रस्थान तथा इससे विवरण प्रस्थान बन गया। विवरण प्रस्थान के प्रतिष्ठापक प्रकाशात्मयति के अनुसार [illegible] वाचस्पति का [illegible] पद्मपादाचार्य तथा उनके व्याख्याता विवरणकार प्रकाशात्मयति थे।

यन्न्यायकणिका-तत्त्वसमीक्षा-तत्त्वबिन्दुभिः ।
यन्न्याय-सांख्य-योगानां वेदान्तानां निबन्धनैः ॥

वाचस्पति का अन्तिम ग्रन्थ भामती है। मण्डन की ब्रह्मसिद्धि पर इनकी ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा टीका थी पर ग्रन्थ अब नहीं मिलता। इनके अन्य भी ग्रन्थ उपलब्ध हैं; वे टीकाकार या तात्पर्यार्थ के नाम से प्रसिद्ध हैं, वाचस्पति के नाम से। वाचस्पति के पहले अनेक ऐसे आचार्य हुए हैं, जिन्होंने बौद्धों का खण्डन किया था। उद्योतकर के अनन्तर धर्मकीर्ति और [illegible] धर्मकीर्ति ने बड़े [illegible] और [illegible] उनके बाद। (तात्पर्य टीका-पाठ, पृ. ९२, ९५, १००, २४२, तथा ३५, ४०, ७८, ७३, १०७)। इसके अतिरिक्त [illegible] [illegible] के नाम [illegible], [illegible] और [illegible] को उद्धृत करते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

से सभी आचार्य वाचस्पति के पूर्ववर्ती हैं।

भामती के अन्त में वाचस्पति ने राजा नृग का उल्लेख किया है। न्यायकणिका (पृ. २५०) में आदिशूर उद्धृत है। राढ देश के राजा आदिशूर का समय ८०० ई. माना जाता है। कन्नौज से पाँच ब्राह्मणों के आमन्त्रण के प्रसंग का ही [illegible] आदिशूर को [illegible] आदिशूर को उद्धृत है, [illegible] का नाम नहीं। इस प्रकार [illegible] आदिशूर [illegible] होता है।

(१.) वाचस्पति का समय निम्न कारणों से नवमी शताब्दी से प्राचीन नहीं हो सकता। वाचस्पति मीमांसा और वेदान्त में मण्डन का अनुयायी है। मण्डन के [illegible] न्यायकणिका में [illegible] उद्धृत है। [illegible] है। [illegible] वाचस्पति [illegible] है। [illegible] के [illegible] मण्डन का समय [illegible] के बाद [illegible] होगा। [illegible] उद्योतकर [illegible] के समय में [illegible] है। [illegible] उद्योतकर का समय [illegible] (८०० ई.) में [illegible] और मण्डन का [illegible] होगा [illegible] कुमारिल के [illegible] में २०० वर्ष का अन्तर [illegible] मण्डन [illegible] कुमारिल और [illegible] नहीं, [illegible] (न्यायकणिका, पृ. ५५, १०४)। [illegible] कुमारिल की [illegible]। [illegible] मण्डन का समय ८०० ई. के पहले नहीं हो सकता। मण्डन और वाचस्पति के बीच [illegible] है। [illegible] न्यायकणिका में वाचस्पति [illegible] और [illegible] में [illegible] नहीं हो सकता। [illegible] वाचस्पति के [illegible] (पृ. २४८, २५७) में [illegible] के कुमारिल [illegible] है। [illegible] वाचस्पति का समय ८०० ई. से पहले नहीं हो सकता।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. माठर सांख्यकारिका के बहुत प्राचीन टीकाकार थे। सांख्यसप्तति का समय ५५० ई. से पहले नहीं रखा जा सकता। वाचस्पति ने माठर के [illegible] पाठ के पूर्व का उल्लेख [illegible] में किया है। इसलिए इनका समय ८०० ई. से पहले नहीं हो [illegible]

3. श्रीधर की न्यायकन्दली में अनेक ऐसे पद्य उपलब्ध हैं, जो कि स्पष्ट प्रशस्तपाद के भाष्य वाचस्पति के ग्रन्थों में भी मिलते हैं, किन्तु वे वाचस्पति से पहले के हैं नहीं। उपर्युक्त तात्पर्यटीका परिशुद्धि टीका के अनुसार उद्योत का [illegible] है कि [illegible] वाचस्पति प्रायः [illegible] [illegible] के [illegible] नहीं है। [illegible] [illegible]। इसलिए वाचस्पति का समय [illegible] का [illegible] [illegible] चाहिए। 4. [illegible] [illegible] के पूर्ववर्ती हैं, ऐसा [illegible] में (९.१६)। [illegible] का [illegible] वाचस्पति [illegible] का [illegible] होगा। [illegible] (२२०-२१) में वाचस्पति के [illegible] [illegible] के [illegible] पर [illegible] पर [illegible] [illegible] वाचस्पति [illegible] को भी [illegible] [illegible] हैं, जिससे [illegible] ८४१ ई. में [illegible] [illegible]। इसप्रकार वाचस्पति [illegible] का [illegible] होगा, जो कि [illegible] और [illegible] के [illegible] हो। 5. वाचस्पति को उद्धृत करने वाला प्रथम [illegible] [illegible] [illegible] इसके बाद [illegible] और [illegible] का [illegible] [illegible] भी [illegible] ने भी वाचस्पति को उद्धृत नहीं किया, जो कि [illegible] और [illegible] [illegible] था। [illegible] की [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] में [illegible] का [illegible] नहीं था। [illegible] के [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] पड़ता कि [illegible] १०४१ में भी [illegible] थे। इसलिए वाचस्पति का समय १० [illegible] से पहले नहीं हो [illegible]।

6. उदयन के गुरु [illegible] के [illegible] में पहले वाचस्पति को उद्धृत [illegible] [illegible] की [illegible] का [illegible] [illegible] का समय १०००-१०५० ई. के बीच में [illegible] होगा। 7. न्यायसूचीनिबन्ध के [illegible] समय [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] ८४१-४२ ई. [illegible]। [illegible] का [illegible] ८९८ ई. में हुई। [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] पड़ता [illegible] [illegible] ८४१-४२ [illegible] [illegible] से २०० वर्ष [illegible] है। इसप्रकार न्यायसूचीनिबन्ध का [illegible] [illegible] [illegible] समय [illegible] होगा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

वात्स्यायन (नैयायिक)
(पक्षिलस्वामी)

अक्षपाद के न्यायसूत्र के ये प्रथम भाष्यकार हैं। इनका काल निर्धारण में अनेक स्थलों पर अवलम्बित है। डा. विद्याभूषण मानते हैं कि वात्स्यायन ने वसुबन्धु के मत की आलोचना नहीं की है, इसलिये वे उनसे पहले हुए हैं। दिङ्नाग ने न्यायभाष्यकार की आलोचना की है, इसलिये ये अवश्य ही उनसे पहले रहे थे। न्यायसूत्र की प्रतिलिपियाँ तीनों वर्धमान के बाद भी न्यायभाष्य का प्रभाव लोकप्रिय होता रहा। आज के उपलब्ध न्यायसूत्र का कौन अध्यायों में उपलब्ध स्वरूप से कुछ भेद है। इसलिये विद्वानों का कहना है कि ये सूत्र मूलरूप में उपलब्ध नहीं हैं। इनमें शून्यवाद, क्षणिकवाद, वाह्यार्थविज्ञानवाद बाद में जोड़े गये। हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार (JBORS, भा. ८, ६. १३, २० वात्स्यायन के पहले इन सूत्रों को जोड़ दिया गया था। उन्होंने सूत्रों में कुछ संशोधन करके जोड़ दिये। विज्ञानवाद का खंडन करने वाले सूत्र प्रथम ग्रन्थ में नहीं आता है। वसुबन्धु के प्रथम आचार्य नागार्जुन हैं। इस अवस्था में न्यायसूत्र का काल २०० ई माना पड़ेगा, क्योंकि नागार्जुन का काल १८१ ई. माना गया है। विज्ञानवादसूत्र की रचना तीसरी शती के प्रारम्भ में हुई। अत: इसके बाद ही लिखे भाष्यों में २५०-३०० के बीच में वात्स्यायन का समय मानना होगा। वसुबन्धु ने इनके मत की आलोचना की है? इसलिये वात्स्यायन को इनके पहले मानना होगा। वात्स्यायन का ईश्वरकृष्ण पर प्रभाव है और दिङ्नाग ने तो स्पष्ट रूप से इनके मतों की आलोचना की है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

वादिदेव (जैन)

जैन दार्शनिकों में वादिदेव (१०८६-११६९) ने धनपाल को उद्धृत किया है। स्याद्वादरत्नाकर में वे ऋषभ-पञ्चाशिका को उद्धृत करते हैं, इसी प्रकार तिलकमञ्जरी को भी। और भी कुछ उद्धरण धनपाल के बताये जाते हैं। पं. महेन्द्रकुमार जैन ने न्यायकुमुदचन्द्र की भूमिका में लिखा है कि प्रभाचन्द्र धनपाल को उद्धृत करते हैं। पर ठीक नहीं है क्योंकि प्रभाचन्द्र का समय १०२० ई. के आसपास है। धनपाल का समय [illegible] है। ये इनके [illegible] कैसे उद्धृत कर सकते हैं। अतः वह [illegible] और आचार्य का [illegible] से [illegible] है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

वादीन्द्र वागीश्वर (~~वैशेषिक~~)

परमांग से प्रकाशित अज्ञातकर्तृक वैशेषिकसूत्रवृत्ति में सौगतवादीन्द्रवागीश्वरप्रभृतयः (पृ. ३८) इस प्रकार पद उद्धृत है। इस उद्धरण का परिचय डा. वी. राघवन् ने दी वर्क्स आफ वादिवागीश्वर, ब्रह्मविद्या, जि. ८, पृ. ३५-४० में दिया है। इनका समय ९५० - ११०० ई. के बीच में स्वीकार किया है इनका उल्लेख न्यायवैशेषिक के विशिष्ट आचार्य के रूप में मिलता है। इनकी मानमनोहर नामक वैशेषिक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि उपलब्ध है। न्यायकलानिधि भी इनका ग्रन्थ माना जाता है। इनकी न्यायसूत्रों की वृत्ति का भी एक अंश उपलब्ध है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(भट्ट) वादीन्द्र (वैशेषिक)

ये प्रदीप के ग्रन्थकार हैं। [illegible] अंकित कर्णाट [illegible] के रचयिता ने वादीन्द्र के कणादसूत्रनिबन्ध के कुछ को संपादन किया है। इसका दूसरा भाग अप्रकाशित था। इसके कणादसूत्रनिबन्ध की प्रति उपलब्ध है। यह व्याख्या [illegible] की दृष्टि से उस ग्रन्थ से [illegible] रखती है। इनका [illegible] [illegible] गया है। [illegible] वैशेषिक सूत्रों की एक विस्तृत व्याख्या है।

भट्ट वादीन्द्र और वैशेषिक – अनन्तलाल ठाकुर JOI वाल्यूम १०, नं. १, पृ. २२-३१

भट्ट वादीन्द्र कणादसूत्रनिबन्ध में बताते हैं कि इसके [illegible] केवल [illegible] वैशेषिक सूत्र था। उन्होंने [illegible] करके जिस सूत्र का उपदेश [illegible] किया, वही आज उपलब्ध वैशेषिकसूत्र है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वार्षगण्य (सांख्य)

वसुबन्धु की जीवनी के लेखक परमार्थ के अनुसार ये विन्ध्यवासी के गुरु थे। इनका मत वाचस्पति ने भामती (2.1.3) में और तत्त्ववैशारदी (यो. ४.१३) में उद्धृत है। इनका समय 230 - 300 ई. माना जाता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्रिलोचन (नैयायिक)

ज्ञानश्री और उनके शिष्य रत्नकीर्ति दोनों ने इनको उद्धृत किया है। ईश्वरसाधनदूषण प्रकरण में इनका उल्लेख होने से लगता है इन्होंने इसी संबन्ध का कोई ग्रन्थ लिखा होगा। वाचस्पति ने न्यायकणिका तात्पर्यटीका में त्रिलोचन गुरु का एक उद्धरण किया है (त्रिलोचन, [illegible], [illegible], त्रिलोचन)। अनेक परवर्ती और आदि विद्वान् एक मत हुए हैं। कहीं पर भी इनका [illegible] नहीं मिलती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्यानन्द (जैन)

इनका कोई ग्रन्थ प्रमाणपरीक्षा है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विनीतदेव (बौद्ध)

इन्होंने धर्मकीर्ति के न्यायबिन्दु, हेतुबिन्दु, सम्बन्ध-परीक्षा, वादन्याय और सन्तानान्तरसिद्धि पर अपनी टीकाएं लिखी थीं। धर्मोत्तर ने विनीतदेव की टीका का कई स्थानों में खण्डन किया है (पृ. 5, 31, 34), [illegible] (पृ. 15, 16, 25)। इससे निश्चित होता है कि विनीतदेव धर्मोत्तर से पहले हुए। राहुल जी ने वादन्याय के परिशिष्ट में विनीतदेव को धर्मोत्तर के बाद स्थान दिया है, वह ठीक नहीं है। [illegible] ने [illegible] का कहना है कि विनीतदेव वृद्ध थे और धर्मोत्तर युवा। डा. विद्याभूषण ने विनीतदेव का समय ई. 700 के आसपास रखा है। डा. विद्याभूषण ने विनीतदेव के एक समयभेदोपरचनचक्र का उल्लेख किया है (पृ. 321)। राहुल जी इनका समय 775 निर्धारित करते हैं। इनकी [illegible] टीका का तिब्बती अनुवाद 840 ई. में हुआ। इनकी न्यायबिन्दु टीका का 825 ई. में, हेतुबिन्दुटीका का 850 ई. में, सम्बन्धपरीक्षाटीका का 850 ई. में, वादन्याय का टीका का 1050 ई. में तथा सन्तानान्तरसिद्धि टीका का 850 ई. में तिब्बती अनुवाद हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विन्ध्यवासी (सांख्य)

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ५७५ में उद्धृत है।

परमार्थ ने वसुबन्धु की जीवनी में लिखा है कि इनके गुरु बुद्धमित्र को विन्ध्यवासी सांख्य ने शास्त्रार्थ में हरा दिया था और अयोध्या के विक्रमादित्य के हाथ से पारितोषिक प्राप्त किया था। विन्ध्यवासी पर्वत गुफा में जाकर रहने लगे और इनका वहीं देहान्त हो गया। वसुबन्धु इनसे शास्त्रार्थ करने गये किन्तु इनकी मृत्यु हो जाने के कारण वे इनसे शास्त्रार्थ न कर सके किन्तु विन्ध्यवासी के मत के खण्डन में इन्होंने परमार्थसप्तति की रचना की। विन्ध्यवासी तो वसुबन्धु के पूर्व कुछ होते हैं और इनका कोई ग्रन्थ भी प्राप्त नहीं होता।

कुछ लोग विन्ध्यवासी और ईश्वरकृष्ण को एक मानने का प्रयत्न करते हैं। यह उचित नहीं है। कमलशील इन दोनों के मत भिन्न-भिन्न उद्धृत करते हैं और विन्ध्यवासी को रुद्रिल के नाम से परिचित कराते हैं। तत्त्वसंग्रह में उद्धृत (पृ. २४) मतेन यदि इत्यादिक श्लोक वसुबन्धु की परमार्थसप्तति द्वारा प्रतीत होता है।

हिरण्यसप्तति, सुवर्णसप्तति, सांख्यसप्तति, परमार्थसप्तति।

विन्ध्यवासी के उद्धरण योगसूत्र भोजवृत्ति (४.२२) श्लोकवार्तिक (नौ सं. पृ. ७०४) स्याद्वादमंजरी (पृ. ११७) में हैं।

विन्ध्यवासी और ईश्वरकृष्ण समकालिक आचार्य माने गये हैं। कृष्णस्य गुणरत्न और षड्दर्शनसमुच्चयटीका। परमार्थ के अनुसार विन्ध्यवासी के गुरु वार्षगण्य थे। वार्षगण्य का उल्लेख भामती (२.१.३) और न्यायवार्तिकटीका में है (४.२, १.१४)। ईश्वरकृष्ण ने या उनके टीकाकार माठराचार्य ने अपने गुरु का उल्लेख नहीं किया। कुछ लोग देवल को ईश्वरकृष्ण का गुरु मानते हैं। किन्तु प्रमाण अभाव इस मत को ठीक सिद्ध नहीं करता।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वसुबन्धु का जीवनी लेखक परमार्थ चीनी ग्रन्थों के आधार पर उज्जैनी का ब्राह्मण था। इसका जन्मकाल ४०० ई. माना जाता है। इसकी मृत्यु ८० वर्ष की अवस्था में ४८० में हुई। परमार्थ ने वसुबन्धु को [illegible] था और [illegible] मृत्यु अयोध्या में ८० वर्ष की अवस्था में हुई।

कुमारजीव का समय २६०-३३० ई., [illegible] का समय २४०-२२० और [illegible] का समय २३०-३०० ईसवी का प्रमाण है।

अनार्विन्दपतिकारसिसान्द्रावितन स्वान्तोद्भूतस्वंसिनी-
स्तुच्चैस्पोद्भेसतलात त तेडूः मधूरवो त्कार:।
आत्मर्दो न विगतां: प्रातिहतो नान्दैरपूवो सवि-
नीसतमसत गमासि स्तास्वैकल प्रारम्भ समन्तावित:॥

(न्यायवार्तिकतात्पर्य, पृ. ५४४)

आचार्य दिङ्नाग के प्रसंग में यह श्लोक उद्धृत है। जहाँ पर
विन्ध्यवासी के [illegible] कहते हैं दिङ्नाग, ऐसी [illegible]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्वरूप (नैयायिक)

न्यायभूषण के १८७वें पृष्ठ में यह आचार्य स्मृत हैं। (पृ. १७५)
"न्यायभाष्यटीकावार्त्तिकपञ्जिकायां विश्वरूपोपाध्यायैरप्युक्तम्:" अर्थात् प्रशस्तकार दुर्वेक मिश्र के इस वचन से मालूम होता है कि ये न्यायसूत्र के टीकाकार थे। न्यायसूचीनिबन्ध विवरण में वाचस्पति ने भी विश्वरूप को अनेक स्थलों पर उद्धृत किया है।

उद्योतकर के पहले विश्वरूप का काल होने से ये उनसे प्राचीन आचार्य होने चाहिये। तात्पर्यटीका में इनका उल्लेख नहीं है।

विश्वरूपः पाक्षिलस्वामिभाष्यस्य परः टीकाकारः इति भाष्यटीका-टिप्पणम् (न्यायभूषण, पृ. १८७)

अर्थात् तत्त्वप्रदीप में विश्वरूप को मतविचार ... "यदुक्तम् ... प्रणिधानवाक्ये विश्वरूप-पादैरप्युक्तम् ... :" (पृ. २४०) यहाँ यह स्पष्ट है कि नव्यमीमांसा के पहले विश्वरूप प्राचीन हैं। अतः ये भी विश्वरूप ... और अधिकार हैं। उद्योतकर पाशुपताचार्य थे, इस दृष्टि से विश्वरूप का पाशुपत ... भासर्वज्ञ की न्यायसार पाशुपत मत के प्रवर्तक के सम्प्रदाय के प्रधान थे। पाशुपत मत ... के ... से पहले के ... था।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

व्योमशिव (वैशेषिक)

व्योमशिव ने अपनी प्रशस्तपादभाष्य की टीका में धर्मकीर्ति के मत का खण्डन किया है। इनकी टीका का नाम व्योमवती है। व्योमशिव तीन प्रमाण मानते हैं, अन्य वैशेषिकों के अनुसार दो नहीं। इनका समय ११०० ई में उदयन और श्रीधर के मध्य माना है (न्यायकन्दली-भूमिका, पृ. ८)। यह उचित नहीं है। आगे देखिये।

आप्तपरीक्षा (... की व्याख्या) और प्रमाणपरीक्षा (८५५ ई.) में दो प्रकार के वैशेषिक उल्लिखित हैं — सिद्धान्त वैशेषिक और तार्किक वैशेषिक। इन दोनों में चार प्रमुख अन्तर हैं — १. प्रथम प्रत्यक्षवादी हैं, द्वितीय अनेकप्रमाणवादी; २. प्रथम रूपादि के ज्ञान से जाति और इनके पदार्थ निर्विकल्प से प्रतिपादन करते हैं; ३ द्वितीय ज्ञान को उपादानकारक मानते हैं, जबकि प्रथम उस ज्ञान की अपना उत्पत्ति का सब [illegible] स्वीकार करते हैं। प्रथम सत्य को भी प्रमाण मानते हैं, जबकि द्वितीय दोनों प्रमाण मानते हैं (जैन [illegible], पृ. ४०-४१)। इससे यह स्पष्ट होता है कि सिद्धान्त वैशेषिक और सिद्धान्तके अनुयायी थे। आगम को प्रमाण मानते होंगे जो वेद नहीं था। प्राचीन [illegible] प्रमाणों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि सिद्धान्त वैशेषिकों का स्थिति न की व्याख्या के पहले भी प्रसिद्ध थी। व्योमशिव ने भी कुछ प्रसङ्गों में अन्य वैशेषिकों से भिन्न हो ... की व्याख्या के आधार में तीसरे प्रमाण ... । इनका समय प्रशस्तपादभाष्य और ... (५५५ ई.) के बीच मानना उचित होगा। [illegible] में उदयन ने आदर के साथ व्योमशिव का उल्लेख किया है (जैन [illegible], पृ ३५)।

प्रशस्तिकार एवं हार्डिन्ज कलक्टर — के. के. हां[illegible]

व्योमवती प्रशस्तपादभाष्य की प्राचीनतम टीका मानी जाती थी (न्यायकन्दली भूमिका, लखनऊ, भूमिका, पृ. २१)

वर्धमान ने किरणावली प्रकाश में स्पष्ट ही उल्लेख करते हुए कहा पर आप प्रकाश में भाष्यार्थ पद से व्योम शिवाचार्य टीका का ही व्याख्यान करते हैं। अतः वर्धमान के इस कथन से यह भी प्रमाणित होता

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है कि कल्पसूत्र ज्योतिष के बाद हुए। (कौषीतकी (पृ. ३४२-४३), कठ. [illegible] (पृ. ६४, १६८-७), [illegible] (पृ. ३८०-१) और [illegible] (पृ. ३८३) में एक ही प्रकार के विचार हैं, जो कि [illegible] में सूत्र के आधार उपलब्ध हैं। ज्योतिष स्पष्टतया उपनिषद और सूत्र के पूर्ववर्ती हैं। (द्रष्टव्य [illegible], पृ. १२। हिन्दी [illegible] तथा [illegible])। कौषीतकी (पृ. ३७२) [illegible] का [illegible] हो गया है, जो कि [illegible] का [illegible] था। [illegible] (४४८-७२४) [illegible] ५७० ई. के [illegible] कौषीतकी [illegible], [illegible] कहा [illegible] ज्योतिष [illegible] (द्र. कौषीतकी, पृ. ४६, १२७, ३०८, ३७७, ५४६, ५५७, ५६५, ५८४, ५८६)। इनके [illegible] नहीं [illegible] में [illegible] और I. H Q के १० वें पृ. के १९५५ ई. में [illegible] नहीं है। [illegible] १० की [illegible] नहीं [illegible]। भा. हि. इ. के [illegible] में भा. ३, पृ. ४४ में ज्योतिष को [illegible] का [illegible] उसके [illegible] ५०० ई. का [illegible] नहीं। कौषीतकी में [illegible], [illegible], [illegible] ज्योतिष का [illegible] और [illegible] है, [illegible] नहीं है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शङ्करस्वामी (नैयायिक)

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. १०४, २३८, २४८, ३०१, ३०५, ३०७, ३१४, ४८६, ४७०; (बं. सं.) ८१, १७७, २०३, २४३, २४७, २५०, २५४, ३६७, ३७८, ४०१, ४२३, ६८१;

दिङ्नाग के टीकाकार और व्याख्याकार शङ्करस्वामी से पृथक् हैं। सम्भवतः ये उद्योतकर के पहले हो चुके थे। उद्योतकर के समय से न्यायभाष्य के अन्य व्याख्याकारों से शायद ये भी परिचित होंगे।

ज्ञानश्री दुर्वेकमिश्र (हेतुबिन्दुटीकालोक) [illegible] के साथ शङ्करस्वामी, न्यायभूषणकार, त्रिलोचन और वाचस्पति का उल्लेख करते हैं। शंकरस्वामी को परशुराम, कर्णकगोमी, वीतराग (अन्यापोह) [illegible], अर्चट (हेतुबिन्दुटीका) उदयनाचार्य (प्रशस्तपाद) आदि उद्धृत करते हैं। इनकी स्थिरसिद्धि ग्रन्थ का उल्लेख किया है। ये धर्मकीर्ति के बाद हुए इसका यह प्रमाण उपलब्ध होता है कि ज्ञानश्री के ईश्वरवाद में उद्धृत शंकर स्वामी के उद्धरण में प्रमाणवार्तिक कारिका की आलोचना की गई है। प्रज्ञाकर ने भी शंकर के मत का खण्डन किया है (पृ. २२७)

अर्चट की हेतुबिन्दुटीका, उदयन के न्यायपरिशिष्ट में भी उद्धृत है। इनकी स्थिरसिद्धि के विषय अनन्तलाल ठाकुर का लेख सर्व ओर न्याय दर्शन एण्ड आर्ट्स, ओरियण्टल कान्फ्रेन्स प्रोसीडिंग्स अहमदाबाद १९५३. पृ. ३८५ द्रष्टव्य।

कमलशील ने शंकरस्वामी के मत को २४ बार उद्धृत किया है।

शंकरस्वामी धर्मकीर्ति के पहले हैं या बाद में इस के लिये हेतुबिन्दुटीकालोक (पृ. ३३२) की परीक्षा करो।

"अत एवाह भुवनैकगुरुन् भगवतः कीर्तिपादानवजानानः शङ्करः परोऽपि कथमिति [illegible] जल्पः:" (पृ. ११४)
धर्मकीर्ति के इस उद्धरण से इनकी स्थिति धर्मकीर्ति के बाद है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

[illegible] (पृ. ३२८) में ये शंकराचार्य के नाम से उल्लिखित हैं।
किन्तु ये वेदान्ताचार्य शंकराचार्य से भिन्न हैं। बौद्धाचार्य धर्मकीर्ति और [illegible]
ने इनको उद्धृत किया है। विद्यानन्द और [illegible] के [illegible]
[illegible] इनके ग्रन्थ का नाम [illegible] बतलाते हैं
(पृ. १०८)। [illegible] और [illegible] भी इनके ग्रन्थ [illegible] का भी
उल्लेख करते प्रतीत होते हैं। [illegible] इनके मत का भी [illegible] भी
करते हैं (पृ. ४६५)। ([illegible], प्र. भा. ...
[illegible])। [illegible] (पृ. १७) में भी ये उद्धृत हैं। यह [illegible]
[illegible] के उद्धृत (पृ. २४३) शंकराचार्य से भी भिन्न ज्ञात पड़ते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शङ्करस्वामी (बौद्ध)

ये दिङ्नाग के शिष्य थे। दिङ्नाग के प्रमाणसमुच्चय आदि ग्रन्थों के ~~अध्ययन पर~~ समझाने में इन्होंने न्याय प्रवेश लिखा। इनका समय अनुमानतः ५५० ई० माना गया। न्याय-प्रवेश का हुएन-त्साङ्ग ने ६४७ ई० में चीनी अनुवाद किया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शंकराचार्य (अद्वैत वेदान्त)

धर्मोत्तरप्रदीप में दुर्वेक मिश्र ने (पृ. १५२) इनको उद्धृत किया है। इनका समय ८०० ई. के आसपास माना जाता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शंकरानन्द (बौद्ध)

धर्मोत्तर की परम्परा में अगला आचार्य शंकरानन्द ने धर्मकीर्ति के प्रमाणवार्तिक पर टीका आरम्भ किया, किन्तु उसे पूरा नहीं कर सके। इनका जन्म ९०० ई. में हुआ माना जाता है। इनकी शंकरानन्दपरीक्षा की ~~[illegible]~~ करी का टीकाकी लगभग १०२० ई. में हुआ। इसी प्रकार इनके सहपाठी [illegible] अशोकाचार्य और जितारि का जीवनकाल लगभग १०७५-८२ ई. में हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भागवतानन्द (नैयायिक)

ज्ञानश्रीमित्र के द्वारा इनका खण्डन हुआ। विशेषकर इस [illegible] [illegible] है। [illegible] के [illegible] में इनका [illegible] है। भागवतानन्द के [illegible] [illegible] में ~~[illegible] [illegible]~~ लोक का खण्डन किया है। इन धर्मकीर्ति की व्याख्या का [illegible] है कि ये आचार्य के [illegible] हैं, जो कि प्रत्यक्ष प्रमाणों के विषय में नयी व्याख्या के रूप में हैं और [illegible] इसलिए इनको नैयायिक भी कहा गया है। इन लोगों के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शबरस्वामी (मीमांसक)

तत्त्वसंग्रह (तत्त्व-सं.) पृ. ५१८, ५२०, ५३३, ५४३, ५५८, ७७८

शबरस्वामी ने शून्यवाद को और विज्ञानवाद को (१.१.५) निराकृत किया है। ये कात्यायनीय पद का स्पष्टतः उल्लेख (१.१.५) करते हैं। कौटिल्य के समय से उपवर्ष का आदेश ज्ञात होता है। नागार्जुन के समय तक यह प्रतिष्ठित हो गया था। तथापि आर्यदेव के समय तक इसे स्पष्ट भेद नहीं दिया गया था। ब्रह्मसूत्रवृत्ति में दोनों ग्रन्थ उपवर्ष के उपदेश हेतु आदेश के अपने उपवर्ष पूर्वाचार्य से उपदेश और प्रमाण का स्पष्ट भेद प्रस्तुत किया। इससे ज्ञात होता है कि शबर स्वामी नागार्जुन को बाद लिखी ग्रन्थ है। यह वात्स्यायन के कालाविर्भूत होते हैं। इनका समय २५०-३०० ईस्वी माना जा सकता है।

न्यायवार्त: (शबरस्वामी) १२६, ५१८, ७३५, ७४६

आत्मतत्त्व वि.: ७०५, ८३४

न्यायमं. (शाबरभा.) ७७३, ८०१, ८२६, ८३४, ८५३

मीमांसक: १३०, ५३६, ५३७, ७३७, ७७८, ७८१, ८०८, ८४४, ८३२, ८३८

मीमांसकपक्ष: १०४०

मीमांसकानां कर्मकाण्डवादिनः: ८६८

मीमांसावादी: ५३५, ७८१

मीमांसा: ५७३, ७७५, ७७६, ६५२, ८८२, १०४५, १०४६, ११३०

शबरभाष्य ५४३, ७८३, ७८५, ८६५, १०१५

शबरस्वामी ने अपने पूर्व मीमांसाचार्य की वृत्ति उपवर्ष की संक्षिप्त वृत्ति के सिद्धान्तों को ही विस्तार देकर की। प्रो. आर. जी. भाण्डारकर और पी. वी. काणे का कहना है कि शंकराचार्य कुमारिल के पश्चात् के बाद जाता। किन्तु "अर्थापत्ति विचार" शबरस्वामी की यह कुमारिल आदि

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करता है। फलतः इन्होंने सुश्रुतसंहिता की [illegible] भी नहीं की थी। यदि रसशास्त्री नागार्जुन के बाद होते तो वे अवश्य [illegible] करते। सुश्रुत ने इस प्रकरण में [illegible] का व प्रतिसंस्कर्ता [illegible] रसशास्त्र में नागार्जुन का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है। इस रूप में [illegible] स्वामी का [illegible] नागार्जुन से पहले हो गया था।

सुश्रुतसंहिता के भाष्य पर चार टीकाओं का उल्लेख उपलब्ध होता है :- १. जेज्जट, २. गयदास, ३ चक्रपाणि, और ४ डल्हण टीका। जेज्जट की [illegible] और [illegible] की व्याख्या आज उपलब्ध नहीं है। डल्हण के निबन्धसंग्रह नामक ग्रन्थ के कुछ अंश अवश्य उपलब्ध होते हैं। गयदास और चक्रपाणि [illegible] है। [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि ने [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि प्राचीन [illegible] और [illegible] का [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि ने [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि ग्रन्थ लिखे। [illegible] प्रायः [illegible] के प्रकरण में [illegible] के द्वारा उद्धृत किया गया है।

[illegible] का [illegible] ग्रन्थ [illegible] में [illegible] डल्हण [illegible] में [illegible] का ग्रन्थ है।

A.D. 200 ई. [illegible] सुश्रुतसंहिता, पृ. 22

सुश्रुत में [illegible] की प्रधानता और [illegible] की [illegible] होने के प्रमाण हैं। इसका प्रथम उपदेश के बाद और [illegible] के पढ़ते हैं। [illegible] और [illegible] को उद्धृत करके [illegible] [illegible] को उद्धृत नहीं करते। [illegible] [illegible]. [illegible] भारत के [illegible] के [illegible] में [illegible] और [illegible]. [illegible] और [illegible] का [illegible] करते हैं। [illegible] के साथ में [illegible] और [illegible] भी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

कहे जाते हैं। ये ज्ञानेश्वर के शिष्य प्रसिद्ध होते हैं। हस्तलेख के प्रमाण पर इनके गुरुओं का नाम चारुचरित्र था और उनके इनके पितृ-गुरु रहे थे —

श्रीमद्गामनपद्मद्रमरदनिधिहृदि ज्योतिर्विदां वरणोत्री
राजा मल्हारयाधीश विक्रमनृपः सन्तप्तजायमानात् ।
वैद्यराजं हरिचन्द्रवैद्यनीतेः जातस्य राज्ञः कृती
श्रुत्वा गणपतेः सवेष्ट राजदत्तोऽपि हि जयेऽपराजयः ॥

परम्परा से पता होता है कि इनका नाम कल्याणदेव राय भट्टेश्वर था। जैसे के नाम के कारण ये जीवन में दृष्टान्तों और कहां पर इन्होंने उज्जैन राज रत्न रत्न लिया। तत्कालीन के प्रमाण पर राजरत्नाकर ज्योतिषशास्त्र का नाम पर भाष्य लिखा था। यह पता चलता है कि यह राजरत्नाकर ने, जीवन की पांडुलिपि के पुत्र थे, जो भट्टोत्पल एवं मल्लिनाथ का नाम के व्याख्याता ज्योतिषी को उज्जैन का था। यह ग्रन्थ जाति ही की ये पुराणवाद जोधपुर भाण्डारकर पाण्डुलिपि से प्राप्त की राजरत्नाकर का १२ अध्याय का जोधपुर भाण्डारकर उपलब्ध की १२.२.११ पर ये संपूर्ण भाग को प्राप्त करते हैं। जो प्रकार पता नहीं होता कि इस पर इनका नाम था या नहीं। इनके ग्रन्थ में जोधपुर पर अनेक भाष्य और इनकी व्याख्या थी। पुराने शिलालेखों में इनका चर्चा प्राप्त होता है कि इनके इतिहास को छोड़ कर अन्यत्र से इतना था। इनका १०.८.१ में भाण्डारकर की अपनी प्रकाशित की प्रतियाँ देते हैं। इसके "प्रश्नोत्तर पुनीतताम्बूल" नामक टिप्पणी इनके जनश्रुति नाम से प्राप्त रहा था।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शाक्यप्रबुद्ध (बौद्ध)

राहुल जी ने इनका समय ६८५ ई० माना है। इनको वे शान्तरक्षित के गुरु से अभिहित करते हैं। डा० विद्याभूषण इनको शाक्यबोधि कहते हैं। इन्होंने प्रमाणवार्तिक के २-४ परिच्छेदों पर अपनी टीका लिखी थी। इसका तिब्बती अनुवाद उपलब्ध है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शान्तिभद्र (बौद्ध)

ये धर्मकीर्ति की स्वीय परम्परा में आते हैं। इन्होंने न्याय बिन्दु पर टीका लिखी थी। इसका उल्लेख धर्मोत्तराचार्य (पृ. ५, ३१, ३२, ६१, १३२, २४२) और न्यायबिन्दुटीकाटिप्पण (पृ. १५, ३६, ४३, ८७, ८०, २११, आदि) के लेखकों ने किया है। धर्मोत्तर ने और न्याय-विनिश्चय विवरण (पृ. ५२६) में वादिराज सूरि ने इनका उल्लेख किया है। इसलिये इन दोनों आचार्यों से पहले शान्तिभद्र को रखना पड़ेगा। धर्मोत्तर का समय ७०० - ७२० [illegible] है और [illegible] को ८०० ई. के पहले का विद्वान [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible] का [illegible] करते हैं। विनीतदेव और शान्तभद्र को दुर्वेक (प्र. वा. ३१) एक साथ उल्लेख करते हैं। इसलिये इनका भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में शान्तभद्र का नाम आता है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शान्तरक्षित (बौद्ध)

शान्तरक्षित नालन्दा महाविहार में उपाध्याय रहे हैं। तिब्बती में ये तीन नामों से प्रसिद्ध हैं— शान्तरक्षित, शान्तिरक्षित और आचार्य बोधिसत्व। ति-स्रोङ् के राजा के अनुरोध से भोट देश के ये और नालन्दा के बड़े प्रभावशाली थे, जो कि आगे तारानाथ के इतिहास में उल्लिखित मिले। डा. विद्याभूषण के मत से जहोर के राजकुल में पैदा हुए थे। जहोर उस समय [illegible] का एक भाग था, जो कि [illegible] बौद्ध धर्म के लिये प्रसिद्ध था। इनके अद्वितीय ज्ञान की ख्याति को सुनकर तिब्बत में शान्तरक्षित गये, इनकी स्थापना ओदन्तपुरी विहार की स्थापना की ७४९ ई. में हुई। वहीं पर ये रहे और ७६२ ई. में इनका स्वर्गवास हुआ। ७४३ ई. के लगभग ये तिब्बत गये थे। शान्तरक्षित की गुरुपरम्परा का क्रम इस प्रकार दिया जा सकता है —

पद्मवज्र ६७३ ई.
अनङ्गवज्र ७०५ ई.
इन्द्रभूति ६८७-७१७)

शान्तिदेव ६७१-७४३
शान्तरक्षित ७०५-७६२
कमलशील ७६३

पद्मसंभव ७१७-७६२

[illegible] ७२८
लीलावज्र ७४१
दारिकपाद ७५३
सहज योगिनी चिन्ता ७६५
डोम्बी हेरुक ७८०

शान्तरक्षित का तत्त्वसंग्रह का गायकवाड़ सीरीज का ग्रन्थ ३५- प्रकाशित हो चुका है। इसकी संख्या बड़ौदा १३१२४ है।

६३२-६७३ ई. के समय तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रवेश माना जाता है, किन्तु इत्सिंग के समय (६८० ई.) तक वहाँ पर इसका विशेष प्रचार नहीं था। ७०५ ई. यहाँ पहला मठ स्थापित किया गया। इसके साथ ही धर्म ग्रन्थों के अनुवाद का कार्य आरम्भ हुआ। ७५० ई. में पद्मसंभव वहाँ गये। ७४७ ई. में इनके पीछे यहाँ शान्तरक्षित गये। विक्रमशीला के दीपंकरश्रीज्ञान के वहाँ पर पहुँचने १०४० ई.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में बस गये । इस प्रकार बौद्ध धर्म का वहां पूर्ण विकास हुआ । यहीं प्रमुख स्थान पर नालन्दा, विक्रमशिला और ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध आचार्य ~~कहा~~ आये । 1200 ई. के आसपास बिहार प्रान्त पर मुसलमानों का आक्रमण हुए । इसके बाद अवशिष्ट बौद्ध भिक्षुओं ने तिब्बत में जा शरण ली ।

धर्मकीर्ति के ग्रन्थों पर इनकी टीकाएं प्रकाशित हो

बुस्तोन तिब्बती इतिहासकार 1290 ई. में हुआ । धर्मकीर्ति के

· बौद्ध धर्म का इतिहास तारानाथ तिब्बती इतिहासकार 1050 ई. में हुआ ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

शान्तिदेव (बौद्ध)

शान्तिदेव पाद का बोधिचर्यावतार ग्रन्थकार ने उद्धृत किया है।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के प्रभाकर के शिष्य थे। इन्होंने अपने ग्रन्थों में कई जगहों पर मत का खण्डन किया है। इनके वैशेषिक दर्शन सम्बन्धी विचार भी इधर उधर बिखरे मिलते हैं। इनमें से कुछ का उल्लेख उदयन ने भी है। विश्वरूपाचार्य ने (लक्षणावली, [illegible] पृ. 211, सन् 1936) शालिकनाथ की व्याख्या का उल्लेख किया है, जो कि प्रशस्तपादभाष्य पर थी। शालिकनाथ [illegible] के थे, ऐसा कहना उचित है। इनका वैशेषिक का मौलिक [illegible] से सम्बन्ध था. पर उदयन इनसे [illegible] से परिचित थे नहीं ([illegible], पृ. 17-18)।

परम्परा से यह ज्ञात होता है कि शालिकनाथ प्रभाकर के शिष्य थे। वे प्रभाकर के लिये गुरु शब्द का प्रयोग करते हैं। इन्होंने [illegible] को [illegible]। इनके [illegible] हैं और [illegible]। इन्होंने [illegible] पर [illegible], [illegible] पर [illegible] और [illegible] के [illegible] पर [illegible] लिखा। प्रकरणपञ्चिका में इन्होंने केवल [illegible] के [illegible] का ही नहीं, अपितु मीमांसा के पर [illegible] में उपलब्ध [illegible] पर प्रभाकर का [illegible] से [illegible] है, [illegible] से [illegible] किया। [illegible] में प्रभाकर दर्शन का [illegible] है जहाँ [illegible] के [illegible], [illegible] आदि उनके [illegible] है; किन्तु मीमांसकों के [illegible] में [illegible] हो शालिकनाथ [illegible] शालिकनाथ के [illegible] से भी प्रसिद्ध हैं। शालिकनाथ [illegible] प्रभाकर दर्शन का [illegible] सकते हैं। [illegible] और [illegible] इनके [illegible] हैं। [illegible] भी प्रभाकर दर्शन के उद्धरण [illegible] हैं, [illegible] पर [illegible] शालिकनाथ के [illegible] हैं। [illegible] प्रभाकर के [illegible] और शालिकनाथ के [illegible] हैं

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शब्दविवर्तवाद के खण्डन और उल्लेख दोनों का प्रत्यालोचना की है। इसी प्रकार [illegible] ने शब्दविवर्तवाद की प्रत्यालोचना की है और खण्डन का [illegible] किया है [illegible] शब्दविवर्तवाद का [illegible] स्वीकार [illegible] शब्दविवर्तवाद का स्व प्रभाकर और उनके [illegible] प्रभाकर एवं प्रभाकर हैं [illegible] शब्दविवर्तवाद के प्रभाकर गुरु के द्वारा [illegible] सिद्धान्त की प्रत्यालोचना का उत्तरदायित्व है और प्रभाकर सिद्धान्त की स्थापना का भी प्रभाकर गुरु [illegible] में [illegible] शब्दविवर्तवाद का खण्डन ७८० – ८२५ के बीच में होना चाहिये।

([illegible] है कि [illegible] प्रभाकर और [illegible] प्रभाकर [illegible] शब्दविवर्तवाद के खण्डन और [illegible] प्रभाकर के [illegible] है। [illegible] प्रभाकर [illegible] के प्रभाकर का [illegible] के बाद हुए।

नैवाचार्यैः गुरुर्मते न विदितं कौमारिलं दर्शितं
तत्त्वज्ञानमयो न शब्दविधयोः [illegible] ।
सूक्तं नापि [illegible] महाव्रती [illegible]
सूक्ता [illegible] ॥
([illegible])

७८० – ८२५ [illegible] पृ. ३३ पर [illegible] शब्दविवर्तवाद [illegible] प्रभाकर का भी [illegible] शब्दविवर्तवाद प्रभाकर के [illegible] है [illegible] पर इसी [illegible] में [illegible]
(पृ. [illegible] पृ. ५४)

[illegible] उल्लेख है। [illegible] की उत्पत्ति की शब्दविवर्तवाद के खण्डन [illegible] और [illegible] ([illegible], पृ ५५)।

द्वैतं न सहते भीती चाद्वैते लक्ष्यदर्शनः।
अज्ञानि विकल्पनाय जागर्त्येव जगन्त्रयी॥
शब्दविवर्तवादन्तु न जातो न जनिष्यते।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रमाणसमुच्चय [illegible] [illegible] हुआ ॥

[illegible] में [illegible] दिग्नाग के [illegible] बताये गये हैं, [illegible] (पृ. ७) में [illegible] [illegible] गये हैं।

कमलशील ने तत्त्वसंग्रहपंजिका में आचार्य दिग्नाग को उद्धृत किया है। [illegible] [illegible] है और प्रमाणसमुच्चय का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (तत्त्वसंग्रहपंजिका, हिन्दी, पृ. ३८)।

[illegible] में आचार्य दिग्नाग का [illegible] ७५०–८५० ई. [illegible] आचार्य दिग्नाग प्रमाणसमुच्चय के [illegible] [illegible] हैं।

[illegible] [illegible] तथा [illegible] [illegible]।

धर्मकीर्ति के प्रमाण पर [illegible] (पृ. ६४) में आचार्य दिग्नाग का [illegible] है। [illegible] [illegible] कि आचार्य दिग्नाग ने प्रमाणसमुच्चय [illegible] [illegible] था। [illegible] (पृ. २११) में [illegible] ने [illegible] [illegible] आचार्य दिग्नाग ने प्रमाणसमुच्चय पर [illegible] था। [illegible] (पृ. १००–१०९) में भी [illegible] प्रमाणसमुच्चय के [illegible] उद्धृत हैं। उसके [illegible] [illegible] उद्धृत [illegible] [illegible] (पृ. १२३, १२७) [illegible] के [illegible] में इसको उद्धृत [illegible] है।

[illegible] न [illegible] न [illegible]।

प्रमाणसमुच्चय [illegible] [illegible] हुआ ॥

आचार्य दिग्नाग के [illegible] में [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिवाद्वैत (वैशेषिक)

शिवाद्वैत सम्प्रदाय की [illegible] ग्रन्थ के [illegible] है। इसकी स्थिति श्रीकण्ठ के ब्रह्मसूत्र भाष्य पर पूर्णतया है। इन्होंने [illegible] के ग्रन्थ की भी रचना की। इसी के आधार पर अप्पय दीक्षित ने अपनी शिवार्कमणि दीपिका लिखी है। [illegible] पर [illegible] के उपरान्त से भी [illegible] होंगे। कुछ लोग वीरशैव से इसको अभिन्न मानते हैं; किन्तु यह ठीक नहीं है। वीरशैव लिङ्ग धारण करते हैं; शिवाद्वैत वाले [illegible] प्रायः [illegible] वैदिक परम्परा है।

शिवाद्वैत [illegible], [illegible], और [illegible] प्रकार का [illegible] करते हैं। [illegible] में [illegible] का भी [illegible] किया है। वैशेषिक दर्शन में [illegible] शिवाद्वैत [illegible] का [illegible] पदार्थ के रूप में निरूपण किया है। इसलिये इनके ग्रन्थ का नाम [illegible] प्रसिद्ध हुआ।

श्रीकण्ठ [illegible] का समय ११५०-१२०० माना जाता है। [illegible] ने [illegible] का उल्लेख किया है। [illegible] ने [illegible] को भी [illegible] किया है। अतः शिवाद्वैत [illegible] श्रीकण्ठ के [illegible] हैं, [illegible] के [illegible] थे, और [illegible] उनके [illegible] थे, किन्तु [illegible] शिवाद्वैत के ग्रन्थ में [illegible] नहीं मिलता। [illegible] और उपरान्त ने भी शिवाद्वैत का [illegible] किया है, इसलिये [illegible] से भी प्राचीन है। इन [illegible] के आधार पर शिवाद्वैत का [illegible] [illegible] के आसपास [illegible] किया जा सकता है।

लक्षणसंग्रह का [illegible] ग्रन्थ उपरान्त का है, शिवाद्वैत का नहीं। शिवाद्वैत का [illegible] ग्रन्थ [illegible] ग्रन्थ था। इसके उद्धरणों को [illegible] ने [illegible] किया है [illegible] के [illegible]-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मत और तत्त्वप्रकाशिका [illegible] में भी वे उद्धृत हैं । [illegible] को इनके हेत्वाभास ग्रन्थ का पता चलता है। कहीं से इनके उपाधिप्रकरण और सत्प्रतिपक्षप्रकरण का भी पता चलता है । इससे पता चलता है कि इन्होंने हेत्वाभासविषयक ग्रन्थ का प्रणयन भी किया था । वर्धमान के द्वारा ये उद्धृत हैं। न्यायवार्तिक ने सर्वत्र इस सम्प्रदाय को माना और उपाधि में [illegible] है। इसका नाम का पता भी [illegible] के [illegible] में [illegible] है और [illegible] में भी न्यायवार्तिक [illegible] का [illegible] है और [illegible] में [illegible] चलता है। न्यायवार्तिक का समय १२ शताब्दी के प्रथम में [illegible] से इसका पता चलता है। [illegible] के [illegible] और [illegible] के इनके [illegible] है। इनका समय १२१०-४० ई. है। [illegible] न्यायवार्तिक का समय ११५२ के आगे नहीं जाता। यह [illegible] का उल्लेख के [illegible] और ११५० ई. के [illegible] के [illegible]. [illegible] और [illegible] के प्रथम एक [illegible] रहा है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(भदन्त) शुभगुप्त (बौद्ध)

तत्त्वसंग्रह (गा. ग्रं.) पृ. ५७३, ५७८, ५८४, ५७२, ५७६, ५७८, ७०१, ७१०

हरिभद्र सूरि (द्वितीय) ने अपने ग्रन्थ अनेकान्तजय-पताका में इनके मत का प्रत्याख्यान किया है। डा. सतीशचन्द्र इनको शुभंकर गुप्त से अभिन्न मानते हैं, जो कि लगभग १०८० ई. के आसपास थे। तत्त्वसंग्रह के आधार पर यह पता लगता है कि केवल शुभगुप्त और शुभंकर गुप्त भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं। शुभंकर गुप्त ने न्यायशास्त्र के अनेक ग्रन्थों की रचना की और हरिभद्र द्वितीय ने इन शुभगुप्त की आलोचना की है और इनको धर्मकीर्ति का अनुयायी बताया है। इससे इनके भी ~~केवल~~ न्याय ग्रन्थ की स्थिति सिद्ध होती है। इनका समय धर्मकीर्ति के बाद तत्त्वसंग्रह के पहले ६५०-७०० ई. स्वीकार करना उचित होगा।

भदन्त शब्द का प्रयोग तत्त्वसंग्रह में प्रायः वैभाषिक बौद्धों के लिये किया गया है। क्या धर्मकीर्ति के अनुयायी भदन्त शुभगुप्त वैभाषिक थे?

अष्टशतीकार के मत में ये वैभाषिक थे। संभवतः वैभाषिकों के लिये भी भदन्त शब्द का प्रयोग होता है। जैन न्याय ग्रन्थों में बौद्धमत का स्वरूप संभवतः न मिलता होगा। ये कारिकायें उद्धृत करते जाते हैं। इनका कथन है धर्मकीर्ति के अनुयायी थे। अनेकान्तजयपताका (भा. १, पृ ३३७) में भी ये उद्धृत हैं। प्रस्तुत कारिकाओं पर इनकी टीका का भी उल्लेख किया गया है।

तत्त्वसंग्रहपंजिका के (पृ. ७१०-७११) के अनुसार ये दिङ्नाग से परवर्ती हैं। इनके अनेक श्लोक यहाँ उद्धृत हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आवश्यक (वैशेषिक)

आवश्यक एक वैशेषिक ग्रन्थकार है। क्योंकि जिनेन्द्र बुद्धि ने [illegible] में आवश्यक के प्रत्यक्ष विवरण में वैशेषिक सिद्धान्त का उल्लेख किया है। इनके ग्रन्थ या इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। पर इन्होंने [illegible] कभी का [illegible] मूल से [illegible] का उल्लेख किया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

श्रीधर (वैशेषिक)

ये प्रशस्तपादभाष्य के टीकाकार हैं। इनकी टीका का नाम न्यायकन्दली है। ये बंगाल निवासी थे। ये बलदेव तथा अब्बोका देवी के गर्भ से उत्पन्न थे। इन्होंने 913 शकाब्द (991 ई.) में न्यायकन्दली की रचना की। ये बंगाल के प्रमुख वैशेषिक लेखक माने जाते हैं।

न्यायकन्दली की नरचन्द्रसूरि कृत टीका के साथ डा. जितेन्द्र जेटली सम्पादन कर रहे हैं।

जैन विद्वान् राजशेखर ने सन् 1340 ई. में इस पर एक टीका लिखी थी। इसके विषय में यह कहा है कि प्रशस्तपादभाष्य की दो टीकाएँ न्यायकन्दली, इसकी न्यायकन्दली तथा उदयन की किरणावली हैं। किरणावली में कहीं भी श्रीधर या उनके ग्रन्थ का उल्लेख नहीं है, किन्तु ग्रन्थ से यह स्पष्ट भी प्रतीत होता है कि उदयन पहले [illegible] श्रीधर को उद्धृत करके खण्डन करता [illegible] किरणावली के प्रकाश व्याख्याकार वर्धमान (1225 ई. के आसपास) के कथन से यह स्पष्ट है। वर्धमान भी इसी मत के हैं। कन्दली के सम्पादक पं. [illegible] का मत था कि किरणावली [illegible] उदयन एक बंगाली विद्वान् [illegible] ने भी इतिहासकार के [illegible] किए हैं (इण्डियन [illegible], 1929, पृ. 32)। भारतीय दर्शन, भा. 3, पृ. 111-12)

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

श्रीवत्साचार्य: (वैशेषिक)

श्रीवत्साचार्य की टीका न्यायलीलावती प्रशस्तपाद भाष्य पर थी। यह श्रीवल्लभाचार्य की न्यायलीलावती के पूर्व की थी। श्रीवत्साचार्य उदयन के विद्यागुरु ~~[illegible]~~ हैं। इनका उल्लेख तात्पर्यपरिशुद्धि में स्वयं उदयन ने किया है। वल्लभाचार्य की न्यायलीलावती प्रशस्तपादभाष्य की टीका नहीं है।

परिशुद्धि के [illegible] ग्रन्थ में स्वयं उदयन की उक्ति से यह प्रतीत होता है कि श्रीवत्स उदयन के विद्यागुरु थे। परिशुद्धि के कई स्थलों पर श्रीवत्स उद्धृत हैं। इससे यह भी पता चलता है कि श्रीवत्स की स्थिति वाचस्पति के बाद है। इन उद्धरणों से ऐसा प्रतीत होता है कि वाचस्पति के ऊपर किये गये श्रीवत्स के आक्षेपों का उत्तर परिहार करते हैं। यह प्रतीत नहीं होता है कि श्रीवत्स के इन आक्षेपों का उत्तर उनके किसी ग्रन्थ से उद्धृत करते हैं पर उनके मौखिक उपदेशों के आधार पर ऐसा लिखा गया है। अन्यत्र कहीं भी इनका उल्लेख न रहने से ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीवत्स ने अपना कोई ग्रन्थ नहीं लिखा था (संभवतः [illegible]) लिखा भी हो।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

(भदन्त)संहतभद्र (बौद्ध) संघभद्र ?

बड़ौदा संस्करण में संघभद्र के नाम से विवरण दिया गया है। इनके दो ग्रन्थ प्रकरण समय और न्याया-नुसारसूत्र परम्परा के ग्रन्थ से ज्ञात होते हैं। पहले ग्रन्थ में वैभाषा का प्रतिपादन तथा दूसरे में वसुबन्धु के अभि-धर्मकोश का खण्डन किया गया है। यह असंग और वसुबन्धु के समय में हो चुके थे। इसलिये इनका समय २८०-३५० ई. निर्धारित किया गया है। ४८७ ई. के संघभद्र से यह भिन्न है। इनके कुछ ग्रन्थों के चीनी अनुवाद प्राप्त होते हैं।

तत्त्वसंग्रह (गा. सं.) पृ. ५१७, ५२० में उद्धृत हैं।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समन्तभद्र (जैन)

समन्तभद्र धर्मकीर्ति के समसामयिक होते हुए भी उनके प्रभावित थे। इन्होंने अपने ग्रन्थ आप्तमीमांसा का खण्डन प्रमाण वार्तिक के अपने अध्याय के आधार पर किया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सामद - यक्षद (मीमांसक)

तत्त्वसंग्रह (भा. सं.) पृ. १०२०

यज्ञांगद मीमांसक के रूप में इनका एक वाक्य भी उद्धृत किया गया है। ये लोग संस्कृत साहित्य में सर्वथा कहीं उल्लिखित नहीं हैं। किसी प्रमाण के अभाव में केवल अनुमान करना ही संभव है कि ये शान्तरक्षित के समय से पहले ७०० ई. तक में उत्पन्न हो चुके थे। अथवा कुमारिल के बाद उत्पन्न हुए हों। कुमारिल ने इनका उल्लेख नहीं किया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सिद्धसेन (जैन)

इनका न्यायावतार प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुचरित मिश्र (मीमांसक)

ये श्लोकवार्तिक के काशिका टीका के रचनाकार हैं। इनके ग्रन्थ [illegible] कार्तिकेय के द्वारा उद्धृत हैं। इस प्रकार ये उनसे अवश्य ही प्राचीन हैं। [illegible] ने भी इनको उद्धृत किया है।

१०००–११०० ई. [illegible], पृ. २२

[illegible] के टीकाकार [illegible] (पृ. ५३) के अनुसार ये पार्थसारथि मिश्र से प्राचीन थे। ये इनके व्याख्याकार हैं श्लोकवार्तिक के (इनकी व्याख्या का नाम काशिका एवं काशिका की [illegible] ने उद्धृत किया है, जिनका समय १२ शताब्दी एवं [illegible] के [illegible] ने भी इनको उद्धृत किया एवं इनका समय भी ११वीं शताब्दी ही है। इसलिये सुचरित मिश्र का समय १०००–११०० के बीच है [illegible] काशिका [illegible] [illegible] और [illegible] से [illegible] होते हैं।

([illegible] और [illegible] के आधार पर [illegible] होना चाहिये। इसी आधार पर इनका [illegible] भी [illegible] होना चाहिये)।

[illegible] ने [illegible] (पृ. ८३७) काशिकाकार को [illegible] किया है। काशिकाकार [illegible] से ये भिन्न हैं। [illegible] में उक्त उद्धरण उपलब्ध नहीं है। काशिकाकार सुचरितमिश्र को और [illegible] को भी उद्धृत करना एवं [illegible] काशिका और [illegible] का [illegible] है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुमति (जैन-दिगम्बर)

तत्त्वसंग्रह (अ. सं.) पृ. ४६३, ५७७, ६७५; (व. सं.) ३७७, ३८२, ३८३, ४८७, ४७६, ५५४।

सुमति नाम का कोई जैन नैयायिक प्रसिद्ध नहीं है। इनका समय भी ७०० ई. के पूर्व ही ~~[illegible]~~ मानना पड़ेगा। इतना मालूम होता है कि इन्होंने कुमारिल की आलो-चना की है, इसलिये ये कुमारिल से पहले नहीं हुए होंगे। इसलिये इनका समय ६७०-७२० ई. निश्चित किया जा सकता है।

इन महाशय के "सन्मति" का परिचय अज्ञात है।

तत्त्वसंग्रह में (पृ. ४६४) सुमति के मुख से ~~[illegible]~~ कुमारिल का मत उपस्थापित किया गया है। इसलिये यह आचार्य कुमारिल के बाद के हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्थिरमति (बौद्ध)

मैत्रेय-असंग के ग्रन्थों के व्याख्याता के रूप में ये प्रसिद्ध हैं। वाचस्पति ने इनको भी अपने ग्रन्थों में उद्धृत किया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हरिभद्र सूरि (जैन)

जैन सम्प्रदाय में दो हरिभद्र सूरि हुए हैं :- एक ४७८ ई. में और दूसरे ११२० ई. में। प्रथम हरिभद्र के किसी ग्रन्थ का पता नहीं चलता, किन्तु वे एक प्रसिद्ध नैयायिक रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने दिङ्नाग के न्यायप्रवेश की आलोचना की थी। तत्त्वसंग्रह में इनका कोई उद्धरण नहीं है। शान्तरक्षित कमलशील का ७०५ ७६० होने के कारण अर्चट एवं अभयदेव सूरि छूट गये हैं।

षड्दर्शनसमुच्चयकार हरिभद्र सूरि का समय तत्त्वोपप्लवसिंह की भूमिका (पृ. ९) में सुखलालजी संघवी ने ७००-७७० ई. दिया है। षड्दर्शन-समुच्चय भी इसी हरिभद्र की रचना है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

—तौल—

१० मिलिग्राम = १सेन्टीग्राम
१० सेन्टीग्राम =१ डेसीग्राम
१० डेसीग्राम =१ग्राम
१० ग्राम =१ डेका ग्राम
१० डेका ग्राम= १ हेक्टोग्राम
१० हेक्टोग्राम =१ किलोग्राम
२.२पौन्ड
१०० किलोग्राम =१क्विन्टल

—माप—

१० मिलीमीटर =१ सेन्टीमीटर
=.३९ इंच
१० सेन्टीमीटर =१ डेसी मीटर
=३.९४ इंच
१०डेसीमीटर =१ मीटर
=३९.३७ इंच
१० मीटर =१ डेकामीटर
१०डेकामीटर=१ हेक्टमीटर
१ हेक्टोमीटर=१ किलोमीटर
=करीब ५ फर्लांग

१९६८ —: तिथि-पत्र :— १९६७

दिन	जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर
रवि	... 7 14 21 28	1 8 15 22 29	30 2 9 16 23	1 8 15 22 29
सोम	1 8 15 22 29	2 9 16 23 30	31 3 10 17 24	2 9 16 23 30
मंगल	2 9 16 23 30	3 10 17 24	... 4 11 18 25	3 10 17 24 31
बुध	3 10 17 24 31	4 11 18 25 ...	... 5 12 19 26	4 11 18 25 ...
बृह०	4 11 18 25 ...	5 12 19 26 ...	... 6 13 20 27	5 12 19 26 ...
शुक्र	5 12 19 26 ...	6 13 20 27 ...	... 7 14 21 28	6 13 20 27 ...
शनि	6 13 20 27 ...	7 14 21 28 ...	1 8 15 22 29	7 14 21 28 ...

दिन	फरवरी	मई	अगस्त	नवम्बर
रवि	... 4 11 18 25	... 6 13 20 27	.... 6 13 20 27	... 5 12 19 26
सोम	... 5 12 19 26	... 7 14 21 28	1 7 14 21 28	... 6 13 20 27
मंगल	... 6 13 20 27	1 8 15 22 29	2 8 15 22 29	7 14 21 28
बुध	— 7 14 21 28	2 9 16 23 30	3 9 16 23 30	1 8 15 22 29
बृह०	1 8 15 22 ...	3 10 17 24 31	4 10 17 24 31	2 9 16 23 30
शुक्र	2 9 16 23 .	4 11 18 25	5 11 18 25	3 10 17 24 ..
शनि	3 10 17 24 ...	5 12 19 26 ...	12 19 26 .	4 11 18 25 ..

दिन	मार्च	जून	सितम्बर	दिसम्बर
रवि	... 4 11 18 25	... 3 10 17 24	3 10 17 24	3 3 10 17 24
सोम	... 5 12 19 26	... 4 11 18 25	... 4 11 18 25	.. 4 11 18 25
मंगल	... 6 13 20 27	... 5 12 19 26	.. 5 12 19 26	... 5 12 19 26
बुध	... 7 14 21 28	... 6 13 20 27	.. 6 13 20 27	.. 6 13 20 27
बृह०	1 8 15 22 29	7 14 21 28	7 14 21 28	... 7 14 21 28
शुक्र	2 9 16 23 30	1 8 15 22 29	1 8 15 22 29	1 8 15 22 29
शनि	3 10 17 24 31	2 9 16 23 30	2 9 16 23 30	2 9 16 23 30

निर्माता —मास्टर बुक डिपो कर्णघंटा, वाराणसी १ ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS